# Impact of Work Place Environment and Job Satisfaction on the Professional Growth of Teacher Educators

# शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन पर कार्यस्थल के वातावरण एवं कार्यसन्तुष्टि का प्रभाव

**A Thesis**

**Submitted for the Award of the Ph.D. Degree of**

**PACIFIC ACADEMIC OF HIGHER EDUCATION AND RESEARCH UNIVERSITY**

**By**


**SOLANKI PARESHABEN H.**

सोलंकी परेशाबेन एच.

**Under the Supervision of**

**Dr. Anjali Dashora**

**Assistant Prof.**

**Pacific College of Teacher's Education, Udaipur**

**And**

**Dr. Ranchhodbhai K. Prajapati**

**Principal**

**Swami Narayan Gurukul B.Ed. College,**

**Palanpur (Gujarat)**

**FACULTY OF EDUCATION**

**Department of Education**

**PACIFIC ACADEMY OF HIGHER EDUCATION AND RESEARCH UNIVERSITY, UDAIPUR**


**2024**

C3

**(Certificate to be given by the Supervisor)**

# CERTIFICATE

Its gives me immense pleasure in certifying that the thesis entitled (Title of thesis) ***"Impact of Work Place Environment and Job Satisfaction on the Professional Growth of Teacher Educators"*** and submitted by (Name of candidate) **SOLANKI PARESHABEN H.** is based on the work research carried out under my guidance. She has completed the following requirements as per Ph.D. regulations of the University;

i. Course work as per university rules.

ii. Residential requirements of the University.

iii. Regularly presented Half Yearly Progress Report as prescribed by the University.

iv. Published/ accepted minimum of two research paper in a refereed research journal.

I recommend the submission of thesis as prescribed/ notified by the University.

**Date:**

**Name and Designation of Supervisor/s**
**(Dr. Anjali Dashora)**
Assistant Prof.
Pacific College of Teacher's Education,
Udaipur

C3

**(Certificate to be given by the Co-Supervisor)**

# CERTIFICATE

Its gives me immense pleasure in certifying that the thesis entitled (Title of thesis) ***"Impact of Work Place Environment and Job Satisfaction on the Professional Growth of Teacher Educators"*** and submitted by (Name of candidate) **SOLANKI PARESHABEN H.** is based on the work research carried out under my guidance. She has completed the following requirements as per Ph.D. regulations of the University;

v. Course work as per university rules.

vi. Residential requirements of the University.

vii. Regularly presented Half Yearly Progress Report as prescribed by the University.

viii. Published/ accepted minimum of two research paper in a refereed research journal.

I recommend the submission of thesis as prescribed/ notified by the University.

**Date:**

**Name and Designation of Supervisor/s**
**(Dr. Ranchhodbhai K. Prajapati)**
Principal
Swami Narayan Gurukul B.Ed. College,
Palanpur (Gujarat)

# CERTIFICATE BY SCHOLAR

This is to certify that the thesis titled ***"Impact of Work Place Environment and Job Satisfaction on the Professional Growth of Teacher Educators"*** and submitted by **SOLANKI PARESHABEN H.** under the supervision of **Dr. Anjali Dashora** (Professor) and **Dr. Ranchhodbhai K. Prajapati** (Principal) Faculty of Education for award of Ph.D. Degree of the University carried out during the period of 2021 to 2024 embodies my original work and has not formed the basis for the award of any degree, diploma associateship, fellowship, titles in this or any other University or other similar Institution of higher learning.

Date: **Signature of Scholar**

**(SOLANKI PARESHABEN H.)**

# DECLARATION

I **SOLANKI PARESHABEN H.** D/o **Mr. Hargovindbhai** resident of **26-Mayanagar Sositey, Gayatri Mandir Road, Patan (Gujarat)** hereby declare that the research work incorporated in the present thesis entitled ***"Impact of Work Place Environment and Job Satisfaction on the Professional Growth of Teacher Educators"*** is my own work and is original. This work (in part or in full) has not been submitted to any University for the award of a Degree or a Diploma. I have properly acknowledged the material collected from secondary sources wherever required. I solely own the responsibility for the originality of the entire content.

**Signature of the Candidate**

**Date :** **Signature of the Supervisor/s**

# COPYRIGHT

I **SOLANKI PARESHABEN H.** hereby declare that the Pacific Academy of Higher Education and Research University Udaipur, Rajasthan shall have the rights to preserve, use and disseminate this thesis entitled ***"Impact of Work Place Environment and Job Satisfaction on the Professional Growth of Teacher Educators"*** in print or electronic format for academic/ research purpose.

**Date :** **Signature of the Candidate**

**Place :**

# आभार

प्रस्तुत शोध को सम्पन्न करवाने में जिनका सहयोग मिला उनका आभार व्यक्त करना मेरा आवश्यक कर्तव्य है। मैं अपनी मार्गदर्शिका **डॉ. अंजलि दशोरा** (सहायक आचार्य) एवं सहपर्यवेक्षक **डॉ. रणछोड़भाई के. प्रजापति** (प्राचार्य) फेकल्टी ऑफ एज्युकेशन की हृदय से आभारी हूँ, जिनके कुशल निर्देशन एवं मार्गदर्शन में प्रस्तुत शोध कार्य को सम्पन्न किया। आपकी सतत् प्रोत्साहित करने की प्रवृत्ति मेरे लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

मैं पेसिफिक युनिवर्सिटी, उदयपुर के उच्च शिक्षा के अधिष्ठाता **डॉ. हेमन्त कोठारी** की हृदय से आभारी हूँ, जिनके द्वारा आयोजित शोध कार्यशालाओं द्वारा मार्गदर्शन से मेरा शोध कार्य निरन्तर प्रगति कर रहा।

मैं उन सभी लेखकों, सम्पादकों एवं अनुसन्धानकर्ताओं का आभार व्यक्त करती हूँ जिनके लेखन कार्यों, सम्पादित सामग्री एवं शोध अध्ययनों का उपयोग प्रस्तुत शोध को सम्पन्न करने में किया।

मैं उन सभी पुस्तकालयाध्यक्ष, व्याख्याता एवं कर्मचारीगणों का आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने समय–समय पर प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित शोध साहित्य एवं पुस्तकें उपलब्ध करवायी।

मैं उन सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्य, शिक्षकगण एवं विद्यार्थियों की आभारी हूँ, जिनके सहयोग के बिना प्रस्तुत शोध के लिए आवश्यक आँकड़ों को एकत्रित करना असम्भव था।

आभार की इस कड़ी में मैं अपने माता–पिता एवं परिवार के सभी सदस्यों की अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने समय–समय पर मुझे कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

इसी के साथ मैं अपने जीवनसाथी तथा पुत्र एवं पुत्री की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने कहीं प्रेरक तो कहीं सहयोगी भूमिका के रूप में पूर्ण सहयोग प्रदान किया जिनके लिये जितना कहा जाए वो सीमित ही होगा, मैं इनके सहयोग से अभिभूत हूँ।

अन्त में मैं शोध प्रबन्धन के टंकण, मुद्रण एवं जिल्दसाज़ी सम्बन्धित कार्य में की गई शुद्धता, स्वच्छता, तत्परता, शीघ्रता, कुशलता एवं उसे आकर्षक स्वरूप प्रदान कर सुसज्जित करने के लिए तेजस थीसिस मेकर एण्ड एडवाइज़र, उदयपुर के निदेशक **डॉ. प्रदीप धींग** एवं उनके सहयोगी **संजय खान** के प्रति अत्यन्त आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने सीमित समय में इस शोध कार्य को कम्प्यूटर द्वारा एक आकर्षक व व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया।

**शोधार्थी**

**दिनांक :** **सोलंकी परेशाबेन एच.**

# अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | **Certificate by Supervisor** | |
| | **Certificate by Co-Supervisor** | |
| | **Certificate by Scholar** | |
| | **Declaration** | |
| | **Copyright** | |
| | **आभार** | |
| **1.** | **प्रथम अध्याय – शोध आकल्प** | **1-12** |
| 1.1 | प्रस्तावना | 1-3 |
| 1.2 | समस्या कथन | 3 |
| 1.3 | शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या | 4-5 |
| 1.4 | समस्या का औचित्य | 5-6 |
| 1.5 | शोध अध्ययन के उद्देश्य | 6-7 |
| 1.6 | शोध परिकल्पना | 7 |
| 1.7 | शोध अध्ययन का परिसीमन | 8 |
| 1.8 | विधि | 8 |
| 1.9 | उपकरण | 9 |
| 1.10 | न्यादर्श | 10 |
| 1.11 | दत्त विश्लेषण की प्रविधियाँ | 11 |
| 1.12 | अध्यायों का वर्गीकरण | 11-12 |
| 1.13 | उपसंहार | 12 |
| **2.** | **द्वितीय अध्याय – सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन** | **13-46** |
| 2.1 | प्रस्तावना | 13-14 |
| 2.2 | सर्वेक्षण की आवश्यकता | 14 |
| 2.3 | अध्ययन के लाभ | 15-16 |
| 2.4 | साहित्य प्राप्त करने के स्त्रोत | 17 |

| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 2.5 | संबंधित साहित्य का अध्ययन | 17-46 |
| 2.5.1 | व्यावसायिक उन्नयन से संबंधित शोध साहित्य | 17-27 |
| 2.5.2 | कार्यस्थल वातावरण से संबंधित शोध साहित्य | 27-41 |
| 2.5.3 | कार्यसन्तुष्टि से संबंधित शोध साहित्य | 41-46 |
| 2.6 | उपसंहार | 46 |
| **3.** | **तृतीय अध्याय – शोध का विधिशास्त्र** | **47-80** |
| 3.1 | प्रस्तावना | 47 |
| 3.2 | अनुसंधान में प्रयुक्त विधि | 47-50 |
| 3.3 | उपकरण | 50-77 |
| 3.3.1 | शोधार्थी द्वारा निर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी का विवरण | 52-62 |
| 3.3.2 | कार्यस्थल वातावरण प्रश्नावली निर्माण के सोपान | 63-74 |
| 3.3.3 | कार्यसन्तुष्टि मापनी का विवरण | 74-77 |
| 3.4 | सांख्यिकी प्रविधियाँ | 78-80 |
| 3.5 | उपसंहार | 80 |
| **4.** | **चतुर्थ अध्याय – दत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या** | **81-124** |
| 4.1 | प्रस्तुतीकरण | 81 |
| 4.2 | विश्लेषण एवं व्याख्या | 81-124 |
| 4.3 | उपसंहार | 124 |
| **5.** | **पंचम अध्याय – सारांश, निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव** | **125-131** |
| 5.1 | शोध सारांश | 125-126 |
| 5.2 | शोध के निष्कर्ष | 127-129 |
| 5.3 | शैक्षिक निहितार्थ | 130 |
| 5.4 | नवीन अनुसंधान हेतु सुझाव | 130 |
| 5.5 | उपसंहार | 130-131 |
| | **सन्दर्भ ग्रन्थ सूची** | **132-136** |

| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | **परिशिष्ट** | **137-156** |
| | A. व्यावसायिक उन्नयन मापनी | **137-142** |
| | B. कार्यस्थल वातावरण मापनी | **143-151** |
| | C. कार्यसन्तुष्टि मापनी | **152-155** |
| | **विशेषज्ञों की सूची** | **156** |
| | **प्रकाशित शोध आलेख** | |
| | **सेमिनार प्रमाण–पत्र** | |

# सारणी सूची


| सारणी संख्या | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 4.2.1 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का औसतवार विश्लेषण | 82 |
| 4.2.2 | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयनों का औसतवार विश्लेषण | 85 |
| 4.2.3 | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयनों का औसतवार विश्लेषण | 88 |
| 4.2.4 | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण | 91 |
| 4.3.5 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण | 96 |
| 4.3.6. | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण | 99 |
| 4.3.7 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण | 102 |
| 4.3.8 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का तुलनात्मक विश्लेषण | 105 |
| 4.3.9 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण | 109 |

| सारणी संख्या | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 4.3.10 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण | 112 |
| 4.3.11 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण | 116 |
| 4.3.12 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण | 119 |

# आरेख सूची


| आरेख संख्या | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 4.2.1 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का औसतवार विश्लेषण | 82 |
| 4.2.2 | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयनों का औसतवार विश्लेषण | 85 |
| 4.2.3 | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयनों का औसतवार विश्लेषण | 88 |
| 4.2.4 | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण | 92 |
| 4.3.5 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण | 96 |
| 4.3.6. | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण | 99 |
| 4.3.7 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण | 102 |
| 4.3.8 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का तुलनात्मक विश्लेषण | 106 |
| 4.3.9 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण | 109 |

| आरेख संख्या | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 4.3.10 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण | 112 |
| 4.3.11 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण | 116 |
| 4.3.12 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण | 120 |

# प्रथम अध्याय

## शोध आकल्प

# प्रथम अध्याय

# शोध आकल्प

## अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1.1 | प्रस्तावना | 1-3 |
| 1.2 | समस्या कथन | 3 |
| 1.3 | शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या | 4-5 |
| 1.4 | समस्या का औचित्य | 5-6 |
| 1.5 | शोध अध्ययन के उद्देश्य | 6-7 |
| 1.6 | शोध परिकल्पना | 7 |
| 1.7 | शोध अध्ययन का परिसीमन | 8 |
| 1.8 | विधि | 8 |
| 1.9 | उपकरण | 9 |
| 1.10 | न्यादर्श | 10 |
| 1.11 | दत्त विश्लेषण की प्रविधियाँ | 11 |
| 1.12 | अध्यायों का वर्गीकरण | 11-12 |
| 1.13 | उपसंहार | 12 |

# प्रथम अध्याय

# शोध आकल्प

## 1.1 प्रस्तावना :–

स्वतन्त्र भारत में शिक्षा के समग्र रूप पर विचार कोठारी आयोग ने किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को कुल बारह खण्डों में बाँटा गया जिनमें कुल 157 बिन्दुओं के अर्न्तगत नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को नीतिबद्ध किया गया जिसमें मुख्य खण्ड इस प्रकार से हैः–

प्रस्तावना, शिक्षा का सार तथा भूमिका, शिक्षा की राष्ट्रीय प्रणाली, समानता के लिये शिक्षा, विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक पुनर्गठन, तकनीकी तथा प्रबन्ध शिक्षा, शिक्षा प्रणाली का क्रियान्वयन, शिक्षा के पाठ्यक्रम तथा प्रक्रिया का अभिनवीकरण, अध्यापक शिक्षा, शिक्षा का प्रबन्ध, संसाधन तथा समीक्षा एवं भावी स्वरूप।

खण्ड 5 में उच्च शिक्षा का प्रावधान रखा गया जिसके अन्तर्गत शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों का संचालन किस प्रकार व किन किन संसाधनों के साथ होगा इसका वर्णन दिया गया है।

भावी शिक्षकों में रचनात्मक एवं सृजनात्मक दिशा में प्रोत्साहित एवं प्रेरित करने वाली परिस्थितियों के लिए तैयार करने के लिये राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक राज्य में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय खोले गये है। वर्तमान में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों निरन्तर वृद्धि हो रही है। गुजरात राज्य के मेहसाणा व पाटन जिले में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की वृद्धि के साथ ही शिक्षक प्रशिक्षकों के रोजगार के अवसर भी बढे है। शिक्षण व्यवसाय में रूचि रखने वाले कई शिक्षक प्रशिक्षक राजकीय व निजी शिक्षक प्रशिक्षकों में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे है।

शिक्षा भी एक व्यवसाय हैं, शिक्षा जगत में शिक्षकों की सफलता एवं राष्ट्रीय लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि अध्यापकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले तथ्यों का अध्ययन किया जाये। शिक्षक राष्ट्र का निर्माता कर्णधार हैं। शिक्षक, विद्यार्थी के जीवन को ढालने का महत्वपूर्ण कार्य करता हैं। छात्रों के भविष्य को उज्ज्वल करने में शिक्षक का योगदान ही सब कुछ हैं। संतुष्टि और योग्य शिक्षक द्वारा तैयार किये गये प्रतिभावान छात्र ही देश की उन्नति तथा देश की खुशहाली में अपना योगदान दे पाने में समर्थ हो सकते हैं। शिक्षा ही लोगों के कल्याण तथा सुरक्षा और खुशहाली के स्तर का निर्धारण करती है। शिक्षा को इस योग्य बनाने के लिए शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि अत्यधिक आवश्यक हैं। शिक्षा के स्तर तथा अपेक्षित उन्नति के लिए आवश्यक हैं शिक्षक भी अपने व्यवसाय में संतुष्टि हो तथा अपने कार्य में दक्ष या कुशल भी हो। शिक्षा को सफलता या विफलता बहुत कुछ शिक्षकों के निष्ठापूर्वक अपने उत्तरदायित्वों के पालन करने पर निर्भर करती है। अध्यापक निष्ठा पूर्वक कार्य सभी कर सकते है जब उन्हें अपने कार्य से सन्तुष्टि हो। शिक्षकों की सन्तुष्टि तथा असन्तुष्टि का सीधा प्रभाव छात्रों पर पड़ता हैं, जो अध्यापक असन्तुष्ट होते है उनका कार्य भी किसी सीमा तक अच्छा नहीं होता है वे अपना मानसिक सन्तुलन शीघ्र खो देते हैं।

वर्तमान में भौतिकता का अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा में अमूल्य परिवर्तन दिन प्रतिदिन तीव्रगति से हो रहा है। कार्य सन्तुष्टि किसी शिक्षक में अन्तर्निहित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है जिसे एक शिक्षक अपने अध्ययन व्यवसाय के जीवनकाल में बनाए रखने का प्रयास करता है।

राजकीय शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षक प्रशिक्षकों को राज्य सरकार द्वारा दिये जाने उच्चतम वेतन, योग्यता अनुसार समय समय पर पदोन्नति मिलना व अन्य परिलाभ उसकी कार्यसन्तुष्टि को दर्शाते है। जबकि निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में स्थिति इसके विपरीत है इसमें कार्यरत

अधिकतर शिक्षक प्रशिक्षण अपने कार्य से असन्तुष्ट दिखाई देते है इनका मानना है कि उनकी शैक्षिक योग्यता के अनुसार उनके व्यावसायिक उन्नयन को अनदेखा किया जाता है तथा देखते हुए परिस्थितियों को देखते हुए ही शोधार्थी के मस्तिष्क में अग्रलिखित प्रश्न उत्पन्न हुए।

1. क्या निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों को व्यावसायिक उन्नयन के समान अवसर प्राप्त होते है ?

2. क्या शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षक अपने कार्यस्थल वातावरण से सन्तुष्ट है ?

3. क्या निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक उन्नति महाविद्यालय के कार्यस्थल वातावरण से प्रभावित होती है ?

4. क्या निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक उन्नति महाविद्यालय के कार्यसन्तुष्टि से प्रभावित होती है ?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की जिज्ञासा ने ही शोधार्थी को उक्त विषय पर अनुसंधान करने के लिए प्रेरित किया है।

## 1.2 समस्या कथन :–

उपर्युक्त प्रस्तावना के आधार पर शोधार्थी द्वारा चयनित समस्या का कथन इस प्रकार हैः–

*''शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन पर कार्यस्थल के वातावरण एवं कार्यसन्तुष्टि का प्रभाव।''*

***"Impact of Work Place Environment and Job Satisfaction on the Professional Growth of Teacher Educators."***

## 1.3 शोध में प्रयुक्त तकनीकी शब्दों की व्याख्या :–

- **व्यावसायिक उन्नयन :–**

''व्यावसायिक उन्नयन का संबंध किसी भी व्यक्ति की अपने काम या प्रैक्टिस से संबंधित ज्ञान और कौशल अर्जित करने की क्षमता से या जानकारी की तलाश करने और अपने व्यावसायिक क्षेत्र में स्वयं को सुविज्ञ बनाए रखने से है।''

**– एनसीएफटीई, 2009, पृ. 64.5**

''शिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन को एक जीवन.पर्यन्त की गतिविधि के रूप में देखा जाना चाहिए जो उनके निजी और साथ ही व्यावसायिक जीवन पर और कार्यस्थल की नीति और सामाजिक सन्दर्भ पर ध्यान केंद्रित करती है।''

**– क्रिस्टोफर डे (1999)**

- **कार्यस्थल वातावरण :–**

**डी. डॉट के अनुसार** कार्यस्थल वातावरण में उन परिस्थितियों का समावेश होता है जिसके अन्तर्गत कर्मचारी कार्य करता है इसमें मुख्यतः भौतिक, मानवीय संसाधन के साथ सुरक्षा एवं स्वास्थ्य को देखा जाता है।

सामान्यतया कार्यस्थल वातावरण कर्मचारी के स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं कार्य उत्पादकता को प्रभावित करता है।

- **कार्यसंतुष्टि :–**

कार्य संतुष्टि एक कठिन एवं व्यापक शब्द हैं, लेकिन यह संगठन में औद्योगिक मनोविज्ञान एवं व्यवहारिक विज्ञान का विवादास्पद विषय हैं, जो संगठनात्मक वातावरण व पर्यावरण के विकास के प्रति कर्मचारियों के अभिप्रेरणा की मात्रा को दर्शाता हैं, इस शब्द को विभिन्न प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया गया हैं :–

''संतोष का अभिप्राय एक व्यक्ति के उसके कार्य के प्रति (जिसे वह अपनी रोजगार की अवस्था में सम्पादित करता हैं) से प्राप्त मानसिक सुख में हैं, जो कि उसे आवश्यकताओं, इच्छाओं व आंकाक्षाओं की सन्तुष्टि के फलस्वरूप प्राप्त होता हैं।''

**– एनसाइक्लोपीडिया डिक्शनरी ऑफ मेनेजमेन्ट**

''कार्य संतुष्टि एक आनन्ददायक/विलासपूर्ण, भावनात्मक अवस्था है जो प्रत्येक के लिये किये गये कार्य, कार्य पर मिली सुविधाओं के प्रति अभिवृत्ति द्वारा आंकी जाती हैं।''

**– एडिवन लॉक**

## 1.4 समस्या का औचित्य :–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इस शोध के माध्यम से शिक्षक प्रशिक्षक यह जान पायेगे कि किस तरह से विपरीत परिस्थितियों में व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखकर अपना कार्य करते हुए व्यावसायिक सन्तुष्टि प्राप्त की जा सकती है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य से शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के वातावरण को उत्कृष्ट स्तर का बनाया जा सकता है।

प्रस्तुत अनुसंधान से यह जानकारी प्राप्त की जा सकेगी कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के वातावरण को शिक्षक प्रशिक्षकों की सन्तुष्टि जैसा बनाने के लिए क्या क्या प्रयास किए जा सकते है।

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य से शिक्षण व्यवसाय की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर इसके प्रति रूचि उत्पन्न की जा सकती है साथ ही व्यावसायिक उन्नयन के अवसरों की संभावनाएँ उत्पन्न की जा सके। शोधकार्य के प्राप्त परिणामों के आधार पर इसी क्षेत्र में नवीन शोध किया जा सकता है।

## 1.5 शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया है :–

1. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना।
2. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना।
3. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना।
4. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
5. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना।
6. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना।

7. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना।

8. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

9. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना।

10. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना।

11. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना।

12. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## 1.6 शोध परिकल्पना :–

शोधार्थी द्वारा शोध उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित शून्य परिकल्पनाओं का निर्माण किया है :–

1. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यसन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## 1.7 शोध अध्ययन का परिसीमन :–

किसी भी विषय पर गहनता से अध्ययन करने हेतु विषय का परिसीमन करना आवश्यक होता है। शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध का परिसीमन इस प्रकार से किया गया है :–

1. प्रस्तुत अध्ययन को उत्तर गुजरात राज्य के दो जिले तक सीमित रखा गया है।

2. प्रस्तुत अध्ययन को मेहसाणा एवं पाटन जिले के निजी बी.एड. महाविद्यालयों तक सीमित रखा गया है।

3. प्रस्तुत अध्ययन शिक्षक–प्रशिक्षकों तक सीमित है।

4. प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष शोध में प्रयुक्त समष्टि तक सीमित है।

## 1.8 विधि :–

विधि वह मार्ग है जिस पर चल कर सत्य की खोज की जाती है। किसी भी शोध में अध्ययन विधि का चयन सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है। सर्वेक्षण विधि की महत्ता बताते हुए सुखिया व महरोत्रा ने लिखा है कि "सर्वेक्षण विधि सामन्यतः ऐसे अनुंसधान के लिए प्रयुक्त की जाती है जिनका उद्देश्य यह ज्ञात करना होता है कि वर्तमान में सामान्य या प्रतिनिधि स्थित व्यवहार क्या है।"

प्रस्तुत अध्ययन के लिए **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया गया।

## 1.9 उपकरण :–

शैक्षिक शोध कार्यो में सामान्यतया दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है जिसमें मानकीकृत व स्वनिर्मित उपकरण है। प्रयोग में लिये गये उपकरणों का रेखाचित्र नीचे प्रदर्शित हैः–

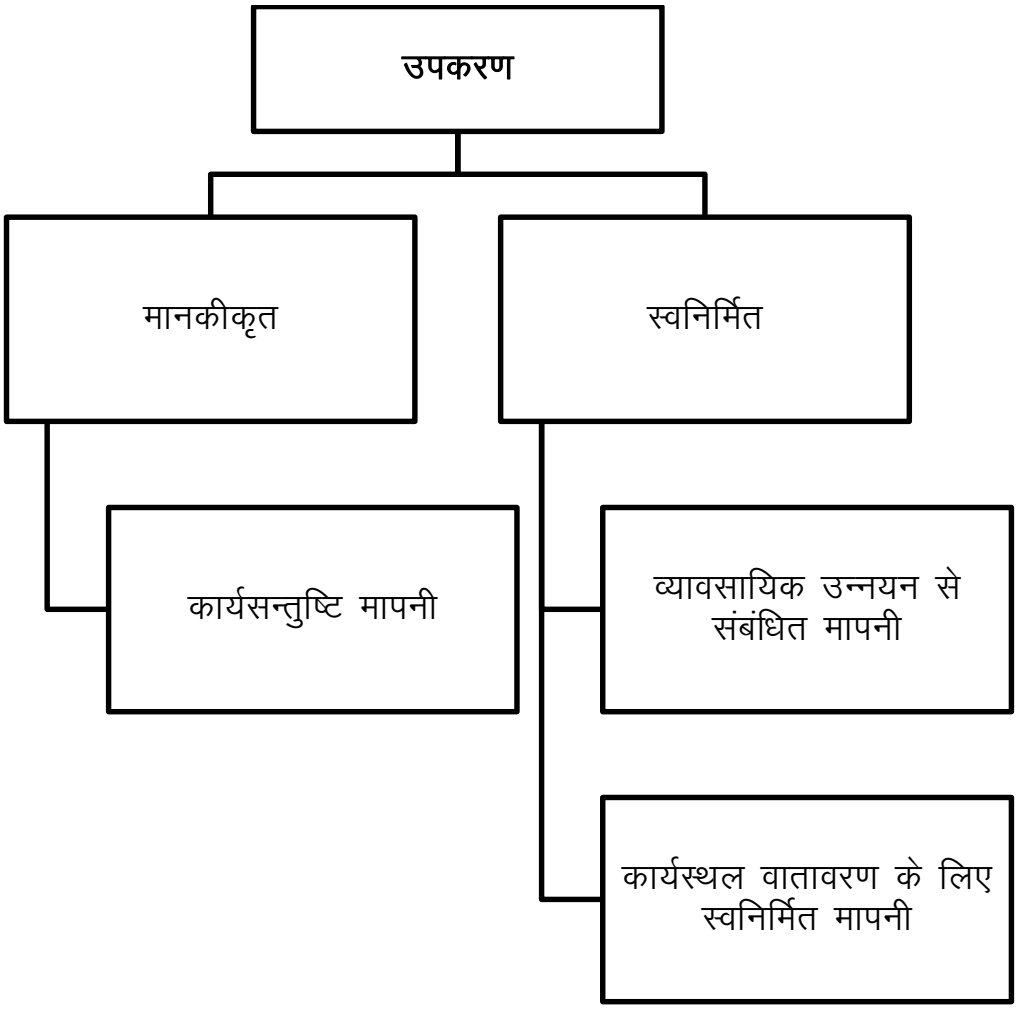


- व्यावसायिक उन्नयन के लिए स्वनिर्मित मापनी।
- कार्यस्थल वातावरण के लिए स्वनिर्मित मापनी।
- कार्यसन्तुष्टि के लिए मानकीकृत उपकरण।

## 1.10 न्यादर्श :–

किसी जनसंख्या (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समुह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछ इकाईयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को न्यादर्श कहते है।

शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता हैं एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या सम्बन्धी समस्त सुचनाओं को दिया जाता हैं। एक शुद्व रूप में प्रतिनिधित्व करने वाले न्यादर्श से शोध के सामान्यीकरण के बारे में अधिक से अधिक सूचनाऐं प्राप्त की जा सकती है।

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन के लिए निम्न प्रक्रिया अपनायी गई जिसमें सर्वप्रथम मेहसाणा व पाटन जिले में स्थित बी.एड. कॉलेज की सूची बनाई गई। इस सूची में से लॉटरी विधि द्वारा मेहसाणा व पाटन जिले के 20 –20 महाविद्यालयों का चयन किया गया। प्रत्येक महाविद्यालय से सोउद्देश्य विधि द्वारा 10–10 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया जिसमें से 5 महिला व 5 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक चयन किये। इस प्रकार से कुल 200 महिला व 200 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक का चयन करते हुए कुल 400 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया। न्यादर्श का स्वरूप इस प्रकार से है :–

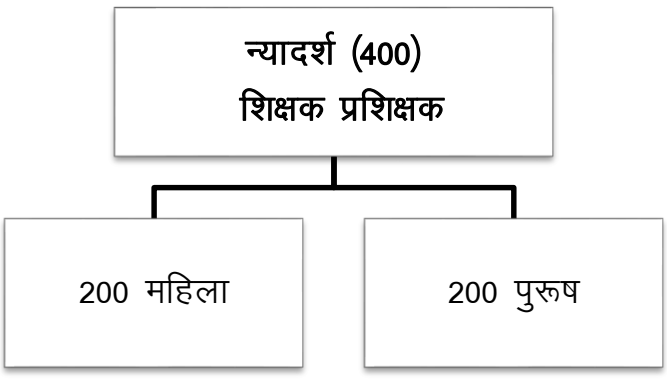

## 1.11 दत्त विश्लेषण की प्रविधियाँ :–

साांख्यिकी वह तकनीकी है जिसके द्वारा एक विशेष तरीके से प्राप्त सूचनाओं का विश्लेषण किया जा सकता हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी द्वारा निम्नांकित सांख्यिकी प्रविधियों का उपयोग संभावित किया गया है :–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी–परीक्षण

## 1.12 अध्यायों का वर्गीकरण :–

शोध को वैज्ञानिक तरीके से करने के लिए पाँच अध्यायों का निर्माण किया गया जिनका संक्षिप्तीकरण इस प्रकार से है :–

1. **प्रथम अध्याय : प्रस्तावना –** इस अध्याय में प्रस्तावना, शोध प्रश्न,समस्या कथन, पारिभाषिक शब्दावली, शोध समस्या का औचित्य, शोध समस्या के उद्देश्य, परिकल्पना, न्यादर्श, परिसीमन, चयन, शोध की विधि, उपकरण, प्रविधि, शोध अध्ययन का प्रारूप एवं उपसंहार का वर्णन किया गया।

2. **द्वितीय अध्याय : संबंधित साहित्य का अध्ययन –** इस अध्याय में प्रस्तावना, महत्व, संबंधित साहित्य के प्राप्ति स्त्रोत, शोध समस्या से संबंधित शोधकार्यों का अध्ययन, शोध अंतराल एवं उपसंहार का वर्णन किया गया।

3. **तृतीय अध्याय : शोध क्रियाविधि –** इस अध्याय में प्रस्तावना, विधि (चयनित विधि, चयन के कारण), न्यादर्श का आकार, न्यादर्श चयन की विधि/प्रक्रिया का संक्षिप्त विवरण के साथ, स्वनिर्मित व मानकीकृत उपकरण, सांख्यिकी प्रविधियाँ एवं उपसंहार का वर्णन किया गया।

4. **चतुर्थ अध्याय : दत विश्लेषण एवं व्याख्या –** इस अध्याय में प्रस्तावना, दत्तों का सारणीयन, दत्त विश्लेषण, व्याख्या एवं उपसंहार का वर्णन किया गया।

5. **पंचम अध्याय : सारांश, निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव –** इस अध्याय में सारांश (पैरेग्राफ के रूप में), शोध के निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ, भावी शोध हेतु सुझाव एवं उपसंहार का वर्णन किया गया।

## 1.13 उपसंहार :–

इस अध्याय में प्रस्तावना, शोध प्रश्न, समस्या कथन, पारिभाषिक शब्दावली, शोध समस्या का औचित्य, शोध समस्या के उद्देश्य, परिकल्पना, न्यादर्श, परिसीमन, चयन, शोध की विधि, उपकरण, प्रविधि, अध्यायों का वर्गीकरण का प्रस्तुतीकरण दिया गया।

# द्वितीय अध्याय

## सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

# द्वितीय अध्याय

# सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

## अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 2.1 | प्रस्तावना | 13-14 |
| 2.2 | सर्वेक्षण की आवश्यकता | 14 |
| 2.3 | अध्ययन के लाभ | 15-16 |
| 2.4 | साहित्य प्राप्त करने के स्त्रोत | 17 |
| 2.5 | संबंधित साहित्य का अध्ययन | 17-46 |
| 2.5.1 | व्यावसायिक उन्नयन से संबंधित शोध साहित्य | 17-27 |
| 2.5.2 | कार्यस्थल वातावरण से संबंधित शोध साहित्य | 27-41 |
| 2.5.3 | कार्यसन्तुष्टि से संबंधित शोध साहित्य | 41-46 |
| 2.6 | उपसंहार | 46 |

# द्वितीय अध्याय

## सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

### 2.1 प्रस्तावना :–

शोधकार्य से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना, वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण चरण है, जिस प्रकार महासागर में मछली अपने भोजन की तलाश करती है, उसी प्रकार शोधकर्ता साहित्य रूपी सागर में आने से संबंधित बातों को तलाश करता है, क्योंकि मानव स्वभाव से ही अपने अतीत के संचित एवं उल्लेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है। शोधकर्ता अपने कार्य को परिशुद्ध स्पष्ट एवं गहन करते हुए अपने लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सही विधि–प्रविधियों का उपयोग करते हुए अपने शोधकार्य को सही दिशा प्रदान करता है।

यह साहित्य सर्वेक्षणात्मक एवं आलोचनात्मक रूप में होना चाहिए। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से शोधकर्ता अपने शोध/अनुसंधान से सम्बन्धित सही आयामों, विधियों एवं प्रविधियों का ही ज्ञान प्राप्त नहीं करता अपितु यह भी जानकारी प्राप्त करता है कि इस क्षेत्र में क्या–क्या शोध कार्य हो चुके है, और उनके क्या निष्कर्ष रहे है। इस जानकारी के द्वारा वह अपने शोध कार्य को सही दिशा व दशा प्रदान कर सकता है।

अब प्रश्न यह है कि सम्बन्धित शोध साहित्य है क्या? तो इसका यह उत्तर है कि सम्बन्धित शोध साहित्य का तात्पर्य अनुसंधान (शोध) सम्बन्धित समस्या के स्त्रोतों से है, जिनमें ज्ञान कोष, पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों से है, जिनकी सहायता से अनुसंधानकर्ता को शोध कार्य करने की दिशा में सहायता मिलती है। इसके अभाव में शोधकर्त्री उन नाव के समान है जो पतवार के अभाव में समुद्र में इधर–उधर थपैड़े खाते हुए कभी

किनारे पर लग जाती है व कभी समुद्र में समा जाती है। ठीक इसी प्रकार शोधकर्ता को यह ज्ञात न हो कि क्या–क्या कार्य हो चुके है, कौनसी समस्या पर कार्य नहीं हुआ है, जिस समस्या पर कार्य नहीं हुआ है, तब तक न तो शोध समस्या का निर्धारण किया जा सकता है न ही शोध रूपरेखा तैयार की जा सकती है।

## 2.2 सर्वेक्षण की आवश्यकता :–

सम्बद्ध साहित्य का सर्वेक्षण निम्न कारणों में आवश्यक है :–

1. कार्य की योजना बनाने में प्रारम्भिक पदों में से एक रूचि के अनुरूप विशेष क्षेत्र में किए गए शोधकार्य, शोधकर्ता को एक दिशा का संकेत देते हैं।

2. प्रत्येक अनुसंधानकर्ता के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है, कि वह दूसरों के द्वारा किये गए अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली–भांति अवगत हो। वास्तविक योजना बनाने और अध्ययन करने में यह अत्यन्त महत्वपूर्ण समझी जाती है। यह अध्ययन की समस्या को साधन प्रदान करता है। शोध की समस्या का चयन करने और पहचानने में सहायता प्रदान करता है। साहित्य का पुनर्निरीक्षण शोध हेतु अध्ययन के लिये आधार प्रदान करता है।

सम्बन्धित शोध साहित्य की आवश्यकता को बताते हुए **ढौंढियाल, एस. एन. एवं फाटक ए.बी.** ने कहा है कि ''समस्या से सम्बन्धित सम्पूर्ण साहित्य का अध्ययन अनुसंधान का प्राथमिक आधार है और अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्त्वपूर्ण कारक है।''

अतः किसी समस्या पर शोध कार्य के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों व शोध से भली–भांति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहार ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसका सैद्धान्तिक व सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करनी होती है।

## 2.3 सम्बन्धित साहित्य अध्ययन के लाभ :–

अनुसंधान कार्य आरम्भ करने से पूर्व अनुसंधानकर्ता के लिए सम्बन्धित साहित्य का गहन अध्ययन करना अति आवश्यक है, ताकि उससे होने वाले लाभ प्राप्त हो सके। यह लाभ निम्नानुसार हो सकते हैं :–

1. **विषय का व्यापक एवं गहन ज्ञान :–** संबंधित साहित्य से अनुसंधानकर्ता को ज्ञान की अभिवृत्ति में सहायता मिलती है, ताकि जिस विषय को अनुसंधानकर्ता ने शोध हेतु चयन किया है, उसमें वह दक्ष हो सके।

2. **अनुसंधान आकल्प में सहायता :–** सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के परिणाम स्वरूप अनुसंधान प्रक्रिया का सम्प्रत्यय विस्तृत एवं गहन हो जाता है। इससे मानस पटल पर शोधकार्य के प्रक्रम एवं प्रविधि के प्रत्येक चरण का एक स्पष्ट एवं प्रभावी चित्र उभरकर आता है।

3. **अन्तर्दृष्टि का विकास :–** सम्बन्धित साहित्य से अनुसंधानकर्ता का मार्गप्रशस्त हो जाता है। उसे एक नवीन अन्तर्दृष्टि एवं सूझ प्राप्त होती है, जिसके सहारे वह अपनी समस्या की गहनता एवं उसके मूल को समझ लेता है। वह अपने कार्य को अधिक कुशलता एवं चतुरता के साथ सम्पन्न करने में अग्रसर होता है, यह अन्तर्दृष्टि उपकरणों के चयन, अनुसंधान विधि के चयन, व्यक्तियों के चयन, समस्या की सुस्पष्ट परिभाषा आदि के बारे में प्रतीत होती है।

4. **पुनरावृत्ति से रक्षा :–** सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन नहीं करने से त्रुटि का होना स्वाभाविक है, जो कार्य अनुसंधानकर्ताओं द्वारा पूर्व में किया जा चुका है, वही कार्य पुनः कर लिया जाये तो इससे अनुसंधानकर्ता नवीन ज्ञान का सृजन एवं नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन नहीं कर सकेगा और पुनः आवृत्ति मात्र हो जाने से उसके शोधकार्य का लक्ष्य प्रभाव शून्य हो जाएगा।

5. **सामान्य अनुसंधान सम्बन्धित निर्देश :–** इससे शोधकर्ता को अनुसंधान सम्बन्धित सामान्य निर्देशों को प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

6. **ज्ञान का विस्तार :–** सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से शोधकर्ता के ज्ञानोपार्जन की अभिवृद्धि होती है, साथ ही चयनित विषय में दक्षता हासिल हो जाती है।

7. **समस्या से सम्बन्धित अन्य समस्या का अन्वेषण :–** कई बार सम्बन्धित साहित्य से अन्य कई छोटी समस्याएँ मिल जाती है, जिनका अध्ययन मुख्य समस्या के साथ–साथ सम्पन्न हो सकता है। इससे किया जाने वाला अनुसंधान कार्य अधिक प्रभावी हो जाता है।

अतः सम्बन्धित साहित्य अध्ययन अनुसंधान प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण अंग है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य 'अंधे के तीर' के समान होगा। इसके अभाव में वह एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता, क्योंकि यह ज्ञात होना आवश्यक है, कि उस क्षेत्र में शोधकार्य हो चुका है, या नहीं, जिससे वह अपनी शोध समस्या के शोधकार्य व महत्व का स्व–मूल्यांकन कर सके।

विभिन्न विद्वानों के कथन से यह निष्कर्ष निकला है, कि संबंधित साहित्य का अध्ययन समय साध्य होता है। यह शोधकर्ता का अत्यन्त उपयोगी पथ है। इस प्रकार सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से अनावश्यक दोहराने की प्रक्रिया नहीं होती है। अतः नए अनुसंधानकर्ता की सफलता के लिए संबंधित साहित्य का अध्ययन अपरिहार्य है।

## 2.4 साहित्य प्राप्त करने के स्त्रोत :–

शोधार्थी शोध से सम्बन्धित सूचनाएं लिखित व संकलित दो प्रमुख स्त्रोतों से प्राप्त करता है। सम्बन्धित साहित्य प्राप्त करने के प्रमुख स्त्रोत निम्न है :–

1. **प्राथमिक स्त्रोत :–** इसके अन्तर्गत पत्र–पत्रिकाएँ, उपलब्ध साहित्य, एक ही विषय पर निबन्ध पुस्तिकाएँ, वार्षिक पुस्तकें, बुलेटिन, डॉक्टरल तथा शिक्षा का विश्व ज्ञानकोष, शिक्षा सूची पत्र, शिक्षा सार तथा संदर्भ ग्रंथ सूची एवं निर्देशिकाएँ आदि आती है।

2. **उद्धरण स्त्रोत :–** इसके अन्तर्गत देश व विदेश में किए गए अध्ययन का समावेश होता है। शोधकार्य से संबंधित पूर्व अध्ययनों का विश्लेषण कर उनका संक्षिप्त परिचय निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया है।

## 2.5 संबंधित साहित्य का अध्ययन :–

शोधार्थी ने शोध साहित्य को तीन भागो में बांटा है:–

### 2.5.1 व्यावसायिक उन्नयन से संबंधित शोध साहित्य :–

- **मरे एस. ब्रिट, कैथरीन सी. इरविन और गर्थ रिची (2001):** *"व्यावसायिक वार्तालाप और व्यावसायिक विकास",* गणित शिक्षक शिक्षा जर्नल वॉल्यूम 4, पृष्ठ 29–53। दो साल की अवधि में 18 शिक्षकों के लिए एक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम आयोजित किया गया था। भाग लेने वाले शिक्षक इंटरमीडिएट स्कूलों (11–13 आयु वर्ग के छात्र) और माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाते थे। शिक्षकों ने अपने अभ्यास पर प्रतिबिंबित करने के लिए प्रोत्साहन के साथ, लेकिन शोधकर्ताओं से न्यूनतम निर्देश के साथ, अपने गणित शिक्षण को बेहतर बनाने के लिए सहयोगात्मक रूप से

काम किया। परिणाम, जैसा कि शिक्षण प्रथाओं, विश्वासों और प्रतिबिंबों और छात्र उपलब्धि में परिवर्तन द्वारा परिभाषित किया गया है, ने संकेत दिया कि सहयोगी कार्यक्रम अनुभवी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के लिए विशेष रूप से उपयोगी था लेकिन मध्यवर्ती विद्यालय के शिक्षकों के लिए कम उपयोगी था। हमने निष्कर्ष निकाला कि इस प्रकार का व्यावसायिक विकास उन शिक्षकों के लिए सबसे उपयोगी था जिन्हें गणित का पर्याप्त ज्ञान था; ये शिक्षक किसी विशेषज्ञ की सलाह का सहारा लिए बिना, शिक्षाशास्त्र पर ध्यान केंद्रित करने और उनके द्वारा पढ़ाए जाने वाले गणित के पहलुओं के बीच संबंध बनाने में सक्षम थे।

- **विजयलक्ष्मी, के.एस. (2003)** ने *''महिला शिक्षक प्रशिक्षिकाओं के व्यक्तिगत विकास पर शैक्षिक कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन''* किया गया। व्यावसायिक विकास शिक्षण कार्यक्रम से महिला शिक्षक प्रशिक्षकों को सशक्त करने हेतु विकसित करना दृढ़, चयनित व्यक्तिगत गुणों के संदर्भ में अध्ययन के उद्देश्य रखे गये। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के विभिन्न समूह उनके आक्रमकता, निष्क्रिय स्तर के व्यवहार के सम्बन्ध में भिन्नता रखते हैं।

- **गोस्वामी, वंदना; सुराणा, अजय (2005)** ने *''सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम द्वारा शिक्षार्थी–अध्यापकों का वृत्तिक विकास''* पर शोध किया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में वृत्तिक मूल्य के निर्वहन में शिक्षार्थी परेशानी अनुभव करते हैं। अतः इस प्रकार के निवेशों में अधिक वृद्धि करने की आवश्यकता है।

- **ब्रॉड, डॉ. कैथरीन; इवांस, डॉ. मार्क (2006)** ने *''अनुभवी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास सामग्री और वितरण मोड''*, पर शोध किया इनके अनुसार अनुभवी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास को एक सरल रेखीय प्रक्रिया के हिस्से के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। अनुभवी शिक्षकों के पास पेशेवर विशेषज्ञता के प्रकार और सीखने के पसंदीदा तरीके हैं। मध्य–कैरियर कई प्रकार के ज्ञान के समेकन, संश्लेषण और एकीकरण के साथ–साथ कौशल और समझ को बेहतर बनाने के लिए प्रयोग और अन्वेषण का समय है। पूछना, दूसरों के साथ ज्ञान साझा करना, अनुभवी शिक्षकों के लिए व्यावसायिक शिक्षा सीखने की एक विशेषता है।

- **सौरे, दामोदर (2007)** ने *''स्वनवीनीकरण द्वारा व्यावसायिक विकास के संदर्भ में अध्ययन''* करते हुए पाया कि व्यावसायिक नवीनीकरण में सम्प्रत्यात्मक तकनीकी तथा मानवीय कौशलों की अपर्याप्तता की खोज की गयी। शारीरिक नवीनीकरण शरीर तथा मस्तिष्क को तनाव का सामना करने के लिए तैयार रखता है। ये किसी भी व्यवसाय में सफलता प्राप्त करने हेतु पूर्व परिस्थिति में सहायक है। आध्यात्मिक नवीनीकरण मूल्यों तथा जीवन के सिद्धांतों में बढ़ोत्तरी करता है।

- **गुप्ता, प्रिया (2008)** ने *''सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम की क्षेत्र तथा स्व विकास में प्रासंगिकता पर अध्ययन''* किया व पाया कि शिक्षण क्षेत्र की भूमिकाओं के निर्वहन में सहभागितापूर्ण अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का महत्व होता है।

- **थॉमस, आर. गुस्की (2009):** *"पेशेवर विकास और शिक्षक परिवर्तन",* शिक्षक और, शिक्षण, खंड 8, – अंक 3। यह आलेख पेशेवर विकास के अनुभवों से लेकर शिक्षकों के दृष्टिकोण और धारणाओं में स्थायी परिवर्तन तक की घटनाओं के अस्थायी अनुक्रम को चित्रित करता है। मॉडल का समर्थन करने वाले अनुसंधान साक्ष्य को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है और जिन परिस्थितियों में परिवर्तन को सुगम बनाया जा सकता है, उनका वर्णन किया गया है।

- **कोलिन्सन, विविएन (2010):** *"शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकासः परिवर्तन की दुनिया",* यूरोपीय जर्नल ऑफ टीचर एज्युकेशन, वोल्युम–32, अंक 1। जैसे–जैसे औद्योगीकृत दुनिया एक अन्योन्याश्रित और वैश्विक समाज में स्थानांतरित हुई, औपचारिक स्कूली शिक्षा को जल्दी से एक प्रमुख कारक के रूप में पहचाना गया, जो आजीवन शिक्षार्थियों के एक ज्ञान समाज को प्राप्त करने में सक्षम था जो संगठनों को बदलने और पुनर्जीवित करने में सक्षम था। शिक्षकों को शिक्षण में सुधार के लिए एक साथ सीखने में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित किया गया और विस्तार से, उनकी देखभाल में बच्चों के लिए सीखने में सुधार किया गया। यह लेख तीन उभरती हुई प्रवृत्तियों की पहचान करता है जिनका उद्देश्य शिक्षकों के सीखने को व्यापक बनाना और निरंतर व्यावसायिक विकास के माध्यम से उनकी प्रथाओं को बढ़ाना हैः ग्लोकलाइज़ेशन, मेंटरिंग और री–थिंकिंग टीचर मूल्यांकन। लेख का मुख्य भाग इंगित करता है कि ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, लातविया, आयरलैंड गणराज्य, स्कॉटलैंड, ताइवान और संयुक्त राज्य अमेरिका में ये तीन रुझान कैसे सामने आ रहे हैं। हालाँकि, शिक्षक संगठनात्मक और प्रणालीगत परिवर्तन के बिना आवश्यक परिवर्तन नहीं ला सकते हैं;

अर्थात्, सरकारी एजेंसियों और अन्य संस्थानों के साथ सहयोग। लेखकों का सुझाव है कि इक्कीसवीं सदी में स्कूली शिक्षा को बदलना शिक्षा नीति–निर्माण में विस्तारित शिक्षक भागीदारी, एजेंसियों में अधिक सुसंगत सरकारी नीतियों और करियर–लंबे समय तक जारी व्यावसायिक विकास के लिए सहयोगी, विभेदित मॉडल द्वारा समर्थित शिक्षा नीतियों पर निर्भर करता है।

- **बीट्राइस, अवलोस (2011):** *''दस वर्षों में शिक्षण और शिक्षक शिक्षा में शिक्षक पेशेवर विकास'',* शिक्षण और शिक्षक शिक्षा, खंड 27, अंक 1, जनवरी 2011, पृष्ठ 10–20। शिक्षक व्यावसायिक विकास पर दस वर्षों (2000–2010) में शिक्षण और शिक्षक शिक्षा में प्रकाशनों की समीक्षा पेपर का विषय है। पहला भाग सीखने, सुविधा और सहयोग, व्यावसायिक विकास को प्रभावित करने वाले कारकों, व्यावसायिक विकास की प्रभावशीलता और विषयों के आसपास के मुद्दों के संदर्भ में उत्पादन का संश्लेषण करता है। दूसरा भाग, करीब से जांच के लिए उत्पादन नौ लेखों में से चयन करता है। पेपर इस बात पर ध्यान देते हुए समाप्त होता है कि कैसे उत्पादन शिक्षक पेशेवर सीखने की जटिलताओं को सामने लाता है और कैसे अनुसंधान और विकास ने इन कारकों का संज्ञान लिया है और उनके प्रभावों के बारे में आशावाद के लिए भोजन प्रदान किया है, हालांकि अभी तक समय पर उनकी स्थिरता के बारे में नहीं है।

- **ख्वाजा, जहांजेब, बशीर, डॉ नदीम अहमद (2013):** *"प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम और कर्मचारी और संगठन के लिए इसके लाभः एक अवधारणात्मक अध्ययन",* व्यापार और प्रबंधन के यूरोपीय जर्नल, खंड 5,

संख्या 2, 2013। उद्देश्य इस पत्र का कर्मचारी प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम और इसके लाभों पर स्थापित एक वैचारिक अध्ययन प्रस्तुत करना है। यह पेपर कर्मचारी प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रम की संरचना और तत्वों का निरीक्षण करेगा और बाद में अध्ययन प्रस्तुत करेगा कि कर्मचारियों और संगठनों के लिए सकारात्मक परिणाम क्या हैं। संगठनों को हाल की वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धी बने रहना मुश्किल लगता है। उन संगठनों के लिए कर्मचारी विकास कार्यक्रम का महत्व बढ़ रहा है जो प्रतिस्पर्धियों के बीच लाभ प्राप्त करना चाहते हैं। कर्मचारी संगठन के सम्मानित संसाधन हैं और संगठन की सफलता या विफलता कर्मचारियों के प्रदर्शन पर निर्भर करती है। इसलिए, संगठन कर्मचारी प्रशिक्षण और विकास कार्यक्रमों पर बड़ी राशि का वित्तपोषण कर रहे हैं। इसके अलावा, प्रशिक्षण कार्यक्रम में यह कंपनियों के लिए ज्ञान, विशेषज्ञता और कर्मचारियों की क्षमता पर जोर देने में सहायक है। विकास कार्यक्रम का कर्मचारी और संगठन दोनों पर पड़ने वाले प्रभाव पर पेशेवरों और शोधकर्ताओं के बीच पर्याप्त चर्चा है। यहां वर्णित अध्ययन कर्मचारी विकास कार्यक्रम के मौलिक और संगठनों और कर्मचारियों को इसके लाभों पर साहित्य का एक सतर्क मूल्यांकन है।

- **मैरी एम कैनेडी (2016):** *"कैसे व्यावसायिक विकास शिक्षण में सुधार करता है?",* सेज जर्नल, खंडः 86 अंकः 4, पृष्ठ (ओं): 945–980। व्यावसायिक विकास कार्यक्रम विभिन्न सिद्धांतों पर आधारित होते हैं कि छात्र कैसे सीखते हैं और शिक्षक कैसे सीखते हैं, इसके विभिन्न सिद्धांत हैं। समीक्षक अक्सर कार्यक्रम की अवधि, तीव्रता, या कोच या ऑनलाइन पाठ जैसी विशिष्ट तकनीकों के उपयोग जैसी डिज़ाइन सुविधाओं के अनुसार कार्यक्रमों को क्रमबद्ध करते हैं, लेकिन ये श्रेणियां शिक्षण और

शिक्षक सीखने के बारे में कार्यक्रमों के अंतर्निहित उद्देश्य या परिसर को उजागर नहीं करती हैं। यह समीक्षा कार्यक्रमों को उनके कार्य के अंतर्निहित सिद्धांतों के अनुसार क्रमबद्ध करती है, जिसमें शामिल हैं (ए) एक मुख्य विचार जो शिक्षकों को सीखना चाहिए और (बी) शिक्षकों को अपने स्वयं के चल रहे अभ्यास के भीतर उस विचार को लागू करने में मदद करने की रणनीति। कठोर अनुसंधान डिजाइन मानकों का उपयोग करते हुए, समीक्षा 28 अध्ययनों की पहचान करती है। क्योंकि अध्ययन कई तरह से भिन्न होते हैं, समीक्षा सांख्यिकीय के बजाय ग्राफिक रूप से कार्यक्रम प्रभाव प्रस्तुत करती है। दृश्य पैटर्न बताते हैं कि कई लोकप्रिय डिज़ाइन सुविधाएँ प्रोग्राम प्रभावशीलता से जुड़ी नहीं हैं। इसके अलावा, विभिन्न मुख्य विचार अलग–अलग प्रभावी नहीं हैं। हालाँकि, अधिनियमन को सुविधाजनक बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली शिक्षाशास्त्र उनकी प्रभावशीलता में भिन्न हैं। अंत में, समीक्षा पेशेवर विकास के अध्ययन के लिए अनुसंधान डिजाइन के प्रश्न को संबोधित करती है और सुझाव देती है कि कुछ व्यापक रूप से पसंदीदा शोध डिजाइन अध्ययन के परिणामों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं।

- **पोस्टहोम, मे ब्रिट (2018):** *"स्कूल में शिक्षकों का व्यावसायिक विकासः एक समीक्षा अध्ययन",* कोजेंट शिक्षा, खंड 5, 2018 – अंक 1. इस समीक्षा अध्ययन में 2016 और 2017 के 43 लेख शामिल हैं, जो शिक्षकों के पेशेवर विकास पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जैसा कि निम्नलिखित दोहरे शोध प्रश्न द्वारा निर्देशित हैः "स्कूल में शिक्षकों के पेशेवर विकास की क्या विशेषता है, और यह विकास स्कूल के सुधार को कैसे प्रभावित करता है?" समीक्षा इंगित करती है कि यदि शिक्षकों को विद्यालय में सुधार लाना है तो उनकी सीखने की प्रक्रियाओं को विकसित करने की

आवश्यकता है। शोधकर्ताओं के लिए केवल स्कूलों में सीखने की प्रक्रियाओं का अध्ययन करना पर्याप्त नहीं है; उन्हें प्रारंभिक हस्तक्षेप अध्ययन भी करना चाहिए। अंततः, इन प्रक्रियाओं पर शोध करते समय, शोधकर्ताओं को पूरे स्कूल में चिकित्सकों–नेताओं और शिक्षकों के नेतृत्व और स्वामित्व वाली एक विस्तृत परिवर्तन प्रक्रिया को भड़काना और बनाए रखना चाहिए। निष्कर्ष बताते हैं कि यह दिखाने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है कि कैसे बाहरी संसाधन व्यक्ति, जैसे कि शोधकर्ता, काम पर शिक्षकों और स्कूल के नेताओं के सहयोग से स्कूल के विकास में योगदान कर सकते हैं।

- **कैथलीन, महोन (2019):** *"नए शिक्षाविदों के बीच पेशेवर विकास का पोषण",* उच्च शिक्षा में शिक्षण, खंड 27, 2022 – अंक 2. हाल के दिनों में उच्च शिक्षा (एचई) की जटिलता और चुनौतियों पर एचई साहित्य में व्यापक रूप से चर्चा की गई है, क्योंकि विश्वविद्यालय के शिक्षकों और उनकी पेशेवर सीखने की जरूरतों पर सहवर्ती मांगें हैं। इन वार्तालापों में नए शिक्षाविदों पर बहुत ध्यान दिया गया है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय पीएचडी और पोस्ट–डॉक्टरेट शोधकर्ताओं पर कम ध्यान दिया गया है, जिन्हें अक्सर पढ़ाने के लिए कहा जाता है, फिर भी उन्हें मूलभूत शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में भाग लेने से रोका जा सकता है। यह पत्र इसी स्थिति में नए शिक्षाविदों के लिए विकसित एक शैक्षणिक पाठ्यक्रम पर आधारित व्याख्यात्मक–व्याख्यात्मक अध्ययन पर चर्चा करता है। हमारी चर्चा शैक्षणिक समझ और आत्मविश्वास के संदर्भ में पाठ्यक्रम प्रतिभागियों द्वारा अनुभव किए गए पेशेवर विकास पर केंद्रित है, और प्रतिभागियों के दृष्टिकोण से उस विकास को क्या सक्षम बनाता है। साक्षात्कार, प्रश्नावली और गुणात्मक पाठ्यक्रम मूल्यांकन के विश्लेषण के

आधार पर, हम ऐसे उद्देश्य–निर्मित पाठ्यक्रमों के मूल्य पर विचार करते हैं और यह सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यक्रम डेवलपर्स द्वारा विचार करने की आवश्यकता हो सकती है कि उनका प्रभाव इष्टतम है।

- **सबाइन, होमेलहॉफ (2020):** *"कैरियर के विभिन्न चरणों में व्यक्तिगत विकास का अनुभवः एक खोजपूर्ण अध्ययन",* संगठन बेराटुंग, पर्यवेक्षण, कोचिंग। खंड 27, पृष्ठ 5–19। हम जांच करते हैं कि क्या काम पर व्यक्तिगत विकास का अनुभव किसी के करियर के दौरान बदलता है। 29 चाइल्डकैअर प्रदाताओं के साथ साक्षात्कार से पता चला कि चुनौतियों में महारत हासिल करने के बाद व्यक्तिगत विकास महसूस किया गया। करियर के चरण के अनुसार इन चुनौतियों की प्रकृति और सामग्री अलग–अलग होती है। प्रारंभिक करियर के व्यक्तियों ने अपने दैनिक कार्य को चुनौतीपूर्ण माना। अपने करियर के बीच में पेशेवरों ने सामाजिक संघर्षों और उनके संकल्पों पर अधिक ध्यान केंद्रित किया, जबकि अपने करियर के अंत में पेशेवरों को अद्वितीय, गैर–नियमित कार्यों को चुनौतियों के रूप में देखने की अधिक संभावना थी। यह अध्ययन बताता है कि व्यक्तिगत विकास को करियर के चरण से स्वतंत्र रूप से पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता है। निहितार्थों पर चर्चा की गई है।

- **रॉबर्ट, ओ'डॉड (2021):** *"वर्चुअल एक्सचेंज में भागीदारी के माध्यम से शिक्षकों के व्यावसायिक विकास की खोज",* कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस, वॉल्यूम 34 अंक 1. वर्चुअल एक्सचेंज (वीई) एक छत्र शब्द है जिसका उपयोग छात्रों के समूहों की सगाई को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में अंतर्राष्ट्रीय भागीदारों के साथ

निरंतर ऑनलाइन अंतर–सांस्कृतिक बातचीत और सहयोग। कंप्यूटर–सहायता प्राप्त भाषा सीखने के साहित्य में, वीई के लिए टेलीकोलेबोरेशन और ई–टंडेम दृष्टिकोणों पर बड़े पैमाने पर शोध किया गया है। हालांकि, इस शोध ने मुख्य रूप से शिक्षार्थियों के लाभ पर ध्यान केंद्रित किया है और शिक्षकों पर प्रभाव का बहुत कम पता लगाया गया है। यह पेपर एक बड़े पैमाने पर यूरोपीय परियोजना के हिस्से के रूप में वीई परियोजनाओं में अपनी कक्षाओं में लगे 31 शिक्षक प्रशिक्षकों के गुणात्मक अध्ययन के परिणामों की जांच करके विदेशी भाषा शिक्षकों के व्यवहार और उनके पेशेवर विकास पर वीई के प्रभाव की पहचान करता है। अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि वीई परियोजनाओं में भागीदारी शिक्षकों को निरंतर व्यावसायिक विकास और कार्यप्रणाली नवाचार में मूल्यवान अनुभव प्रदान करती है। विशेष रूप से, वीई को शिक्षकों के लिए नई पेशेवर भागीदारी, सहयोगी शैक्षणिक पहल विकसित करने, अपने स्वयं के ऑनलाइन सहयोग कौशल विकसित करने और अपने वर्तमान शिक्षण अभ्यास में अधिक नवीन दृष्टिकोण पेश करने के अवसरों को खोलने के लिए देखा गया था।

- **पोपोवा, अन्ना (2022):** *"दुनिया भर में शिक्षक व्यावसायिक विकासः साक्ष्य और अभ्यास के बीच अंतर",* विश्व बैंक अनुसंधान पर्यवेक्षक, खंड 37, अंक 1, फरवरी 2022, पृष्ठ 107–136। निम्न और मध्यम आय वाले देशों में कई शिक्षकों के पास प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए कौशल की कमी है, और पेशेवर विकास (पीडी) कार्यक्रम प्रमुख उपकरण हैं जिनका उपयोग सरकारें उन कौशलों को उन्नत करने के लिए करती हैं। उसी समय, कुछ पीडी कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया जाता है, और जिनका मूल्यांकन किया जाता है वे अत्यधिक भिन्न परिणाम दिखाते हैं। यह

पेपर शिक्षक पीडी कार्यक्रमों पर रिपोर्टिंग को मानकीकृत करने के लिए संकेतकों के एक सेट–इन–सर्विस टीचर ट्रेनिंग सर्वे इंस्ट्रूमेंट– का प्रस्ताव करता है। 33 कठोर मूल्यांकन वाले पीडी कार्यक्रमों के लिए उपकरण के एक आवेदन से पता चलता है कि ऐसे कार्यक्रम जो कैरियर प्रोत्साहन के लिए भागीदारी को जोड़ते हैं, एक विशिष्ट विषय पर ध्यान केंद्रित करते हैं, प्रशिक्षण में पाठ अधिनियमन को शामिल करते हैं, और प्रारंभिक आमने–सामने प्रशिक्षण शामिल करते हैं जो उच्च छात्र सीखने के लाभ दिखाते हैं. गुणात्मक साक्षात्कारों में, कार्यक्रम कार्यान्वयनकर्ता अपने व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की सबसे प्रभावी विशेषताओं में से एक के रूप में अनुवर्ती यात्राओं की भी रिपोर्ट करते हैं। यह पत्र तब 14 देशों में 139 सरकार द्वारा वित्त पोषित, बड़े पैमाने पर व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के नमूने पर उपन्यास डेटा प्रस्तुत करने के लिए उपकरण का उपयोग करता है। अधिकांश स्तर पर शिक्षक व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों की विशेषताएं उन कार्यक्रमों से काफी भिन्न होती हैं जो सबूत बताते हैं कि प्रभावी हैं, पीडी में भाग लेने के लिए कम प्रोत्साहन, नए कौशल का अभ्यास करने के कम अवसर, और शिक्षकों के अपनी कक्षाओं में लौटने के बाद कम अनुवर्ती।

## 2.5.2 कार्यस्थल वातावरण से संबंधित शोध साहित्य :–

- **होयट, डब्लू.डी. (2001)** : *''कॉलेज के माहौल में पुरुषों और महिलाओं के लिए शरीर की छवि और सहकर्मी संबंधों के साथ संतुष्टि।''*

**उद्देश्य :–** इस अध्ययन का उद्देश्य पुरुष और महिला कॉलेज के छात्रों में शरीर की छवि और रिश्ते की संतुष्टि की जांच करना था।

**निष्कर्ष** :– परिणामों ने संकेत दिया कि महिलाएं, विशेष रूप से औसत वजन से कम या उससे अधिक, पुरुषों की तुलना में अपनी उपस्थिति से अधिक असंतुष्ट थीं, जबकि पुरुष महिलाओं की तुलना में अपने संबंधों और यौन जीवन से अधिक असंतुष्ट थे। इसके अलावा, वे शरीर के अंग जिनके साथ प्रत्येक लिंग सबसे अधिक असंतुष्ट था, वे "आदर्श" छवियों के माध्यम से जोर देने वाले शरीर के अंगों के अनुरूप थे। इन परिणामों की लैंगिक भूमिका की गतिशीलता और सामाजिक दबावों के संबंध में चर्चा की गई है।

- **रिचर्ड, बट (2002)** : *''व्यावसायिक कल्याण और सीखनाः प्रशासक–शिक्षक कार्यस्थल संबंधों का एक अध्ययन'',* द जर्नल ऑफ एजुकेशनल इंक्वायरी, वॉल्यूम। 3 नंबर 1।

  **उद्देश्य** :– स्कूलों में कार्यस्थल संबंधों का अध्ययन महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि स्कूल संगठनात्मक जलवायु की घटना की पहली बार 1960 के दशक में हैल्पिन और क्रॉफ्ट (हैल्पिन 1966) द्वारा पहचान की गई थी।

  **निष्कर्ष** :– गुणात्मक डेटा से पता चला कि प्रशासकों के साथ संबंधों के शिक्षकों के अनुभव संबंधित उप–विषयों के साथ तीन विषयों में संकुलित हैं। एक पहला विषय, 'जलवायु', शिक्षकों के उस सामान्य संदर्भ के अनुभवों से संबंधित है जिसमें उन्होंने काम किया। दूसरा विषय 'कॉलेजियल कम्युनिकेशन' था; प्रशासकों और शिक्षकों के बीच मौखिक बातचीत की प्रक्रियाओं का एक सामान्य और जनरेटिव सेट। एक तीसरा विषय, 'कार्यस्थल सीखने और करियर के विकास की सुविधा', एक विशेष प्रकृति की विशेष घटनाओं के अनुभवों से संबंधित है जो व्यक्तिगत और सामूहिक व्यावसायिक शिक्षा पर केंद्रित है।

- **होडकिन्सन, फिल (2003) :** *''अभ्यास के व्यक्तिगत समुदाय और नीति संदर्भः स्कूल के शिक्षकों की उनके कार्यस्थल में शिक्षा'',* सतत शिक्षा में अध्ययन, खंड 25, अंक 1।

  **उद्देश्य :–** यह पत्र इस तरह के परिप्रेक्ष्य को और विकसित करने की कोशिश करता है, व्यक्तिगत कार्यकर्ता स्वभाव के बीच सीखने, अभ्यास के समुदाय और व्यापक संगठनात्मक और नीतिगत संदर्भों के बीच अंतर्संबंधों पर विशेष ध्यान देता है।

  **निष्कर्ष :–** काम पर सीखने के बारे में वर्तमान सिद्धांत मुख्य रूप से सहभागी दृष्टिकोण से आता है, जो सीखने के सामाजिक और सांप्रदायिक आयामों पर जोर देता है। यह एक माध्यमिक विद्यालय की शिक्षिका, और उस कला विभाग के अध्ययन की केस स्टडी परीक्षा के माध्यम से किया जाता है, जिसका वह हिस्सा थी।

- **ची–मिंग (एंजेला) ली (2004) :** *''ताइवान के स्कूलों में नैतिक माहौल के छात्र और शिक्षक की धारणा।''*

  **उद्देश्य :–** इस मात्रात्मक अध्ययन का उद्देश्य ताइवान के प्राथमिक और जूनियर हाई स्कूलों में स्कूल नैतिक वातावरण के छात्र और शिक्षक की धारणा का पता लगाना था।

  **निष्कर्ष :–** छात्रों और शिक्षकों दोनों के एससीसीपी स्कोर माध्यिका से ऊपर थे। छात्रों और शिक्षकों ने अपने स्कूलों के प्रति सकारात्मक दृ ष्टिकोण प्रदर्शित किया। स्कूल नैतिक वातावरण के छात्र और शिक्षक दोनों की धारणा को प्रभावित करने वाले कारक उनके शैक्षिक स्तर, स्कूल जिले और स्कूल का आकार थे।

- **श्रीमती अनुराधा (2005),** *''छात्राध्यापकों और शिक्षकों की विद्यालय वातावरण एवं पर्यावरणीय शिक्षा का बोध के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन'',* पंजाब विश्वविद्यालय, चंढ़ीगढ़।

  **उद्देश्य :–** शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया है कि छात्र अध्यापकों तथा शिक्षकों की विद्यालय वातावरण तथा पर्यावरण जागरूक के प्रति अभिवृत्ति कैसी है।

  **निष्कर्ष :–** शिक्षक विद्यालय वातावरण के प्रति छात्राध्यापकों से ज्यादा सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं। कला संकाय एवं भाषा संकाय के छात्राध्यापकों की तुलना में विज्ञान संकाय के छात्राध्यापकों में पर्यावरण के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गयी।

- **बेसेल, ए. और ड्राट. ओ. (2006) :** *''विद्यालय वातावरण दक्षता के अर्थ तथा विशेष सहायता वाले छात्रों के अलगाव के प्रति इजराइल के शिक्षको की अभिवृत्ति का अध्ययन'',* एजुकेशन सिटीजनशिप एण्ड सोसल जस्टिस, Vol.1(2) pp.151-174

  **उद्देश्य :–** विद्यालय के संगठनात्मक और शैक्षिक वातावरण के प्रभाव और एक शिक्षक की दक्षता का अर्थ, सामान्य शिक्षा में विशेष सहायता वाले छात्रों के प्रति अभिवृत्ति के प्रभाव का परीक्षण करना इस शोध का प्रमुख उद्‌देश्य था।

  **निष्कर्ष :–** विद्यालयीन वातावरण और शिक्षक की दक्षता सम्बन्धी समझ के साथ ही साथ विशेष शिक्षा प्रतिक्षण में सहयोगिता का अलग रहे अर्थात् विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के प्रति शिक्षकीय अभिवृत्ति के साथ एक धनात्मक सम्बन्ध है। व्यक्तिगत क्षमता, अभिवृत्ति को प्रभावति

करने वाला एक मात्र प्रमुख कारक था। विद्यालयीन वातावरण में 6 कारक – सहयोग, नेतृत्व, शिक्षकों की स्वतंत्रता, शिक्षण व्यवसाय का गौरव नवीनतम शिक्षकों की सहायता और कार्यभार सम्मलित होते है।

- **अल आयद, आई.एच. (2007) :** *''किंग सऊद विश्वविद्यालय, रियाद के कॉलेज ऑफ मेडिसिन में शैक्षिक वातावरण का आकलन'',* EMHJ – पूर्वी भूमध्य स्वास्थ्य जर्नल, 14 (4)।

  **उद्देश्य :–** किंग सऊद विश्वविद्यालय, रियाद में कॉलेज ऑफ मेडिसिन में शैक्षिक वातावरण का आकलन करने के लिए डंडी रेडी एजुकेशन एनवायरनमेंट मेजर (DREEM) इन्वेंट्री का एक अरबी अनुवाद (हमारे कॉलेज में संशोधित) का उपयोग किया।

  **निष्कर्षः–** प्रथम वर्ष के छात्रों के अंक अन्य की तुलना में काफी अधिक थे। प्री–क्लिनिकल छात्रों के स्कोर भी क्लिनिकल वर्षों में छात्रों की तुलना में काफी अधिक थे। लिंग सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण चर नहीं था।

- **फ्रान्सिस, डॉ. ए. ऐडेसोफी, सेगुन डॉ. एम. ओलेटूनवूलन (2008) :** *''माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं शिक्षक की रसायन विज्ञान की उपलब्धि में विद्यालय वातावरण के कारको का निर्धारण'',* जर्नल ऑफ इन्टरनेशनल सोसल रिसर्च, नाइजोरिया, Vol.12

  **उद्देश्य :–** शोध में देखा गया है कि माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं शिक्षक की रसायन विज्ञान में उपलब्धि पर विद्यालय वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है।

**निष्कर्ष** :– छात्रों की तथा शिक्षकों की रसायन विज्ञान में उपलब्धि पर स्कूल के वातावरण का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि स्कूल का वातावरण अच्छा है यदि स्कूल की प्रयोगशाला में शिक्षकों द्वारा प्रयोग कराये जाते हैं तो रसायन विज्ञान में छात्रों की उपलब्धि उच्च होगी।

- **सिनामोन (2009)** : *''इज़राइल में यहूदी और अरब महिला शिक्षकों के बीच सामाजिक समर्थन और काम का माहौल–पारिवारिक संघर्ष।''*

**उद्देश्य** :– एक सांस्कृतिक और प्रासंगिक ढांचे में कैरियर के विकास की संकल्पना करते हुए, इस अध्ययन ने मध्य इज़राइल से 101 यहूदी और 99 अरब महिला शिक्षकों (23–64 वर्ष की आयु) के बीच भूमिका के प्रमुखता और कार्य वातावरण–पारिवारिक संघर्ष (डब्ल्यूएफसी) में लिंग अंतर की जांच की। महिलाओं के संघर्ष में सामाजिक समर्थन के योगदान की भी जांच की गई।

**निष्कर्ष** :– परिणामों ने विभिन्न अंतरों पर प्रकाश डाला। उम्मीदों के विपरीत, यहूदी शिक्षकों ने अरब शिक्षकों की तुलना में उच्च जीवनसाथी और माता–पिता के मूल्यों का प्रदर्शन किया, जिन्होंने उच्च कार्य मूल्यों और कार्य वातावरण प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया। जैसा कि अपेक्षित था, यहूदी महिलाओं ने अपने अरब सहयोगियों की तुलना में WFC के उच्च स्तर की सूचना दी। यहूदी संस्कृति में समर्थन प्रणालियाँ निम्न WFC से संबंधित थीं लेकिन अरब संस्कृति में नहीं। सैद्धांतिक और व्यावहारिक निहितार्थ काम के माहौल के संस्कृति–संवेदनशील मॉडल की आवश्यकता पर जोर देते हैं– पारिवारिक संबंध और कैरियर परामर्श हस्तक्षेप के लिए।

- **बेबी जॉन, टी. (2010) :** *''महात्मा गांधी विश्वविद्यालय से संबद्ध बीएड कॉलेजों में मानवाधिकार का माहौल'',* शिक्षा विभाग, अलगप्पा विश्वविद्यालय, तमिलनाडु।

  **उद्देश्य :–** बी.एड कॉलेजों में मानव अधिकार के माहौल का अध्ययन करने के लिएः शिक्षण सिद्धांत कक्षाओं में, मॉडल शिक्षण अभ्यास वर्ग में, प्रशिक्षुओं की पाठ योजनाओं की जाँच में, अभ्यास पाठ का मूल्यांकन करने में, आंतरिक अंक देने में, अनुसूचित जाति के प्रशिक्षुओं के साथ व्यवहार करने में , एसटी और बीसी, फीस जमा करने में, ढांचागत सुविधाएं प्रदान करने में।

  **निष्कर्ष :–** बी.एड. की सैद्धान्तिक कक्षाओं में अनुकूल मानव अधिकार वातावरण मौजूद है। कॉलेज, प्रशिक्षुओं की पाठ योजनाओं के सत्यापन में, मॉडल शिक्षण अभ्यास वर्ग में, प्रशिक्षुओं के अभ्यास पाठों के मूल्यांकन में, आंतरिक अंक प्रदान करने में, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग के प्रशिक्षुओं के साथ व्यवहार करने में, शुल्क लगाने (संग्रह) करने में और इन्फ्रा प्रदान करने में –संरचनात्मक सुविधाएं। मानवाधिकार पर्यावरण (एचआरई) के आयामों के संबंध में सरकारी सहायता प्राप्त और स्व–वित्तपोषित कॉलेजों के बीच महत्वपूर्ण अंतर मौजूद है। सरकारी सहायता प्राप्त कॉलेजों में स्व–वित्तपोषित कॉलेजों की तुलना में बेहतर मानवाधिकार वातावरण है।

- **पात्रा, कुन्ताला, मेक, अरूंधती (2011) :** *"वोनगोइगोन जिले के स्कूली छात्रों की विद्यालयीन वातावरण तथा गणित उपलब्धि के बीच सम्बंध।"*

  **उद्देश्य :–** विद्यालयीन वातावरण के चर जैसे विद्यालय प्रबंध, विद्यालय एरिया, भौतिक सुविधायें, शिक्षक–छात्र अनुपात, शिक्षण विधि, डेली होमवर्क, शिक्षक प्रशिक्षण आदि छात्रों की गणित उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना।

**निष्कर्ष :–** जिन विद्यालयों का स्कूल प्रबंध अच्छा है। जहाँ नयी शिक्षण विधियों द्वारा पढ़ाया जाता है। डेली होमवर्क दिया जाता है। जहाँ अच्छी भौतिक सुविधायें है। वहाँ के छात्रों की गणित उपलब्धि उच्च है। अतः विद्यालयीन वातावरण के चर तथा गणित उपलब्धि के बीत्र सकारात्मक सम्बंध है।

- **श्रीवास्तव, निशा एवं श्रीवास्तव, डॉ. मुकेश कुमार (2012)** : *''शिक्षक के मानसिक स्तर पर महाविद्यालय के वातावरण के साथ–साथ सेवा–शर्तें, वेतन, अध्यापन स्तर, पाठ्यक्रम, कार्यावधि, छात्र–अध्यापक सम्बन्ध तथा प्राचार्य–प्रवक्ता सम्बन्ध के प्रभाव का अध्ययन''*।

  **उद्देश्य :–** अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत प्रवक्ताओं के मानसिक तनाव एवं कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

  **निष्कर्ष :–** अनुदानित प्रवक्ताओं में गैर अनुदानित की अपेक्षा मानसिक तनाव निम्न स्तर का है। जिसका प्रमुख कारण अनुदानित प्रवक्ताओं का व्यावसायिक और सामाजिक स्तर प्रशिक्षण तथा अनुभव क्षैतिज और समानान्तर गतिशीलता गैर अनुदानित से उच्च स्तर का है इसलिये अनुदानित का मानसिक तनाव निम्न तथा गैर अनुदानित का उच्च है। अनुदानित एवं गैर अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत प्रवक्ताओं के मानसिक तनाव में सार्थक अन्तर होता है।

- **कुमार, अशोक; सैनी, मोनिका (2013)** में *"माध्यमिक विद्यालयों के अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन की आदतों, घर के वातावरण तथा विद्यालय वातावरण के सम्बन्ध में अध्ययन"* किया।

**उद्देश्य** – अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन की आदतों, घर के वातावरण तथा विद्यालय वातावरण के सम्बन्ध का अध्ययन करना था।

**निष्कर्ष** – अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन की आदतों, घर के वातावरण तथा विद्यालय वातावरण के बीच सहसम्बन्ध सार्थक पाया गया।

- **नूर मुबशीर, सी.ए. (2014)** : *''मैसूर शहर में स्नातक कॉलेजों के संदर्भ में महिला शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव और पारिवारिक वातावरण पर एक अध्ययन'',* सामाजिक कार्य विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय।

**उद्देश्य** :– महिला महाविद्यालय की अध्यापिकाओं के व्यावसायिक तनाव और पारिवारिक वातावरण का आकलन करना है।

**निष्कर्ष** :– एफईएस के केवल दो घटक शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का सबसे अच्छा अनुमान लगाते हैं, वे हैं– संघर्ष और उपलब्धि उन्मुखीकरण। अंडर–ग्रेजुएट महिला शिक्षकों ने व्यावसायिक तनाव सूचकांक के सभी उप–स्तरों में मध्यम स्तर के व्यावसायिक तनाव का अनुभव किया। अविवाहित महिला शिक्षकों के साथ व्यावसायिक तनाव पर वैवाहिक स्थिति का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जिसमें भूमिका अधिभार, भूमिका अस्पष्टता, भूमिका संघर्ष, अनुचित समूह और राजनीतिक दबाव खराब सहकर्मी संबंध, निम्न स्थिति और लाभहीनता में उच्च स्तर का तनाव होता है। अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता, सक्रिय मनोरंजन और नियंत्रण जैसे कुछ उप–स्तरों में महिला शिक्षकों का पारिवारिक वातावरण स्वस्थ पारिवारिक वातावरण का अनुभव करने वाला पाया गया। सामंजस्य, अभिव्यक्ति, स्वतंत्रता, नैतिक धार्मिक जोर, संगठन, स्वतंत्रता में संस्था का महत्वपूर्ण प्रभाव था।

- **भोजक, श्रीमती दुर्गा (2015) :** *''सरदारशहर एवं नवलगढ़ के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की शैक्षिक क्रियाओं और पाठ्यसहगामी क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन''* उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान मान्य विश्वविद्यालय, सरदारशहर।

  **उद्देश्य :–** सरदारशहर एवं नवलगढ़ के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक एवं पाठ्यसहगामी क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना। सरदारशहर एवं नवलगढ़ के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं पाठ्यसहगामी क्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

  **निष्कर्ष :–** सरदार शहर एवं नवलगढ़ के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों की शैक्षिक क्रियाओं में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः इसमें सरदारशहर के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शैक्षिक क्रियाओं का स्तर उच्च होता है। इसी तरह पाठ्यसहगामी क्रियाओं में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः इसमें नवलगढ़ के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में पाठ्यसहगामी क्रियाओं का स्तर उच्च होता है। इसी साथ प्रशिक्षणार्थियों की शैक्षिक क्रियाओं को देखें तो इनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जबकि प्रशिक्षणार्थियों की पाठ्यसहगामी क्रियाओं में सार्थक अन्तर पाया गया।

- **त्रिपाठी, संजीत कुमार (2016) :** *''विभिन बोर्डो से संबंध माध्यमिक विद्यालय के विद्यालय वातावरण का विद्यार्थियों की अध्ययन की आदतों एवम् शैक्षिक तनाव के संदर्भ में अध्ययन'',* छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर।

**उद्देश्य :–** यू.पी., आई.सी.एस.ई. एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड से सम्बन्धित माध्यमिक विद्यालयों के विद्यालय वातावरण के विभिन्न क्षेत्रों (रचनात्मक प्रेरणादायक वातावरण, उत्साहवर्धक वातावरण, स्वीकृतपूर्ण वातावरण, स्वच्छतापूर्वक वातावरण, अस्वीकृत वातावरण तथा नियंत्रित वातावरण) का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**निष्कर्ष :–** यू.पी. बोर्ड, आई.सी.एस.ई. बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों अधिकांश विद्यार्थियों का रचनात्मक प्रेरणादायक वातावरण उच्च स्तर का पाया गया। सबसे उच्च यू.पी. बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों का रचनात्मक प्रेरणादायक वातावरण पाया गया। यू.पी. बोर्ड, आई.सी.एस.ई. बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों के अधिकांश विद्यार्थियों का बौद्धिक उत्साहवर्धक वातावरण मध्यम स्तर पाया गया। यू.पी. बोर्ड, आई.सी.एस.ई. बोर्ड एवं सी.बी.एस.ई. बोर्ड के माध्यमिक विद्यालयों के अधिकांश विद्यार्थियों के विद्यालय का स्वीकृतिपूर्ण, स्वच्छन्दतापूर्ण एवं अस्वीकृतिपूर्ण वातावरण उच्च स्तर का पाया गया।

- **त्रिपाठी, प्रिया (2017) :** *''बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता पर पारिवारिक एवं महाविद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन'',* पेसिफिक युनिवर्सिटी, उदयपुर।

**उद्देश्य :–** बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की महाविद्यालय वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना। बहिर्मुखी एवं अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता पर महाविद्यालय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

**निष्कर्ष :–** अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अपेक्षा बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले प्रशिक्षणार्थियों के लिए महाविद्यालय का वातावरण शारीरिक विकास के दृष्टिकोण से अधिक अच्छा पाया गया, महाविद्यालय में व्यक्तित्व विकास के दृष्टिकोण से प्रशासनिक व्यवस्थाएँ, वित्तीय व्यवस्थाएँ, शिक्षण कार्य हेतु प्रयोग में ली गई शैक्षिक विधियाँ, महाविद्यालय में संचालित व्यावसायिक पाठ्यक्रम रोजगार के अवसर अधिक प्रदान करते हैं, महाविद्यालय का वातावरण विविध व्यक्तित्व विकास के दृष्टिकोण से अधिक अच्छा पाया गया। बहिर्मुखी व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता एवं महाविद्यालय वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। अन्तर्मुखी व्यक्तित्व वाले बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता एवं महाविद्यालय वातावरण के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।

- **कानेसन, अब्दुल गनी (2018) :** *''मलेशिया के शैक्षिक संगठन में कार्यस्थल संस्कृति के प्रति शिक्षकों का कार्य मूल्य'',* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज वी (2 (5)): 36।

**उद्देश्य :–** इस अध्ययन का उद्देश्य शिक्षकों की संस्कृति पर शिक्षक के कार्य मूल्य के प्रभाव की पहचान करना है।

**निष्कर्ष :–** अध्ययन के निष्कर्षों में पाया गया है कि शिक्षकों के कार्य मूल्य और स्कूल संस्कृति के चर मध्यम स्तर पर हैं। इसके अलावा, निष्कर्ष भी शिक्षकों के काम के मूल्य को दिखाते हैं, विशेष रूप से जुड़ाव, गर्व, सुधार और गतिविधि के आयाम स्कूल संस्कृति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। इसलिए, इस अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि शिक्षकों को बेहतर व्यक्तित्व को बढ़ावा देने और अपने काम के माहौल में मूल्य जोड़ने के लिए मौजूदा मूल्यों को सीखने, सुधारने और बदलने की जरूरत है।

- **हरिनी (2019) :** *''डेमाक रीजेंसी के आईपीएस शिक्षकों के प्रदर्शन पर शिक्षकों, कार्य पर्यावरण और कार्य संतुष्टि का प्रभाव'',* बहुसांस्कृतिक और बहुधार्मिक समझ का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल 6(2):798

  **उद्देश्य :–** इस अध्ययन का उद्देश्य यह पता लगाना है कि डेमाक स्टेट मिडिल स्कूल में एक साथ सीखने की प्रक्रिया में सामाजिक अध्ययन शिक्षकों के प्रदर्शन पर शिक्षक की क्षमता, काम के माहौल और नौकरी से संतुष्टि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है या नहीं।

  **निष्कर्ष :–** इस अध्ययन के परिणाम प्रधानाचार्यों के लिए उनके नेतृत्व वाले शैक्षणिक संस्थानों में सीखने के प्रबंधन में एक मार्गदर्शक के रूप में उपयोगी होने की उम्मीद है।

- **शर्मिला (2020) :** *''एकल एवं सहशिक्षा विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन'',* Int. J. Ad. Social Sciences. 2020; 8(4):135–138.

  **उद्देश्य :–** एकल एवं सहशिक्षा विद्यालयों के शालेय वातावरण का विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर से सम्बन्ध की तुलना करना।

  **निष्कर्ष :–** एकल एवं सहशिक्षा विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण एवं आकांक्षा स्तर के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध है, अर्थात् एकल एवं सहशिक्षा विद्यालयों के विद्यार्थियों के शालेय वातावरण एवं आकांक्षा स्तर के मध्य में महत्वपूर्ण सम्बन्ध व्याप्त है।

- **सोवानी, धनश्री अतुल (2021) :** *''बौद्धिक रूप से औसत कॉलेज के छात्रों के पारिवारिक वातावरण और कक्षा के वातावरण के संबंध में मनोवैज्ञानिक कल्याण का अध्ययन।''* ज्ञान प्रबोधिनी मनोविज्ञान संस्थान, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय।

**उद्देश्य** :– बौद्धिक रूप से औसत कॉलेज के छात्रों से ऊपर के मनोवैज्ञानिक कल्याण का पता लगाने के लिए। परिवार और कक्षा के वातावरण के आयामों और बौद्धिक रूप से औसत कॉलेज के छात्रों से ऊपर के मनोवैज्ञानिक कल्याण के बीच संबंध खोजने के लिए। अध्ययन करने के लिए कि औसत कॉलेज के छात्रों से बौद्धिक रूप से ऊपर के परिवार और कक्षा के वातावरण में मनोवैज्ञानिक कल्याण के सहसंबंधों में कोई लिंग–आधारित अंतर हैं या नहीं।

**निष्कर्ष** :– पारिवारिक वातावरण के सभी आयामों (सामंजस्य, अभिव्यक्ति, संघर्ष, स्वीकृति और देखभाल, स्वतंत्रता, सक्रिय मनोरंजक अभिविन्यास, संगठन) नियंत्रण को छोड़कर बौद्धिक रूप से औसत कॉलेज के छात्रों के मनोवैज्ञानिक कल्याण के साथ महत्वपूर्ण नकारात्मक संबंध थे। कक्षा के वातावरण के आयाम अर्थात् कैथेक्टिक सीखने का माहौल, शत्रुतापूर्ण माहौल, प्रोफेसर संबंधी चिंता, शैक्षणिक कठोरता, संबद्धता और संरचना का बौद्धिक रूप से औसत कॉलेज के छात्रों से ऊपर के मनोवैज्ञानिक कल्याण के साथ महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध था। शत्रुतापूर्ण माहौल बौद्धिक रूप से औसत कॉलेज के छात्रों से ऊपर के मनोवैज्ञानिक कल्याण से नकारात्मक रूप से संबंधित था।

- **Ngoc-Ha Hoang (2022)** : *''वियतनाम में अपने शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए प्रधानाध्यापकों द्वारा बनाई गई कार्यस्थल की स्थितियाँ''*, शिक्षा में नेतृत्व का अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, खंड 25, अंक 2।

  **उद्देश्य** :– यह शोध यह पता लगाने के लिए किया गया था कि वियतनाम के एक प्रांत के चार स्कूलों में टीपीडी को बढ़ावा देने के लिए प्रधानाध्यापकों ने कार्यस्थल की किन परिस्थितियों का निर्माण किया था।

**निष्कर्ष** :– TPD पर शोध से पता चलता है कि कार्यस्थल की अनुकूल परिस्थितियाँ शिक्षकों के शिक्षण ज्ञान और अभ्यास को बहुत बढ़ा देती हैं। निष्कर्षों के आधार पर, अध्ययन वियतनामी संदर्भ के भीतर और बाहर टीपीडी के लिए प्रमुख नेतृत्व पर अनुसंधान और अभ्यास दोनों के लिए निहितार्थ प्रस्तुत करता है।

## 2.5.3 कार्यसन्तुष्टि से संबंधित शोध साहित्य :–

- **वर्मा, मिथिलेश (1999)** *''इंडोशिया के विद्यालयो में व्यवसाय को पसन्द करने वाले कारको का अध्ययन''* किया तथा निष्कर्षस्वरूप पाया कि प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक सुरक्षा का अनुभव करते है, उन्हें विद्यार्थियों से एवं अभिभावकों से बहुत कम प्राप्त होता है। इसमें लिंग भेद से अन्तर नगण्य रहा। प्राथमिक सस्थानों में कार्यरत अध्यापकों को कम वेतन तथा सम्मान मिलता है फिर भी वे व्यवसाय को पसन्द करते है क्योंकि इस व्यवसाय में देश और मानवता की सेवा करने के अधिक अवसर प्राप्त होते है। इन्टरमीडिएट के अध्यापकों का कहना था कि वह व्यवसाय दोषों तथा राजनीतिक शिक्षकों से प्रभावित है।

- **जेन्डल, एच.एल. (2001)** *''अमेरिकन चिकित्सालय के निम्न श्रेणी कर्मचारियों की सन्तुष्टि व असन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले पक्षों का अध्ययन''* कर पाया मान्यता प्राप्ति तथा उत्तरदायित्व का सम्बन्ध सन्तुष्टि से है जबकि असन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले पक्ष है नीति प्रशासन मजबूरी भौतिक सुविधाएँ तथा व्यवसाय से सम्बन्ध व्यक्तियों का आपसी सम्बन्ध हैं।

- **सिंह, एच.एल. (2003)** *''अध्यापको के मूल्य, अभिवृत्ति एवं कार्यसन्तुष्टि में सहसंबंध का अध्ययन''* किया तथा यह पाया कि अध्यापकों की उम्र के आधार पर नैतिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं था। जबकि धार्मिक और राजनैतिक मूल्यों में अन्तर पाया गया। अध्यापकों की अभिवृत्तियाँ एवं कार्य सन्तुष्टि में धनात्मक और महत्वपूर्ण संबंध पाया गया।

- **जोशी, हरिनामूल (2004) :** *''गुजरात राज्य के सौराष्ट्र प्रदेश के बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों एवं शिक्षको के व्यवसाय मनोभाव, व्यवसाय अभिरूचि एवं व्यवसाय सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन''* किया परिणाम स्वरूप पाया गया कि B.Ed. प्रशिक्षणार्थियों में व्यवसाय तनाव एवं कार्य सन्तुष्टि के मध्य सार्थक सम्बन्ध नहीं होता है, संयुक्त पारिवारिक स्थित वाले शिक्षको कि तुलना में एकल पारिवारिक स्थिति वाले शिक्षकों में व्यवसाय कार्य सन्तुष्टि ज्यादा थी, पुरूष शिक्षकों की कार्य सन्तुष्टि तथा अभिरूचि में सकारात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

- **वर्मा, एम.एल. (2005)** *''कार्य समायोजन एवं इसका अध्यापक की क्षमता के साथ संबंध का अध्ययन''* कर पाया कि कार्यसन्तुष्टि कार्य करने के अनेक पहलुओं से सम्बन्धित है, 20 से 50 प्रतिशत तक अध्यापक अपने स्वयं के कारणों से असंतुष्ट पाये गये तथा पुरूष तथा महिला शिक्षकों में एवं प्राइवेट तथा राजकीय विद्यालयों के शिक्षकों में प्रतिष्ठा तथ्य से सम्बन्धित असंतोष में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं था।

- **रेड्डी एण्ड रेड्डी (2006)** *''विभिन्न प्रबन्धों के अधीन कार्यरत शिक्षकों का कार्य के प्रति संतोष का अध्ययन''* कर यह कहा जा सकता है कि प्राइवेट प्रबन्धों के अधीन कार्य करने वाले शिक्षक सबसे अधिक सन्तुष्ट थे तथा प्राइवेट स्कूलों तथा जिला परिषद् के स्कूलों में काम करने वाले शिक्षक राजकीय स्कूलों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक संतुष्ट थे।

- **आनन्द, एस.पी. (2007)** : *''कार्य सन्तुष्टि की स्थिरता पर शिक्षण अनुभव व लिंग का प्रभाव को ज्ञात''* कर यह कहा जा सकता है कि महिला शिक्षक पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा कार्य में अधिक सन्तुष्ट पायी गयी, शिक्षकों में कार्य सन्तुष्टि की स्थिरता में शिक्षण अनुभव एवं उम्र का कोई महत्वपूर्ण योगदान नहीं पाया गया तथा कार्य सन्तुष्टि के प्रति स्थायित्व 30 प्रतिशत अध्यापकों में पाया गया।

- **जोनसन, ललिना (2008)** ने *''संवेगात्मक बुद्धिलब्धि, कार्य संतुष्टि व कार्मिक नेतृत्व के मध्य सहसंबंध''* विषय पर शोधकार्य किया तथा परिणाम स्वरूप पाया गया कि कार्मिक नेतृत्व और संवेगात्मक बुद्धिलब्धि के बीच सम्बन्ध को स्थापित नहीं करता है। कार्य संतुष्टि एवं संवेगात्मक बुद्धिलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

- **सेठी, सत्यनारायण (2009)** *''माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और कार्यक्षमता में सहसंबंध''* विषय पर शोध से यह पाया कि सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि के स्तर से काफी अधिक प्राप्त हुआ था, निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्यक्षमता सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक होती है तथा शिक्षक की कार्य सन्तुष्टि का उनकी कार्यक्षमता के साथ सार्थक एवं धनात्मक सह सम्बन्ध पाया गया।

- **सूर्यनारायण, एन.वी.एस. हिमाबिंदु गोटली (2010)** ने *''प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों में शिक्षण सामर्थ्य और कार्य संतुष्टि का अध्ययन''* करने से यह मिला कि प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के शिक्षण सामर्थ्य में सार्थक अन्तर होता है तथा प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के कार्यसन्तुष्टि में सार्थक अन्तर होता है।

- **सेवादार, एम. (2011):** *''विशेष शिक्षा का प्रशासक उसकी कार्य संतुष्टि व कार्य भार का अध्ययन किया इस अध्ययन''* के निष्कर्षस्वरूप यह कहा जा सकता है कि विशेष शिक्षा के प्रशासक की भूमिका एक विशेष स्तर पर होती है। शैक्षणिक प्रशासन के क्षेत्र में उसकी विशेष पहचान व शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उत्तर होता है। साथ ही यह कहा जा सकता है कि प्रशासन का कार्यभार उसकी कार्य संतुष्टि को मुख्य रूप से प्रभावित करता है।

- **लालरोशन एवं शेरगिल सरबजीत (2012)** *''डिग्री कॉलेज की महिला एवं पुरूष अध्यापकों में कार्य संतुष्टि और शिक्षा के प्रति नज़रियें का तुलनात्मक अध्ययन''* किया इसके परिणाम ये बताते है कि डिग्री कॉलेज की महिला एवं पुरूष अध्यापक अपने कार्य से संतुष्ट है और महिला एवं पुरूष अध्यापकों का शिक्षा के प्रति नजरिया एक समान नहीं होता है।

- **कोदली, शीतल (2014)** *''राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड व केन्द्रिय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसतुष्टि के तुलनात्मक अध्ययन''* से शोधार्थी ने यह पाया कि आर.बी.एस.ई. व सी.बी.एस.ई. के समग्र महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि क्षेत्र मूलभूत व्यवसाय, वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्तें, भौतिक सुविधाएँ,संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ ,अधिकारों के साथ, सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि, विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क ,सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध के प्रति महिला शिक्षकों से अधिक पाई गई।

- **मीणा, रीना (2015)** *''राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि एवं आत्म प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन''* किया व यह पाया कि उच्च स्तर के आत्म प्रत्यय वाले पुरूष शिक्षकों

की संख्या महिला अध्यापको की अपेक्षा अधिक पायी गई है, औसत से ऊपर स्तर के आत्म प्रत्यय वाले पुरूष शिक्षकों की संख्या महिला अध्यापको की अपेक्षा अधिक पायी गई है, औसत स्तर के आत्म प्रत्यय वाले पुरूष शिक्षकों की संख्या महिला अध्यापको की अपेक्षा अधिक पायी गई है, औसत से निम्न स्तर के आत्म प्रत्यय वाले पुरूष शिक्षकों की संख्या महिला अध्यापको की अपेक्षा कम पायी गई है, निम्नतम स्तर के आत्म प्रत्यय वाले पुरूष शिक्षकों की संख्या महिला अध्यापको की अपेक्षा कम पायी गई है तथा राजकीय व निजी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि एवं आत्म प्रत्यय में सार्थक अन्तर होता है।

- **त्रिवेदी, शीतल (2016)** *''उच्च स्वसामर्थ्य वाले अनुसूचित जाति एंव अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन''* किया व पाया कि उच्च स्वसामर्थ्य वाले अनुसूचित जाति के शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि क्षेत्र मूलभूत व्यवसाय, वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्तें, भौतिक सुविधाएँ,संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, अधिकारों के साथ, सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि, विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क, सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध उच्च स्वसामर्थ्य वाले अनुसूचित जनजाति के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

- **चौबीसा, सपना (2017)** *''उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एवं कक्षागत व्यवहार का अध्ययन''* किया। निष्कर्षतः उच्च प्राथमिक विद्यालय के महिला व पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि एक समान पायी गई तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय के महिला व पुरूष शिक्षकों के कक्षागत व्यवहार में सार्थक अन्तर पाया गया।

- **शर्मा, पूजा (2018)** *''निजी एवं सरकारी विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि एवं शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन''* किया गया जिसके परिणामस्वरूप यह मिला कि अत्यधिक उच्च स्तर की प्रभावशीलता, उच्च स्तर की प्रभावशीलता, औसत से ऊपर की प्रभावशीलता, औसत स्तर की प्रभावशीलता, औसत से कम स्तर की प्रभावशीलता, निम्न स्तर से कम की प्रभावशीलता तथा सबसे कम की प्रभावशीलता में सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की संख्या निजी विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा कम पाई गई तथा कार्यसन्तुष्टि के उच्चतम स्तर, उच्च स्तर, औसत स्तर, असन्तुष्ट स्तर, अत्यधिक।

- **चौबीसा, पूनम (2019)** *''जनजाति शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि एवं शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन''* किया जिसके परिणाम स्वरूप पाया गया कि जनजाति महिला शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय, कक्षा–कक्ष शिक्षण, छात्र केन्द्रित अभ्यास (व्यवहार), शिक्षण प्रक्रिया, शिष्यों के प्रति व्यवहार, शिक्षकों के प्रति व्यवहार, कक्षा–कक्ष शिक्षण के प्रति शिक्षण अभिवृत्ति जनजाति पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा अधिक सकारात्मक पाई गई। जनजाति महिला व पुरूष शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## 2.6 उपसंहार :–

प्रस्तुत अध्याय में शोधार्थी ने अपनी समस्या से सम्बन्धित हुए शोध कार्यों का पुनरावलोकन कर के यह पाया कि से सम्बन्धित कोई शोध कार्य नहीं हुए है। अगले अध्याय में शोधार्थी द्वारा शोध कार्य के लिये प्रयुक्त विधि, न्यादर्श एवं उपकरण का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

# तृतीय अध्याय

## शोध का विधिशास्त्र

# तृतीय अध्याय

# शोध का विधिशास्त्र

## अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 3.1 | प्रस्तावना | 47 |
| 3.2 | अनुसंधान में प्रयुक्त विधि | 47-50 |
| 3.3 | उपकरण | 50-77 |
| 3.3.1 | शोधार्थी द्वारा निर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी का विवरण | 52-62 |
| 3.3.2 | कार्यस्थल वातावरण प्रश्नावली निर्माण के सोपान | 63-74 |
| 3.3.3 | कार्यसन्तुष्टि मापनी का विवरण | 74-77 |
| 3.4 | सांख्यिकी प्रविधियाँ | 78-80 |
| 3.5 | उपसंहार | 80 |

# तृतीय अध्याय

# शोध का विधिशास्त्र

## 3.1 प्रस्तावना :–

विधिशास्त्र ही शोध का आधार है इसके बिना दत्तों का संकलन, विश्लेषण एवं निष्कर्ष विश्वसनीय एवं वैध नहीं हो सकते। शोध कार्य के सभी उद्देश्यों की प्राप्ति तभी संभव है जबकि न्यादर्श का चयन, शोध विधि उपकरण निर्माण तथा दत्त संकलन सही तरीके से किया जाये। यही कारण है कि प्रस्तुत अध्याय में शोध में प्रयुक्त विधि, उपकरण, सांख्यिकीय प्रविधि एवं न्यादर्श का विस्तार से प्रस्तुतीकरण दिया गया।

प्रस्तुत शोधकार्य के लिये सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया क्योंकि प्रस्तुत अध्ययन का संबंध वर्तमान से है, इस विधि में अपेक्षाकृत अधिक संख्या में दत्त संकलन किये जा सकते हैं, यह अध्ययन जनजाति विद्यार्थियों के समूह से सम्बन्धित है, संकलित दत्तों का निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए गुणात्मक व संख्यात्मक दोनो ही तरीके से विश्लेषण आवश्यक है, यह विधि सम्पूर्ण जनसंख्या पर लागू की जा सकती है एवं इस विधि से प्राप्त निष्कर्ष विश्वसनीय व वैध है।

## 3.2 अनुसंधान में प्रयुक्त विधि :–

**शर्मा (1995)** के अनुसार, *''उपागम अनुसंधान कार्य करने की एक शैली है जो समस्या की प्रकृति के अनुरूप सुनिश्चित की जाती है।''*[1]

किसी भी अध्ययन को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए, यह आवश्यक है कि चुनी गई विधि समस्या के लिए उपयुक्त हो, चुनी गई विधि उपयुक्त और पूरी तरह से योजनाबद्ध हो। शैक्षिक अनुसंधान कार्य के लिए उपयोग की जाने वाली विभिन्न विधियाँ चित्र में दिखाई गई हैं :–

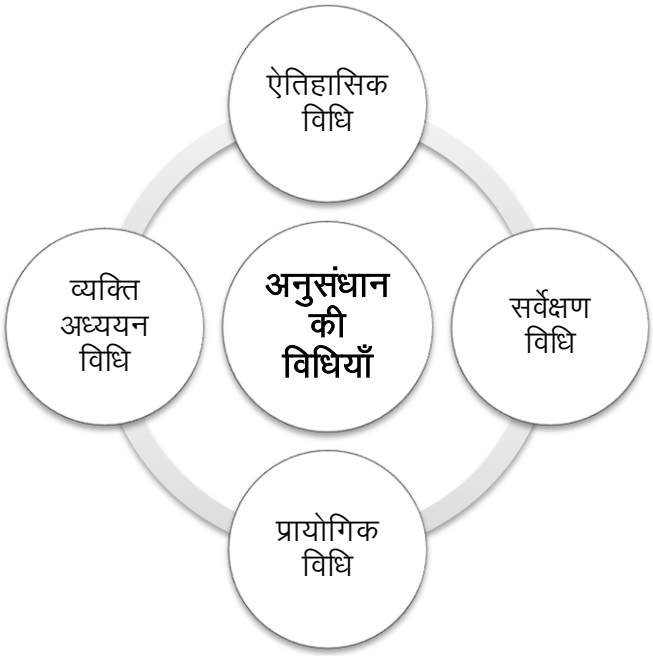


### 3.2.1 सर्वेक्षण विधि के चरण :–

1. **उद्देश्यों का निर्धारण :** शोध पद्धति पूर्व निर्धारित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर अपनाई जाती है। शोध के उद्देश्यों को निर्धारित करने से शोध की सीमाएँ भी निर्धारित होती हैं।

2. **उपकरणों और तकनीकों का चयन :–** सर्वेक्षण विधि के उद्देश्यों को निर्धारित करने के बाद, यह तय करना आवश्यक है कि डेटा कैसे एकत्र किया जाएगा। प्रस्तुत शोध में स्व–विकसित उपकरणों का उपयोग किया गया है, जिसमें एक अवलोकन प्रपत्र, एक साक्षात्कार अनुसूची और एक राय सर्वेक्षण शामिल है। जीव विज्ञान शिक्षण की वस्तुनिष्ठ स्थिति देखें। प्राप्त आँकड़ों का उपयोग एवं विश्लेषण किया गया।

3. **उपकरणों का प्रारंभिक परीक्षण :–** उपकरणों के उत्पादन के बाद उनकी वैधता, विश्वसनीयता और उपयोगिता की जांच के लिए पूर्व–परीक्षण आवश्यक है। उपकरण के उत्पादन के दौरान इसे अत्यधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक बनाने का प्रयास किया जाता है।

4. **नमूना चयन** :– नमूना चुनते समय, आपको पूरी जनसंख्या का अध्ययन करने की आवश्यकता नहीं है। प्रस्तुत अध्ययन में, समय सीमा और अध्ययन के विषय के आधार पर नमूना आकार 500 के भीतर रखा गया था।

5. **डेटा संग्रह और विश्लेषण :–** शोधकर्ता ने छात्रों को जीव विज्ञान पढ़ाने से संबंधित डेटा संग्रह गतिविधियाँ पूरी कीं।

उपयोग की जाने वाली विधि का चुनाव हमेशा समस्या की प्रकृति और उसके समाधान के लिए आवश्यक तत्वों के प्रकार पर निर्भर करता है। अनुसंधान की प्रकृति को देखते हुए, एक सर्वेक्षण दृष्टिकोण चुना गया था।

### 3.2.2 प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण दृष्टिकोण चुनने के कारण :–

शोध कार्य में उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शोध की प्रकृति के आधार पर सर्वेक्षण विधि को चुनने के कारण निम्न हैं :–

- प्रस्तुत शोध निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन, कार्यस्थलों के वातावरण एवं कार्यसन्तुष्टि से संबंधित है, जो वर्तमान से संबंधित है।

- इस विधि के माध्यम से समस्या के समाधान हेतु उपयोगी जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- चयनित समस्या के उद्देश्य सटीक और विशिष्ट हैं, इसलिए सर्वेक्षण विधि आवश्यक है।
- इसके लिए नतीजों से तार्किक और तर्कपूर्ण रिपोर्ट जरूरी है।
- शोध से प्राप्त परिणामों को विश्वसनीय एवं वैध बनाने के लिए गुणात्मक एवं मात्रात्मक विश्लेषण आवश्यक है, जो सर्वेक्षण विधि से ही संभव है।
- सर्वेक्षण विधि स्व–प्रशासित मनोवैज्ञानिक प्रश्नावली बनाने में सहायक है।
- इस प्रकार किया गया अध्ययन सटीक होता है और त्रुटि की संभावना नगण्य होती है।
- यह विधि ज्ञान के विकास में योगदान देती है क्योंकि यह किसी व्यक्ति के कार्य की प्रकृति के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।
- यह विधि किसी विषय के पृष्ठभूमि विचारों और डेटा को प्रस्तुत करने में मदद करती है।

## 3.3 उपकरण :–

किसी भी शोध में डेटा संग्रह सबसे महत्वपूर्ण और साध्य कार्य है। अनुसंधान की सफलता डेटा एकत्र करने के लिए उपयोग किए जाने वाले उपकरणों पर निर्भर करती है। प्रत्येक प्रकार के शोध कार्य के लिए डेटा एकत्र

करने के लिए कुछ निश्चित साधनों की आवश्यकता होती है। इन साधनों को उपकरण कहा जाता है। शैक्षिक शोध कार्यों में सामान्यतया दो प्रकार के उपकरणों का प्रयोग किया जाता है जिसमें मानकीकृत व स्वनिर्मित उपकरण है। प्रयोग में लिये गये उपकरणों का रेखाचित्र नीचे प्रदर्शित हैः–

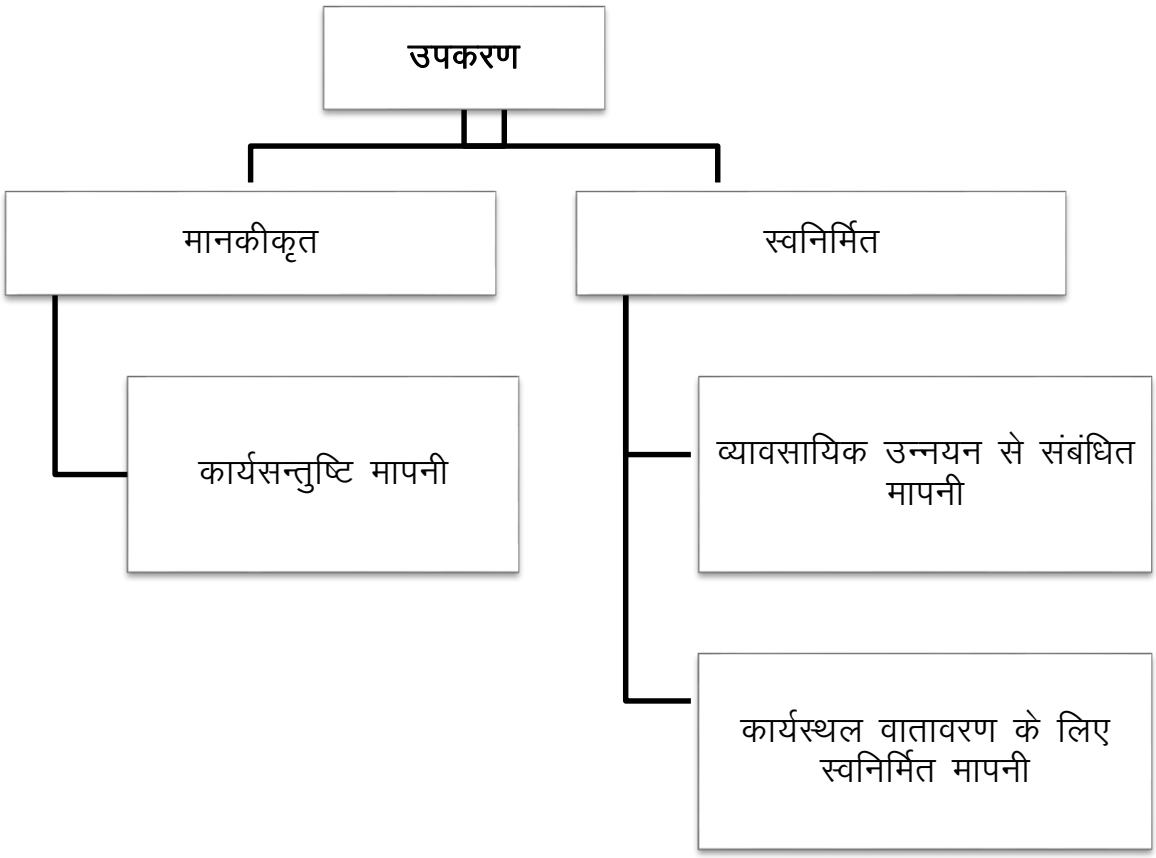


- व्यावसायिक उन्नयन के लिए स्वनिर्मित मापनी।
- कार्यस्थल वातावरण के लिए स्वनिर्मित मापनी।
- कार्यसन्तुष्टि के लिए मानकीकृत उपकरण।

### 3.3.1 शोधार्थी द्वारा निर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी का विवरण :–

**I. योजना :–**

**व्यावसायिक उन्नयन** प्रश्नावली का निर्माण करने के पूर्व इसकी योजना बनाई गई है। इस सोपान में उक्त प्रश्नावली का स्वरूप, भाषा, प्रश्नों की संख्या, अनुक्रिया प्राप्त करने की युक्ति आदि को निश्चित किया गया।

**II. संबंधित साहित्य का अध्ययन :–**

शोधार्थी ने **व्यावसायिक उन्नयन** प्रश्नावली का निर्माण करने के लिए **व्यावसायिक उन्नयन** से संबंधित पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, इनसाइक्लोपीडिया, रिसर्च जर्नल, रिसर्च पेपर व इंटरनेट से संबंधित साहित्य का अध्ययन किया।

**III. आयामों का निर्धारण :–**

संबंधित संदर्भ साहित्य का अध्ययन करने के बाद शोधार्थी ने कुल 06 क्षेत्रों का निर्धारण किया गया जो इस प्रकार से प्रदर्शित हैः–

| क्र.स. | आयाम का नाम |
|---|---|
| 1. | शैक्षिक योग्यता |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता |
| 3. | कार्य शैली |

| | |
|---|---|
| 4. | नवाचार |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता |
| 6. | पारिवारिक |

## IV. आयामों का चयन :–

### प्रश्नावली के लिए आयाम

| क्र. सं. | आयामों के नाम | विशेषज्ञों की राय | | | | | | | | | | % | चयनित या अचयनित |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | | |
| 1. | शैक्षिक योग्यता | ✓ | ✗ | ✓ | ✗ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 80% | चयनित |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✗ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 90% | चयनित |
| 3. | कार्य शैली | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✗ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 90% | चयनित |
| 4. | नवाचार | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 100% | चयनित |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 100% | चयनित |
| **6.** | **पारिवारिक** | ✓ | ✗ | ✓ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | **20%** | **अचयनित** |

प्रश्नावली में आयाम चयन हेतु **80%** प्रतिशत विशेषज्ञों की राय के आधार पर 6 में से आयाम **पारिवारिक** को हटाते हुए अंतिम रूप से 05 आयाम रखे गये है –

| क्र.सं. | आयाम का नाम |
|---|---|
| 1. | शैक्षिक योग्यता |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता |
| 3. | कार्य शैली |
| 4. | नवाचार |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता |

## V. प्रश्नों का निर्माण :–

आयाम का चयन करने के बाद प्रत्येक क्षेत्र पर प्रश्नों का निर्माण करते हुए कुल 49 प्रश्नों का निर्माण किया गया।

| क्र.स. | आयाम का नाम | प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| 1. | शैक्षिक योग्यता | 11 |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता | 11 |
| 3. | कार्य शैली | 11 |
| 4. | नवाचार | 08 |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता | 08 |
| | **योग** | **49** |

## VI. विशेषज्ञों की राय :–

इन प्रश्नों की भाषा तथा आयाम की दृष्टि से जाँचने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत 20 विषय विशेषज्ञों को दिया गया। जिन प्रश्नों पर 80 प्रतिशत विषय विशेषज्ञों की राय सहमति के रूप में प्राप्त हुई उन प्रश्नों को प्रश्नावली में सम्मिलित कर दिया गया। इस प्रकार प्रश्नावली से 1 प्रश्न हटाते हुए पद विश्लेषण के लिए कुल 48 प्रश्नों का चयन किया गया।

| क्र.स. | आयाम का नाम | प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| 1. | शैक्षिक योग्यता | 11 |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता | 11 |
| 3. | कार्य शैली | 11 |
| 4. | नवाचार | 08 |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता | 07 |
| | **योग** | **48** |

## VII. पद विश्लेषण :–

इस प्रकार 70 प्रश्नों की इस व्यावसायिक **उन्नयन** प्रश्नावली को उपयुक्त वातावरण में 100 महिलाओं पर प्रशासित किया गया। प्रश्नावली में दिये गए निर्देशों के अनुरूप प्रश्नावली भरने को कहा गया, प्रशासन के बाद 100 महिलाओं की इन भरी हुई प्रश्नावलियों को जाँचा गया जिसमें सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रश्न पर निम्न प्रकार से अंकन किया गया–

| विकल्प | अंकन | |
|---|---|---|
| | धनात्मक प्रश्न | ऋणात्मक प्रश्न |
| पूर्ण सहमत | 4 | 0 |
| सहमत | 3 | 1 |
| अनिश्चित | 2 | 2 |
| असहमत | 1 | 3 |
| पूर्ण असहमत | 0 | 4 |

उपकरण का प्रशासन एवं अंकन के बाद 100 महिलाओं द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर प्रत्येक पद का विश्लेषण किया गया। इसके लिए सर्वप्रथम सभी महिलाओं के प्राप्तांकों को घटते क्रम में रखा गया। इसके पश्चात् दोनों ओर से 27 प्रतिशत महिलाओं के प्राप्तांक अर्थात् 30–30 महिलाओं के प्राप्तांकों को विश्लेषण के लिए लिया गया। इन महिलाओं के प्राप्तांकों के समूह को 'उच्च समूह' एवं 'निम्न समूह' के रूप में नामकरण किया गया। इन उच्च एवं निम्न समूह के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों के मध्य परीक्षण के प्रत्येक प्रश्न के लिए 'टी' का मान ज्ञात किया गया।

'टी' मान वह मापन है जो उच्च एवं निम्न समूह में विभेदनशीलता को दिखाता है। साधारणतया df 98 के लिए .05 स्तर के लिए 'टी' मान 1.98 एवं .01 स्तर के लिए 'टी' मान 2.63 से इससे अधिक होने पर उच्च एवं निम्न समूह में सार्थक विभेदन क्षमता होती है।

''टी'' मान ज्ञात करने के लिए निम्नांकित सूत्र का प्रयोग किया गया :–

$$t = \frac{\overline{X}_H - \overline{X}_L}{\sqrt{\frac{\sum(x_H - \bar{x}_H)^2 + \sum(x_L - \bar{x}_L)^2}{n\,(n-1)}}}$$

$\overline{X}_H$ = उच्च समूह का किसी प्रश्न पर प्राप्तांकों का मध्यमान

$\overline{X}_L$ = निम्न समूह का किसी प्रश्न पर प्राप्तांकों का मध्यमान

$$\Sigma(x_H - \bar{x}_H)^2 = \Sigma f x_H^2 - \frac{\Sigma(f x_H)^2}{n}$$

$$\Sigma(x_L - \bar{x}_L)^2 = \Sigma f x_L^2 - \frac{\Sigma(f x_L)^2}{n}$$

N = आवृत्तियों का कुल योग

F = आवृत्ति

## प्रश्नों का टी–मान

| प्रश्न संख्या | टी–मान | चयनित/अचयनित |
|---|---|---|
| **क्षेत्र–1 शैक्षिक योग्यता** | | |
| **1.** | **1.69** | ✘ |
| 2. | 3.15 | ✓ |
| 3. | 5.25 | ✓ |
| 4. | 4.49 | ✓ |
| 5. | 3.07 | ✓ |

| प्रश्न संख्या | टी–मान | चयनित/अचयनित |
|---|---|---|
| 6. | 4.53 | ✓ |
| 7. | 3.65 | ✓ |
| 8. | 3.99 | ✓ |
| 9. | 4.17 | ✓ |
| 10. | 3.35 | ✓ |
| 11. | 4.96 | ✓ |
| क्षेत्र–2 भावनात्मक स्थिरता | | |
| 1. | 4.36 | ✓ |
| 2. | 4.59 | ✓ |
| 3. | 4.27 | ✓ |
| 4. | 5.11 | ✓ |
| 5. | 4.49 | ✓ |
| 6. | 3.52 | ✓ |
| 7. | 4.17 | ✓ |
| 8. | 3.10 | ✓ |
| 9. | 3.81 | ✓ |
| **10.** | **1.41** | ✗ |
| 11. | 3.28 | ✓ |

| प्रश्न संख्या | टी–मान | चयनित/अचयनित |
|---|---|---|
| क्षेत्र–3 कार्यशैली | | |
| 1. | 5.77 | √ |
| 2. | 4.55 | ✓ |
| 3. | 2.98 | ✓ |
| 4. | 3.69 | ✓ |
| 5. | 3.43 | ✓ |
| 6. | 3.87 | ✓ |
| 7. | 5.19 | ✓ |
| 8. | 3.74 | ✓ |
| 9. | 3.49 | ✓ |
| 10. | 4.81 | ✓ |
| **11.** | **1.22** | ✘ |
| क्षेत्र– 4 नवाचार | | |
| 1. | 5.78 | ✓ |
| 2. | 4.89 | ✓ |
| 3. | 2.91 | ✓ |
| 4. | 3.12 | ✓ |

| प्रश्न संख्या | टी–मान | चयनित/अचयनित |
|---|---|---|
| 5. | 5.03 | ✓ |
| 6. | 4.64 | ✓ |
| 7. | 5.18 | ✓ |
| **8.** | **1.16** | **✗** |
| **क्षेत्र–5 अभिव्यक्ति क्षमता** | | |
| 1. | 4.65 | ✓ |
| 2. | 2.90 | ✓ |
| 3. | 3.77 | ✓ |
| 4. | 4.92 | ✓ |
| 5. | 3.64 | ✓ |
| 6. | 5.55 | ✓ |
| 7. | 6.81 | ✓ |

व्यावसायिक उन्नयन प्रश्नावली के प्रश्नों के चयन हेतु 'टी' का मान 1.98 से अधिक मान वाले सभी प्रश्नों का चयन किया गया। इस प्रकार अंतिम रूप से 04 प्रश्नों को हटाते हुए कुल 44 प्रश्नों को रखा गया। अंतिम प्रारूप में 44 प्रश्नों की आयामवार स्थिति अधोलिखित सारणी में हैः–

| क्र.स. | आयाम का नाम | प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| 1. | शैक्षिक योग्यता | 10 |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता | 10 |
| 3. | कार्य शैली | 10 |
| 4. | नवाचार | 07 |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता | 07 |
| | **योग** | **44** |

## VIII. व्यावसायिक उन्नयन प्रश्नावली की विश्वसनीयता :–

शोधार्थी ने व्यावसायिक उन्नयन प्रश्नावली की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए पद–विश्लेषण प्रक्रिया के बाद प्राप्त 44 प्रश्नों को 100 महिलाओं पर प्रशासित किया गया तथा प्राप्त प्राप्तांको को इन महिलाओं के सम एवं विषम क्रमांक वाले प्रश्नों के उत्तरों से प्राप्तांक प्राप्त किए गए। तत्पश्चात् सूत्र के द्वारा उपकरण के सम तथा विषम प्रश्नों का सह–संबंध गुणांक $\Upsilon$=0.88 प्राप्त हुआ। प्रश्नावली की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्रों का प्रयोग किया गयाः–

$$\text{विश्वसनीयता } (R) = \frac{2r}{r + 1}$$

जहाँ पर, $\Upsilon$ उपकरण में सम तथा विषम प्रश्नों का सह–संबंध गुणांक है।

$$\text{विश्वसनीयता (R)} = \frac{2 \times 0.88}{1 + 0.79} = \frac{1.78}{1.79} = 0.994$$

विश्वसनीयता (R) = **0.994**

अर्द्ध विच्छेदन विधि द्वारा उपकरण का विश्वसनीयता गुणांक **0.88** प्राप्त हुआ, जो यह प्रदर्शित करता है कि शोधार्थी द्वारा निर्मित उपकरण विश्वसनीय है।

## IX. वैधता :–

किसी भी परीक्षण की वैधता से तात्पर्य है कि परीक्षण जिन उद्देश्यों को लेकर बनाया गया है उनकी पूर्ति कहाँ तक करता **व्यावसायिक उन्नयन प्रश्नावली** की **विषय वस्तु** की वैधता ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम शोधार्थी ने संबंधित साहित्य का अध्ययन किया, विषय वस्तु पर गहन जानकारी प्राप्त की, विषय विशेषज्ञों से साक्षात्कार किया। व्यावसायिक मूल्य प्रश्नावली की **अंकित वैधता** ज्ञात करने के लिए शोधार्थी ने शिक्षा मनोविज्ञान के विशेषज्ञों को यह प्रश्नावली दी जिन्होंने उद्देश्यों के संदर्भ में प्रश्नावली के प्रश्नों को जाँचा एवं स्वीकृत किया। इस प्रकार **व्यावसायिक उन्नयन** प्रश्नावली' की **अंकित वैधता** की जाँच की गई। **निर्मित वैधता** को बनाये रखने के लिए शोधार्थी ने व्यावसायिक **उन्नयन** प्रश्नावली बनाते समय उसी वैज्ञानिक प्रक्रिया को अपनाया है जिसके द्वारा कोई भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण उपयुक्त रूप से बन सके।

## 3.3.2 कार्यस्थल वातावरण प्रश्नावली निर्माण के सोपान :–

### I. योजना एवं संबंधित साहित्य का अध्ययन :–

कार्यस्थल वातावरण प्रश्नावली का निर्माण करने के पूर्व इसकी योजना बनाई गई है। इस सोपान में उक्त प्रश्नावली का स्वरूप, भाषा, प्रश्नों की संख्या, अनुक्रिया प्राप्त करने की युक्ति आदि को निश्चित किया गया। कार्यस्थल वातावरण से संबंधित प्रश्नावली का निर्माण करने के लिए **कार्यस्थल वातावरण** से संबंधित पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएँ, इनसाइक्लोपीडिया, रिसर्च जर्नल, रिसर्च पेपर व इंटरनेट से संबंधित साहित्य का अध्ययन किया।

### II. आयामों का निर्धारण :–

संबंधित संदर्भ साहित्य का अध्ययन करने के बाद शोधार्थी ने कुल 06 क्षेत्रों का निर्धारण किया गया जो इस प्रकार से प्रदर्शित हैः–

| क्र.स. | आयाम का नाम |
|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण |
| 3. | वितीय वातावरण |
| 4. | शैक्षिक वातावरण |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण |
| 6. | विविध वातावरण |

## III. आयामों का चयन :–

### प्रश्नावली के लिए आयाम

| क्र. सं. | आयामों के नाम | विशेषज्ञों की राय | | | | | | | | | | % | चयनित या अचयनित |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | | |
| 1. | भौतिक वातावरण | ✓ | ✗ | ✓ | ✗ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 80% | चयनित |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✗ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 90% | चयनित |
| 3. | वितीय वातावरण | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✗ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 90% | चयनित |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 100% | चयनित |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | ✓ | 100% | चयनित |
| **6.** | **विविध वातावरण** | ✓ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | ✗ | **10%** | **अचयनित** |

प्रश्नावली में आयाम चयन हेतु **80%** प्रतिशत विशेषज्ञों की राय के आधार पर 6 में से आयाम **विविध वातावरण** को हटाते हुए अंतिम रूप से 05 आयाम रखे गये है –

| क्र.स. | आयाम का नाम |
|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण |
| 3. | वितीय वातावरण |
| 4. | शैक्षिक वातावरण |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण |

## IV. प्रश्नों का निर्माण :–

आयाम का चयन करने के बाद प्रत्येक क्षेत्र पर प्रश्नों का निर्माण करते हुए कुल 56 प्रश्नों का निर्माण किया गया।

| क्र.स. | आयाम का नाम | प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण | 11 |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 11 |
| 3. | वितीय वातावरण | 11 |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 12 |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 11 |
| | **योग** | **56** |

## V. विशेषज्ञों की राय :–

इन प्रश्नों की भाषा तथा आयाम की दृष्टि से जाँचने के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत 20 विषय विशेषज्ञों को दिया गया। जिन प्रश्नों पर 80 प्रतिशत विषय विशेषज्ञों की राय सहमति के रूप में प्राप्त हुई उन प्रश्नों को प्रश्नावली में सम्मिलित कर दिया गया। इस प्रकार प्रश्नावली से 1 प्रश्न हटाते हुए पद विश्लेषण के लिए कुल 55 प्रश्नों का चयन किया गया।

| क्र.स. | आयाम का नाम | प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण | 11 |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 11 |
| 3. | वितीय वातावरण | 11 |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 11 |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 11 |
| | **योग** | **55** |

## VI. पद विश्लेषण :–

इस प्रकार 55 प्रश्नों की इस कार्यस्थल वातावरण प्रश्नावली को उपयुक्त वातावरण में 100 शिक्षक प्रशिक्षकों पर प्रशासित किया गया। प्रश्नावली में दिये गए निर्देशों के अनुरूप प्रश्नावली भरने को कहा गया, प्रशासन के बाद 100 शिक्षक प्रशिक्षकों की इन भरी हुई प्रश्नावलियों को जाँचा गया जिसमें सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रश्न पर निम्न प्रकार से अंकन किया गया–

| विकल्प | अंकन | |
|---|---|---|
| | धनात्मक प्रश्न | ऋणात्मक प्रश्न |
| पूर्ण सहमत | 4 | 0 |
| सहमत | 3 | 1 |
| अनिश्चित | 2 | 2 |
| असहमत | 1 | 3 |
| पूर्ण असहमत | 0 | 4 |

उपकरण का प्रशासन एवं अंकन के बाद 100 शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर प्रत्येक पद का विश्लेषण किया गया। इसके लिए सर्वप्रथम सभी शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांकों को घटते क्रम में रखा गया। इसके पश्चात् दोनों ओर से 27 प्रतिशत महिलाओं के प्राप्तांक अर्थात् 30–30 शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांकों को विश्लेषण के लिए लिया गया। इन शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांकों के समूह को 'उच्च समूह' एवं 'निम्न समूह' के रूप में नामकरण किया गया। इन उच्च एवं निम्न समूह के शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांकों के मध्य परीक्षण के प्रत्येक प्रश्न के लिए 'टी' का मान ज्ञात किया गया।

'टी' मान वह मापन है जो उच्च एवं निम्न समूह में विभेदनशीलता को दिखाता है। साधारणतया df 98 के लिए .05 स्तर के लिए 'टी' मान 1.98 एवं .01 स्तर के लिए 'टी' मान 2.63 से इससे अधिक होने पर उच्च एवं निम्न समूह में सार्थक विभेदन क्षमता होती है।

''टी'' मान ज्ञात करने के लिए निम्नांकित सूत्र का प्रयोग किया गया :–

$$t = \frac{\overline{X}_H - \overline{X}_L}{\sqrt{\frac{\sum(x_H - \bar{x}_H)^2 + \sum(x_L - \bar{x}_L)^2}{n\,(n-1)}}}$$

$\overline{X}_H$ = उच्च समूह का किसी प्रश्न पर प्राप्तांकों का मध्यमान

$\overline{X}_L$ = निम्न समूह का किसी प्रश्न पर प्राप्तांकों का मध्यमान

$$\Sigma(x_H - \bar{x}_H)^2 = \Sigma fx_H^2 - \frac{\Sigma(fx_H)^2}{n}$$

$$\Sigma(x_L - \bar{x}_L)^2 = \Sigma fx_L^2 - \frac{\Sigma(fx_L)^2}{n}$$

N = आवृत्तियों का कुल योग

F = आवृत्ति

## प्रश्नों का टी–मान

| प्रश्न संख्या | टी–मान | चयनित/अचयनित |
|---|---|---|
| **क्षेत्र–1 भौतिक वातावरण** | | |
| **1.** | **1.24** | ✘ |
| 2. | 3.10 | ✓ |
| 3. | 5.22 | ✓ |
| 4. | 4.44 | ✓ |

| प्रश्न संख्या | टी–मान | चयनित/अचयनित |
|---|---|---|
| 5. | 3.06 | ✓ |
| 6. | 4.54 | ✓ |
| 7. | 3.66 | ✓ |
| 8. | 4.04 | ✓ |
| 9. | 4.18 | ✓ |
| 10. | 3.36 | ✓ |
| 11. | 4.98 | ✓ |
| क्षेत्र–2 प्रशासनिक वातावरण | | |
| 1. | 5.38 | ✓ |
| 2. | 3.59 | ✓ |
| 3. | 2.27 | ✓ |
| 4. | 5.25 | ✓ |
| 5. | 4.55 | ✓ |
| 6. | 3.64 | ✓ |
| 7. | 4.27 | ✓ |
| 8. | 3.10 | ✓ |
| 9. | 3.81 | ✓ |

| प्रश्न संख्या | टी–मान | चयनित/अचयनित |
|---|---|---|
| **10.** | **1.45** | ✘ |
| 11. | 3.28 | ✓ |
| क्षेत्र–3 वित्तीय वातावरण | | |
| 1. | 3.97 | √ |
| 2. | 4.60 | ✓ |
| 3. | 2.85 | ✓ |
| 4. | 3.78 | ✓ |
| 5. | 3.49 | ✓ |
| 6. | 3.87 | ✓ |
| 7. | 5.29 | ✓ |
| 8. | 3.76 | ✓ |
| 9. | 3.47 | ✓ |
| 10. | 4.82 | ✓ |
| **11.** | **1.24** | ✘ |
| क्षेत्र– 4 शैक्षिक वातावरण | | |
| 1. | 5.78 | ✓ |
| 2. | 4.89 | ✓ |

| प्रश्न संख्या | टी–मान | चयनित/अचयनित |
|---|---|---|
| 3. | 2.92 | ✓ |
| 4. | 3.15 | ✓ |
| 5. | 5.23 | ✓ |
| 6. | 4.61 | ✓ |
| 7. | 5.20 | ✓ |
| **8.** | **1.16** | ✗ |
| 9. | 3.27 | ✓ |
| 10. | 2.33 | ✓ |
| **11.** | 4.27 | ✓ |
| क्षेत्र–5 व्यावसायिक वातावरण | | |
| 1. | 4.65 | ✓ |
| 2. | 2.90 | ✓ |
| 3. | 3.77 | ✓ |
| 4. | 4.92 | ✓ |
| 5. | 3.64 | ✓ |
| 6. | 5.55 | ✓ |
| 7 | 6.81 | ✓ |

| प्रश्न संख्या | टी–मान | चयनित/अचयनित |
|---|---|---|
| **8** | **1.21** | ✗ |
| 9 | 4.24 | ✓ |
| 10 | 3.39 | ✓ |
| 11 | 2.99 | ✓ |
| 12 | 3.74 | ✓ |

व्यावसायिक वातावरण संबंधित प्रश्नावली के प्रश्नों के चयन हेतु 'टी' का मान 1.98 से अधिक मान वाले सभी प्रश्नों का चयन किया गया। इस प्रकार अंतिम रूप से 05 प्रश्नों को हटाते हुए कुल 50 प्रश्नों को रखा गया। अंतिम प्रारूप में 50 प्रश्नों की आयामवार स्थिति अधोलिखित सारणी में है :–

| क्र.स. | आयाम का नाम | प्रश्नों की संख्या |
|---|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण | 10 |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 10 |
| 3. | वितीय वातावरण | 10 |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 10 |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 10 |
| | **योग** | **50** |

## VII. कार्यस्थल वातावरण प्रश्नावली की विश्वसनीयता :–

शोधार्थी ने कार्यस्थल वातावरण प्रश्नावली की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए पद–विश्लेषण प्रक्रिया के बाद प्राप्त 50 प्रश्नों को 100 शिक्षक प्रशिक्षकों पर प्रशासित किया गया तथा प्राप्त प्राप्तांको को इन शिक्षक प्रशिक्षकों के सम एवं विषम क्रमांक वाले प्रश्नों के उत्तरों से प्राप्तांक प्राप्त किए गए। तत्पश्चात् सूत्र के द्वारा उपकरण के सम तथा विषम प्रश्नों का सह–संबंध गुणांक $r$=0.88 प्राप्त हुआ। प्रश्नावली की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्रों का प्रयोग किया गयाः–

$$\text{विश्वसनीयता (R)} = \frac{2r}{r + 1}$$

जहाँ पर, $r$ उपकरण में सम तथा विषम प्रश्नों का सह–संबंध गुणांक है।

$$\text{विश्वसनीयता (R)} = \frac{2 \times 0.90}{1 + 0.90} = \frac{1.80}{1.90} = 0.947$$

विश्वसनीयता (R) = **0.947**

अर्द्ध विच्छेदन विधि द्वारा उपकरण का विश्वसनीयता गुणांक **0.947** प्राप्त हुआ। जो यह प्रदर्शित करता है कि शोधार्थी द्वारा निर्मित उपकरण विश्वसनीय है।

**VIII. वैधता :–**

किसी भी परीक्षण की वैधता से तात्पर्य है कि परीक्षण जिन उद्देश्यों को लेकर बनाया गया है उनकी पूर्ति कहाँ तक करता **कार्यस्थल वातावरण प्रश्नावली** की **विषय वस्तु** की वैधता ज्ञात करने के लिए सर्वप्रथम शोधार्थी ने संबंधित साहित्य का अध्ययन किया, विषय वस्तु पर गहन जानकारी प्राप्त की, विषय विशेषज्ञों से साक्षात्कार किया। **कार्यस्थल वातावरण** प्रश्नावली की **अंकित वैधता** ज्ञात करने के लिए शोधार्थी ने शिक्षा मनोविज्ञान के विशेषज्ञों को यह प्रश्नावली दी जिन्होंने उद्देश्यों के संदर्भ में प्रश्नावली के प्रश्नों को जाँचा एवं स्वीकृत किया। इस प्रकार **कार्यस्थल वातावरण** प्रश्नावली' की **अंकित वैधता** की जाँच की गई। **निर्मित वैधता** को बनाये रखने के लिए शोधार्थी ने **कार्यस्थल वातावरण** प्रश्नावली बनाते समय उसी वैज्ञानिक प्रक्रिया को अपनाया है जिसके द्वारा कोई भी मनोवैज्ञानिक परीक्षण उपयुक्त रूप से बन सके।

## 3.3.3 कार्यसन्तुष्टि मापनी का विवरण :–

शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि के लिए **डॉ. मीरा दीक्षित** के द्वारा निर्मित की गई प्रमापनी काम में ली गई है। जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार से हैः–

**प्रस्तावना :–**

सन्तुष्टि किसी भी व्यवसाय का एक आवश्यक कारक है। इसके बिना व्यक्ति अपने व्यवसाय में ईमानदारी पूर्वक कार्य नहीं कर सकता है। यह एक प्रमापीकृत उपकरण है। यह प्रश्नावली **डॉ. मीरा दीक्षित** के द्वारा निर्मित है। इस प्रमापनी का प्रयोग प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का पता लगाने हेंतु किया जाता है।

विवरण जैसे – नाम, आयु, अनुभव, संस्था का नाम, वैवाहिक स्तर, माध्यम, आय, शैक्षिक योग्यता आदि को भरना होता है। इस प्रश्नावली में कुल 52 प्रश्न है। प्रत्येक कथन के पाँच विकल्प है :– पूर्णतः **सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतः असहमत।**

इन पांच में से जिस विकल्प पर सर्वाधिक संतुष्ट हो, उस विकल्प के सामने सही (✓) का निशान लगाना है। प्रमापनी के अनुसार अध्यापकों पर परीक्षण करने वाले उपकरण में निम्नलिखित क्षेत्र है :–

| **क्र.सं.** | **क्षेत्र** | **कथन** |
|---|---|---|
| 1. | कार्य के मूलभूत पहलू | 7 |
| 2. | वेतन, पदोन्नती कार्य स्थल परिस्थितिया | 8 |
| 3. | भौतिक सुविधा | 9 |
| 4. | संस्थागत योजना और नीति | 6 |
| 5. | प्रशासनिक सन्तुष्टि | 6 |
| 6. | सामाजिक स्थिति व पारिवारिक संतुष्टि | 5 |
| 7. | विद्यार्थियों से सम्बन्ध | 6 |
| 8. | सहकर्मियों से सम्बन्ध | 5 |
| | **योग** | **52** |

**निर्देश :–**

इस प्रश्नावली को प्रशासित करने से पूर्व अध्यापकों को आवश्यक निर्देश दिये गये थे, जो निम्नलिखित है :–

1. प्रश्नावली के सभी प्रश्नों को करना अनिवार्य है। इस प्रश्नावली के प्रश्नों के विकल्पों में से जो उचित लगे उसे चिह्नित (✓) कीजिए।

2. कोई भी उत्तर सही नहीं है। अतः आप जैसा उपयुक्त समझते है वैसा ही प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दीजिएगा।

3. इस प्रश्नावली को भरने की कोई समय सीमा नहीं है। फिर भी उत्तर पुस्तिका को जल्दी भरने का प्रयास करें।

4. यह एक गोपनीय उत्तर पत्रिका है अतः आपको उत्तर को गुप्त रखा जाएगा।

**अंकन प्रणाली :–**

अंकन युक्ति सरल हो। प्रतिदर्श विषयी प्रेरक तत्वों से किस सीमा तक संतुष्ट है, उस पर (✓) का चिन्ह लगाने को कहा। इन चिन्हों के आधार पर प्रमापनी के माध्यम से निम्नांकित प्रकार से अंक प्रदान किये गये :–

| | |
|---|---|
| पूर्णतः सहमत | 5 |
| सहमत | 4 |
| अनिश्चित | 3 |
| असहमत | 2 |
| पूर्णतः असहमत | 1 |

## मेन्यूअल के अनुसार शिक्षकों का प्रतिशतांक मान

| क्र.सं. | मूल प्राप्तांक | प्रतिशतांक मान | विवरण |
|---|---|---|---|
| 1 | 93 | 0 | अति निम्न कार्य संतुष्टि |
| 2 | 102 | 1 | |
| 3 | 138 | 10 | |
| 4 | 146 | 20 | निम्न कार्य सुंतष्टि |
| 5 | 150 | 25 | |
| 6 | 154 | 30 | |
| 7 | 161 | 40 | औसत कार्य संतुष्टि |
| 8 | 167 | 50 | |
| 9 | 173 | 60 | |
| 10 | 181 | 70 | उत्तम कार्य संतुष्टि |
| 11 | 186 | 75 | |
| 12 | 190 | 80 | |
| 13 | 202 | 90 | अति उत्तमकार्य संतुष्टि |
| 14 | 232 | 99 | |
| 15 | 240 | 100 | |

**विश्वसनीयता :–**

प्रस्तुत उपकरण की विश्वसनीयता 0.76 है।

## 3.4 सांख्यिकी प्रविधि :–

सांख्यिकी अंको में व्यक्ति तथ्यों का संकलन है ये तथ्य उचित रूप परिशुद्ध होते है। अनुसंधान का आधार संबंधित दत्तों का संकलन, विश्लेषण व निर्वाचन होता है। इन तीनों कार्यों को सुचारू रूप से एकत्र करने के लिए सांख्यिकी ज्ञान का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक शोधकार्य में सांख्यिकी विधियों द्वारा एकत्रित सूचनाओं व संकलित तथ्यों का विश्लेषण तथा व्याख्या की जाती है। वह अनुसंधान का आवश्यक अंग है।

एकत्रित दत्त संकलन को वैज्ञानिक रूप देने के लिए शोधार्थी ने प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया है –

1. **मध्यमान :–** मध्यमान किसी समूह की केन्द्रीय प्रवृत्ति का माप है। इसके आधार पर उस समूह के बारे में यह निष्कर्ष दे सकते है कि उसे समूह विशेष का औसत वर्ग कैसा है। मध्यमान का महत्व अन्य माव मध्यांकों से अधिक है क्योंकि मध्यमान मध्यांक व बहुलक की अपेक्षा अधिक स्थिर होता है।

   जहां,

$$M = \frac{\sum \times}{N}$$

   $\Sigma \times$ = सम्पूर्ण समूह के प्राप्तांकों का योग

   $N$ = सम्पूर्ण समूह के सदस्यों की संख्या

2. **मानक विचलन (S.D.) :–** मानक विचलन विचरणशीलता का सूचक अंक है। मानक विचलन की गणना से सांख्यिकी गण्ना में स्थायित्व आ जाता है। मानक विचलन सहसबंधों के गुणांक ज्ञात करने के लिए अत्याधिक महत्वपूर्ण है। मानक विचलन को निम्नलिखित सूत्र द्वारा ज्ञात किया जा सकता है –

$$S.D. = \sqrt{\frac{\sum (X - mean)^2}{N}}$$

S.D. = मानक विचलन

$\Sigma d^2$ = विचलन के वर्ग का योग

N = संख्याओं का योग

3. **टी–परीक्षण :–** विभिन्न प्रकार के समूहों के उत्तर की सार्थकता की जाँच की विधियाँ अलग–अलग है। छोटे समूह, के मध्यमानों की सार्थकता की जाँच 'टी' परीक्षण द्वारा की जाती है। दो समूहों के मध्यमान कार्य में महत्वपूर्ण अंतर है या नहीं, यह जानने के लिए आवश्यक है कि दोनों मध्यमानों के प्रामाणिक त्रुटि के अंतर को ज्ञात किया जाए। 'टी' परीक्षण ज्ञात करने के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया जाता है –

$$t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD_1^2}{N_1} + \frac{SD_2^2}{N_2}}}$$

जहाँ,

$M_1$ = प्रथम समूह का मध्यमान

$M_2$ = द्वितीय समूह का मध्यमान

$SD_1$ = प्रथम समूह मानक विचलन

$SD_2$ = द्वितीय समूह मानक विचलन

$N_1$ = प्रथम समूह के शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या

$N_2$ = द्वितीय समूह के शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या

## 3.5 उपसंहार :–

प्रस्तुत शोधकार्य के इस तृतीय अध्याय में अध्ययनार्थ प्रयुक्त विधि, प्रविधि, न्यादर्श तथा उपकरणों का सविस्तार उल्लेख कर विवरण प्रस्तुत किया गया है। आशा है कि यह शोध अध्ययन को अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध हो सकेगा।

# चतुर्थ अध्याय

## दत्तों का सारणीयन,
## विश्लेषण एवं व्याख्या

# चतुर्थ अध्याय

# दृत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या

## अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 4.1 | प्रस्तुतीकरण | 81 |
| 4.2 | विश्लेषण एवं व्याख्या | 81-124 |
| 4.3 | उपसंहार | 124 |

# चतुर्थ अध्याय

## दत्तों का सारणीयन, विश्लेषण एवं व्याख्या

### 4.1 प्रस्तुतीकरण :–

शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन पर कार्यस्थल के वातावरण एवं कार्यसन्तुष्टि के प्रभाव का वैज्ञानिक तरीके से अध्ययन करने हेतु दतों का संकलन कर तथ्यों का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया क्योंकि आर.के. मुखर्जी महोदय ने कहा है कि तथ्यों का पहाड़ कुछ नहीं कहता जब तक कि उसे एक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान नहीं किया जाये। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने मानकीकृत व स्वनिर्मित मापनी की सहायता से संकलित दत्तों को वर्गीकृत व सारणीयन किया गया। सांख्यिकी विश्लेषण के लिए सांख्यिकी तकनीकियों मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण, प्रतिशत मध्यमान, प्रतिशत आदि का प्रयोग किया गया।

### 4.2 विश्लेषण एवं व्याख्या :–

प्रदत्त तब तक अर्थपूर्ण नहीं होते जब तक कि उनको सांख्यिकीय विश्लेषण नहीं दिया जाता है। जब तक तथ्यों को सुव्यवस्थित करने उनका विश्लेषण व व्याख्या न कि जाये तब तक अध्ययन विषय का वास्तविक अर्थ, कारण तथा परिणाम स्पष्ट नहीं हो सकता है। तथ्य स्वयं मुक होते हैं, वे कुछ दर्शाते है, पर उनका क्रमबद्ध विश्लेषण व व्याख्या करके व्यवस्थित किया जा सकता है। व्याख्या व विश्लेषण द्वारा ही शोध के परिणाम निकाले जा सकते हैं, जो निम्नलिखित है :–

उद्देश्य–1 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 4.2.1

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का औसतवार विश्लेषण

| क्र.सं. | आयाम | मध्यांक | औसत |
|---|---|---|---|
| 1. | शैक्षिक योग्यता | 10×2=20 | 37.16 |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता | 10×2=20 | 37.10 |
| 3. | कार्य शैली | 10×2=20 | 37.12 |
| 4. | नवाचार | 07×2=14 | 26.03 |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता | 07×2=14 | 25.96 |

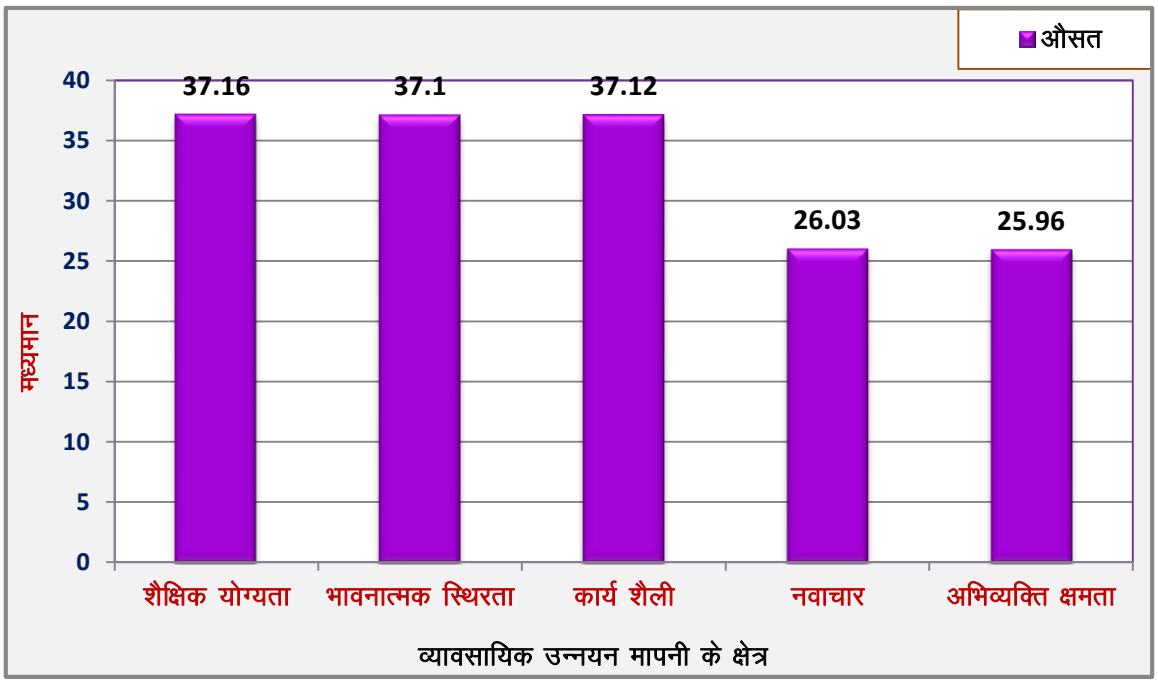


आरेख संख्या 4.2.1

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का औसतवार विश्लेषण

**विश्लेषण एवं व्याख्या :–**

- स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **शैक्षिक योग्यता पर** शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 37.16 प्राप्त हुआ। यह मान **शैक्षिक योग्यता** क्षेत्र के मध्यांक 10×2=20 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **शैक्षिक योग्यता** का योगदान होता है।

- स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **भावनात्मक स्थिरता** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 37.10 प्राप्त हुआ। यह मान **भावनात्मक स्थिरता** क्षेत्र के मध्यांक 10×2=20 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **भावनात्मक स्थिरता** का योगदान होता है।

- स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **कार्य शैली** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 37.12 प्राप्त हुआ। यह मान **कार्य शैली** क्षेत्र के मध्यांक 10×2=20 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **कार्य शैली** का योगदान होता है।

- स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **नवाचार** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 26.03 प्राप्त हुआ। यह मान **नवाचार** क्षेत्र के मध्यांक 07×2=14 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **नवाचार** का योगदान होता है।

- स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **अभिव्यक्ति क्षमता** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 25.96 प्राप्त हुआ। यह मान **अभिव्यक्ति क्षमता** क्षेत्र के मध्यांक 07×2=14 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **अभिव्यक्ति क्षमता** का योगदान होता है।

उद्देश्य–2 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 4.2.2

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयनों का औसतवार विश्लेषण

| क्र.सं. | आयाम | मध्यांक | औसत |
|---|---|---|---|
| 1. | शैक्षिक योग्यता | 10×2=20 | 34.74 |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता | 10×2=20 | 34.88 |
| 3. | कार्य शैली | 10×2=20 | 34.80 |
| 4. | नवाचार | 07×2=14 | 24.41 |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता | 07×2=14 | 24.25 |

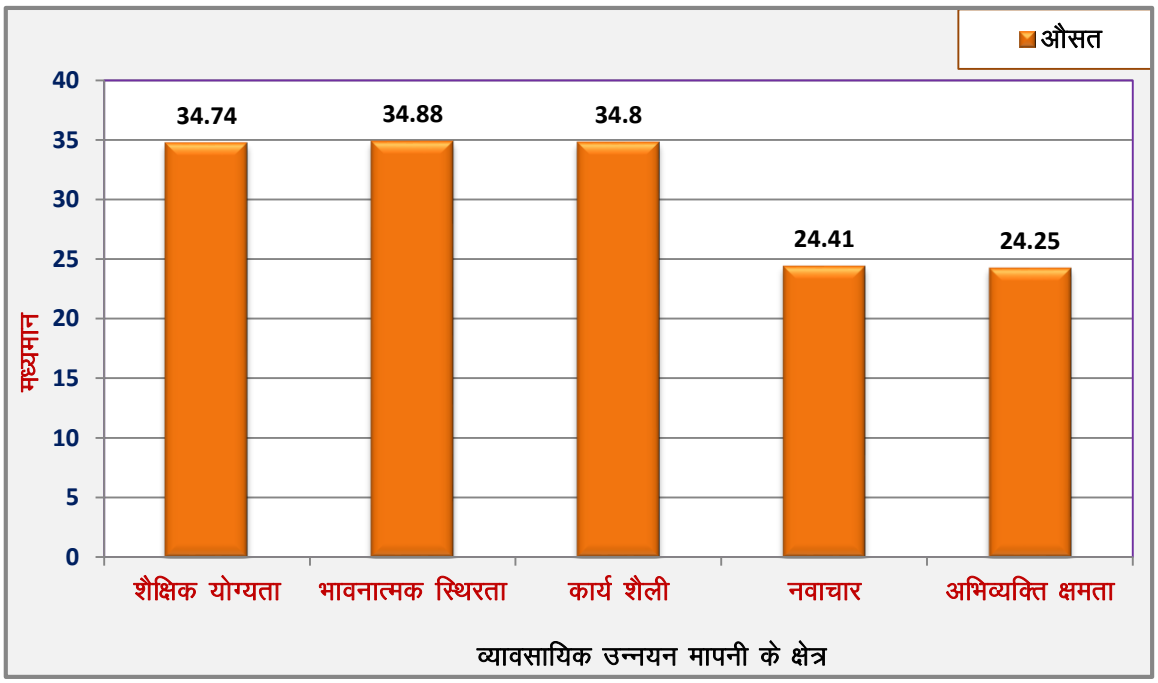


आरेख संख्या 4.2.2

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयनों का औसतवार विश्लेषण

**विश्लेषण एवं व्याख्या :–**

1. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **शैक्षिक योग्यता** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 34.74 प्राप्त हुआ। यह मान **शैक्षिक योग्यता** क्षेत्र के मध्यांक 10×2=20 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **शैक्षिक योग्यता** का योगदान होता है।

2. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **भावनात्मक स्थिरता** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 34.88 प्राप्त हुआ। यह मान **भावनात्मक स्थिरता** क्षेत्र के मध्यांक 10×2=20 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **भावनात्मक स्थिरता** का योगदान होता है।

3. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **कार्य शैली** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 34.80 प्राप्त हुआ। यह मान **कार्य शैली** क्षेत्र के मध्यांक 10×2=20 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **कार्य शैली** का योगदान होता है।

4. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **नवाचार** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 24.41 प्राप्त हुआ। यह मान **नवाचार** क्षेत्र के मध्यांक 07×2=14 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **नवाचार** का योगदान होता है।

5. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **अभिव्यक्ति क्षमता** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 24.25 प्राप्त हुआ। यह मान **अभिव्यक्ति क्षमता** क्षेत्र के मध्यांक 07×2=14 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **अभिव्यक्ति क्षमता** का योगदान होता है।

उद्देश्य–3 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 4.2.3

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयनों का औसतवार विश्लेषण

| क्र.सं. | आयाम | मध्यांक | औसत |
|---|---|---|---|
| 1. | शैक्षिक योग्यता | 10×2=20 | 37.70 |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता | 10×2=20 | 37.66 |
| 3. | कार्य शैली | 10×2=20 | 37.68 |
| 4. | नवाचार | 07×2=14 | 26.38 |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता | 07×2=14 | 26.31 |

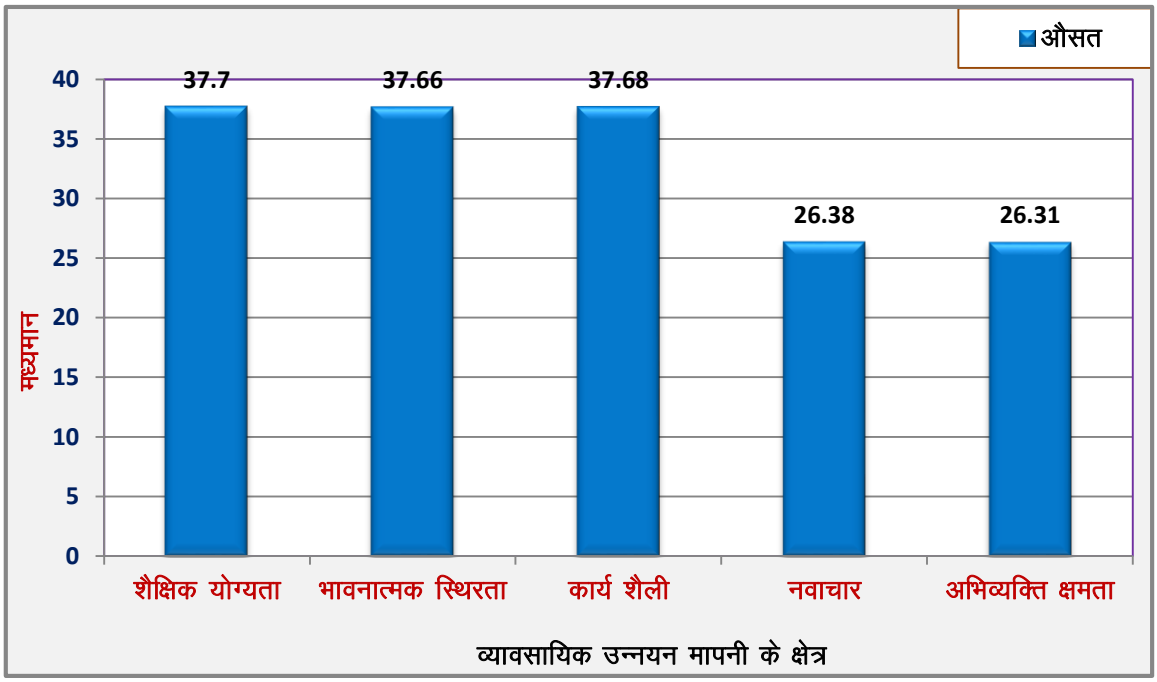


आरेख संख्या 4.2.3

शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयनों का औसतवार विश्लेषण

**विश्लेषण एवं व्याख्या :–**

1. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **शैक्षिक योग्यता** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 37.70 प्राप्त हुआ। यह मान **शैक्षिक योग्यता** क्षेत्र के मध्यांक 10×2=20 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **शैक्षिक योग्यता** का योगदान होता है।

2. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **भावनात्मक स्थिरता** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 37.66 प्राप्त हुआ। यह मान **भावनात्मक स्थिरता** क्षेत्र के मध्यांक 10×2=20 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **भावनात्मक स्थिरता** का योगदान होता है।

3. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **कार्य शैली** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 37.68 प्राप्त हुआ। यह मान **कार्य शैली** क्षेत्र के मध्यांक 10×2=20 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **कार्य शैली** का योगदान होता है।

4. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **नवाचार** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 26.68 प्राप्त हुआ। यह मान **नवाचार** क्षेत्र के मध्यांक 07×2=14 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **नवाचार** का योगदान होता है।

5. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **अभिव्यक्ति क्षमता** पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के उत्तरों के आधार पर प्राप्तांकों का औसत 26.31 प्राप्त हुआ। यह मान **अभिव्यक्ति क्षमता** क्षेत्र के मध्यांक 07×2=14 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **अभिव्यक्ति क्षमता** का योगदान होता है।

परिकल्पना–4 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## सारणी संख्या – 4.2.4

## शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

| क्र. सं. | क्षेत्र | मध्यमान | | मानक विचलन | | टी–मान | सार्थकता का स्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | महिला शिक्षक प्रशिक्षक | पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक | महिला शिक्षक प्रशिक्षक | पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक | | |
| 1. | शैक्षिक योग्यता | 34.74 | 37.70 | 6.41 | 4.05 | 3.90 | सार्थक अन्तर पाया गया |
| 2. | भावनात्मक स्थिरता | 34.88 | 37.66 | 6.88 | 4.39 | 3.41 | सार्थक अन्तर पाया गया |
| 3. | कार्य शैली | 34.80 | 37.68 | 6.52 | 4.21 | 3.71 | सार्थक अन्तर पाया गया |
| 4. | नवाचार | 24.41 | 26.38 | 4.65 | 2.91 | 3.59 | सार्थक अन्तर पाया गया |
| 5. | अभिव्यक्ति क्षमता | 24.25 | 26.31 | 4.39 | 2.74 | 4.12 | सार्थक अन्तर पाया गया |

स्वतंत्रता के अंश = 398

0.05 विश्वास स्तर का मान = 1.97

0.01 विश्वास स्तर का मान = 2.60

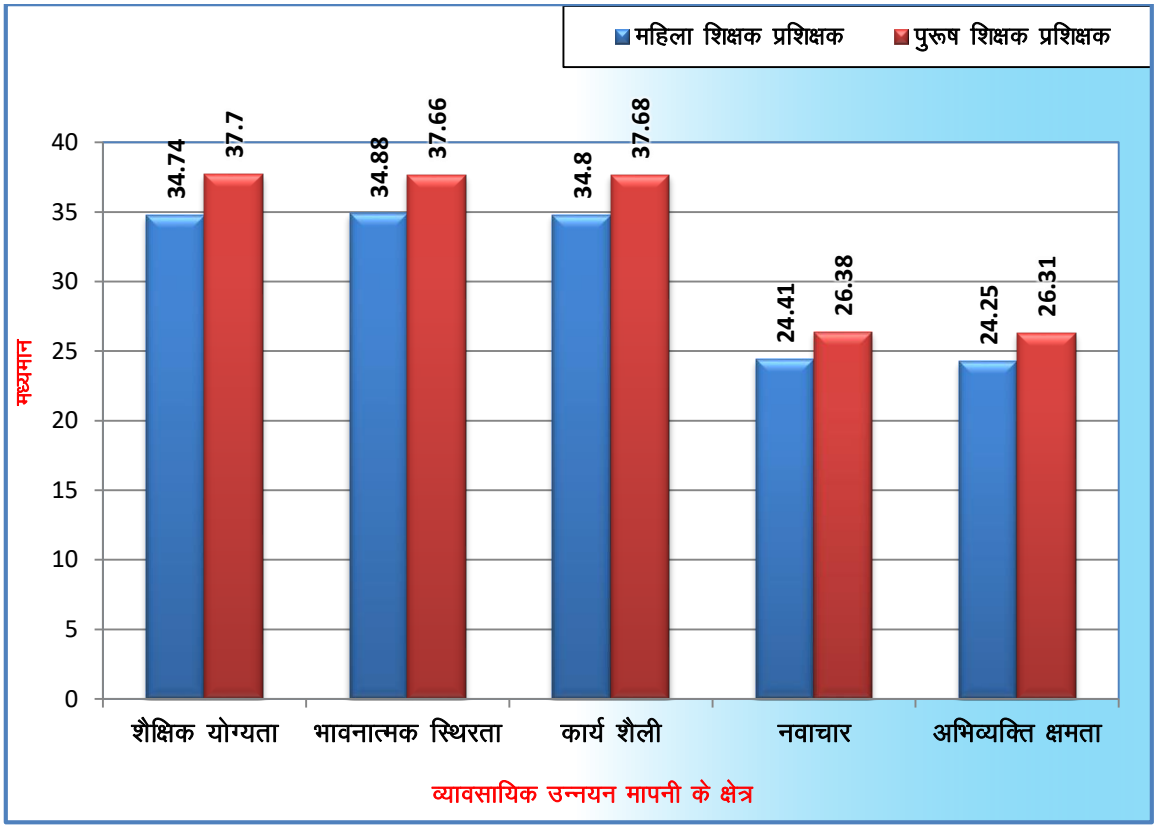


आरेख संख्या – 4.2.4

## शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का टी–मान के आधार पर तुलनात्मक विश्लेषण

### विश्लेषण एवं व्याख्या :–

1. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **शैक्षिक योग्यता** के सभी पदों पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांको का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 34. 74, 37.70 तथा 6.41, 4.05 प्राप्त हुआ। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के लिए टी–मान 3.90 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 398 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.57 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के मध्यमानों में

सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **''शैक्षिक योग्यता''** का योगदान महिला शिक्षक प्रशिक्षको की अपेक्षा अधिक पाया गया।

**2.** स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **भावनात्मक स्थिरता** के सभी पदों पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांको का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 34. 88, 37.66 तथा 6.88, 4.39 प्राप्त हुआ। सरकारी व निजी शैक्षणिक संस्थाओं में कार्यरत ग्रामीण महिलाओं के समूहों के लिए टी–मान 3.41 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 398 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **''भावनात्मक स्थिरता''** का योगदान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के अपेक्षा अधिक पाया गया।

**3.** स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **कार्य शैली** के सभी पदों पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांको के मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 34.80, 37. 68 तथा 6.52, 4.21 प्राप्त हुआ। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के लिए टी–मान 3.71 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 398 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के मध्यमानों में

सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **''कार्य शैली''** का योगदान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

**4.** स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **नवाचार** के सभी पदों पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांको का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 24.41, 26. 38 तथा 4.65, 2.91 प्राप्त हुआ। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के लिए टी–मान 3.59 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 398 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **''नवाचार''** का योगदान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

**5.** स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के क्षेत्र **अभिव्यक्ति क्षमता** के सभी पदों पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांको का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 24. 25, 26.31 तथा 4.39, 2.74 प्राप्त हुआ। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के लिए टी–मान 4.12 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 398 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के मध्यमानों में

सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **''अभिव्यक्ति क्षमता''** का योगदान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

6. स्वनिर्मित व्यावसायिक उन्नयन मापनी के समग्र क्षेत्रों के प्राप्तांकों पर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांको का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 153.08, 165.80 तथा 27.68, 17.28 प्राप्त हुआ। शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के लिए टी–मान 3.89 मिला जो कि स्वतन्त्रता के अंश 398 के 0.01 स्तर के सारणीमान 2.60 से अधिक है जो यह दर्शाता है कि शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के समूहों के मध्यमानों में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर है। अतः शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में समग्र क्षेत्रों का योगदान शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

**परिकल्पना** ''शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में कोई सार्थक अन्तर नही होता हैं।'' **अस्वीकृत** सिद्ध हुई।

उद्देश्य–5 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 4.3.5

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण

| क्र.सं. | क्षेत्र | कट पोइंट | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण | 10x3=30 | 36.70 |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 10x3=30 | 33.80 |
| 3. | वित्तीय वातावरण | 10x3=30 | 34.55 |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 10x3=30 | 37.44 |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 10x3=30 | 39.65 |

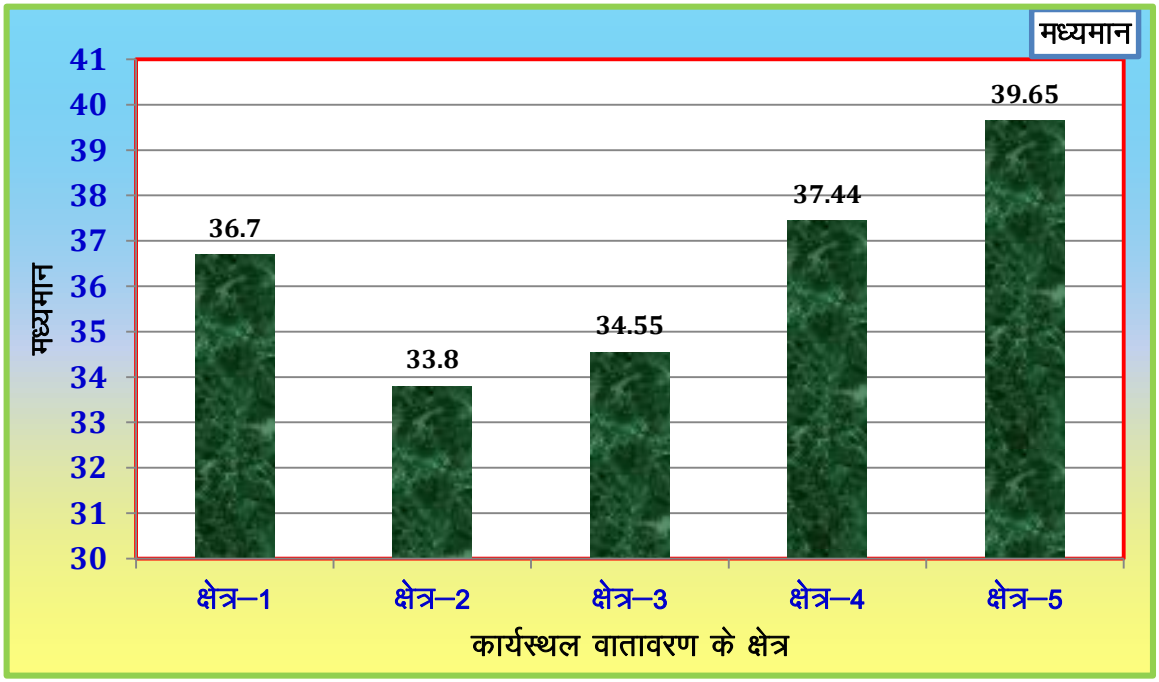


आरेख संख्या – 4.3.5

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण

उपरोक्त सारणी से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं :–

1. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **भौतिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 36.70 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **भौतिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

2. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **प्रशासनिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 33.80 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **प्रशासनिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

3. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **वित्तीय वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 34.55 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **वित्तीय वातावरण** से प्रभावित होता है।

4. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **शैक्षिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 37.44 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **शैक्षिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

5. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **व्यावसायिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 39.65 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **व्यावसायिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

उद्देश्य–6 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 4.3.6

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण

| क्र.सं. | क्षेत्र | कट पोइंट | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण | 10x3=30 | 35.50 |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 10x3=30 | 34.70 |
| 3. | वित्तीय वातावरण | 10x3=30 | 33.54 |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 10x3=30 | 36.43 |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 10x3=30 | 38.64 |

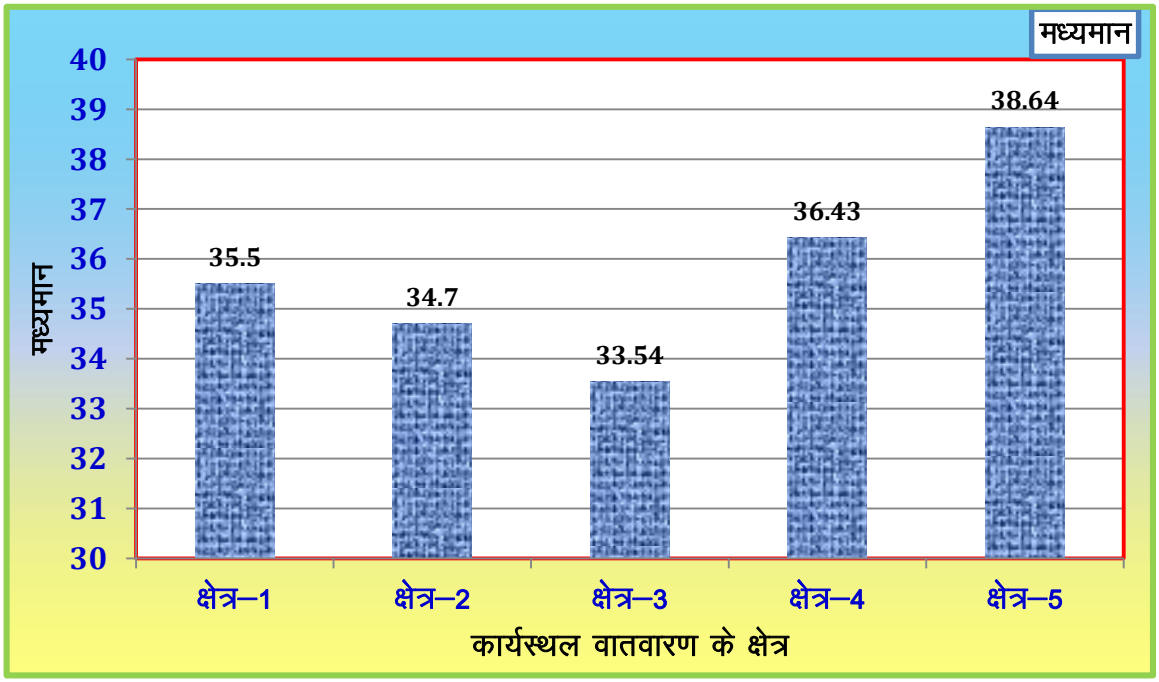


आरेख संख्या – 4.3.6

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण

उपरोक्त सारणी से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं :–

1. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **भौतिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 35.50 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **भौतिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

2. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **प्रशासनिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 34.70 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **प्रशासनिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

3. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **वित्तीय वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 33.54 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **वित्तीय वातावरण** से प्रभावित होता है।

4. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **शैक्षिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 36.43 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **शैक्षिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

5. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **व्यावसायिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 38.64 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **व्यावसायिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

उद्देश्य–7 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 4.3.7

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण

| क्र.सं. | क्षेत्र | कट पोइंट | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण | 10x3=30 | 38.58 |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 10x3=30 | 37.88 |
| 3. | वित्तीय वातावरण | 10x3=30 | 36.67 |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 10x3=30 | 39.57 |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 10x3=30 | 41.59 |

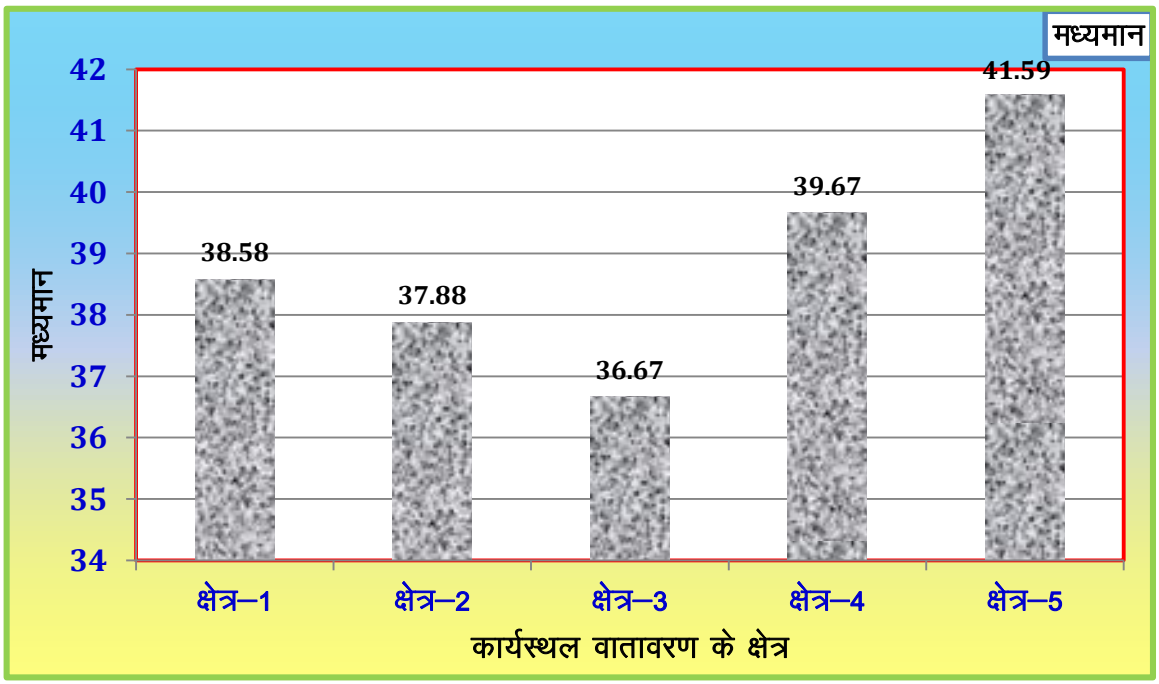


आरेख संख्या – 4.3.7

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण

उपरोक्त सारणी से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं :–

1. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **भौतिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 38.58 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **भौतिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

2. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **प्रशासनिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 37.88 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **प्रशासनिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

3. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **वित्तीय वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 36.67 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **वित्तीय वातावरण** से प्रभावित होता है।

4. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **शैक्षिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 39.57 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **शैक्षिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

5. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **व्यावसायिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 41.59 प्राप्त हुआ जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल वातावरण **व्यावसायिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

**परिकल्पना–8. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**सारणी संख्या – 4.3.8**

**निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का तुलनात्मक विश्लेषण**

| क्र. सं. | क्षेत्र | मध्यमान | | मानक विचलन | | टी मान | .01 / .05 स्तर पर सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | महिला शिक्षक प्रशिक्षक | पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक | महिला शिक्षक प्रशिक्षक | पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक | | |
| 1. | भौतिक वातावरण | 35.50 | 38.58 | 3.69 | 2.71 | 9.51 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 34.70 | 37.88 | 6.17 | 4.20 | 6.03 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 3. | वित्तीय वातावरण | 33.54 | 36.67 | 7.25 | 6.28 | 4.61 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 36.43 | 39.57 | 2.44 | 2.16 | 13.63 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 38.64 | 41.59 | 2.66 | 2.25 | 11.97 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |

स्वतंत्रता के अंश df =398 के सारणीमान

.01 स्तर पर सार्थकता = 2.60

.05 स्तर पर सार्थकता = 1.97

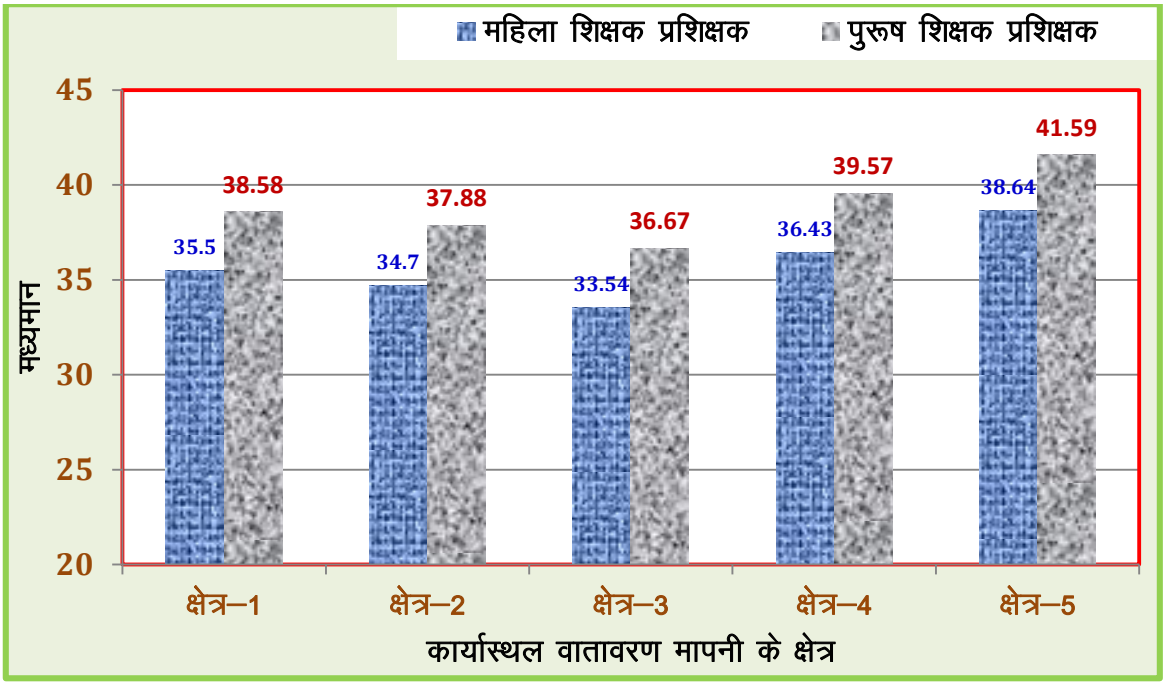


**आरेख संख्या – 4.3.8**

**निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का तुलनात्मक विश्लेषण**

**तुलनात्मक व्याख्या :–**

1. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **भौतिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 35. 50, 38.58 व 3.69, 2.71 प्राप्त हुए। क्षेत्र **भौतिक वातावरण** के लिए टी–मान 9. 51 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का **भौतिक वातावरण** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण को कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण की अपेक्षा अधिक प्रभावित करता है।

2. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **प्रशासनिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 34.70, 37.88 व 6.17, 4.20 प्राप्त हुए। क्षेत्र **प्रशासनिक वातावरण** के लिए टी–मान 6.03 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश $(df) = 398$ के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का **प्रशासनिक वातावरण** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण को कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण की अपेक्षा अधिक प्रभावित करता है।

3. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **वित्तीय वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 33. 54, 36.67 व 7.25, 6.28 प्राप्त हुए। क्षेत्र **वित्तीय वातावरण** के लिए टी–मान 4. 61 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश $(df) = 398$ के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का **वित्तीय वातावरण** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण को कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण की अपेक्षा अधिक प्रभावित करता है।

4. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **शैक्षिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 36. 43, 39.57 व 2.44, 2.16 प्राप्त हुए। क्षेत्र **शैक्षिक वातावरण** के लिए टी–मान

13.63 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का **शैक्षिक वातावरण** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण को कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण की अपेक्षा अधिक प्रभावित करता है।

5. स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **व्यावसायिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 38.64, 41.59 व 2.66, 2.25 प्राप्त हुए। क्षेत्र **व्यावसायिक वातावरण** के लिए टी–मान 11.97 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का **व्यावसायिक वातावरण** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण को कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण की अपेक्षा अधिक प्रभावित करता है।

**परिकल्पना** ''निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।'' **अस्वीकृत** सिद्ध हुई।

उद्देश्य–9 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 4.3.9

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण

| क्र.सं. | क्षेत्र | कट पोइंट | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | मूलभूत व्यवसाय | 7x3=21 | 26.70 |
| 2. | वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्तें | 8x3=24 | 31.60 |
| 3. | भौतिक सुविधाएँ | 9x3=27 | 29.40 |
| 4. | संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ | 6x3=18 | 22.44 |
| 5. | अधिकारों के साथ संतुष्टि | 6x3=18 | 23.65 |
| 6. | सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि | 5x3=15 | 19.29 |
| 7. | विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क | 6x3=18 | 21.55 |
| 8. | सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध | 5x3=15 | 19.63 |

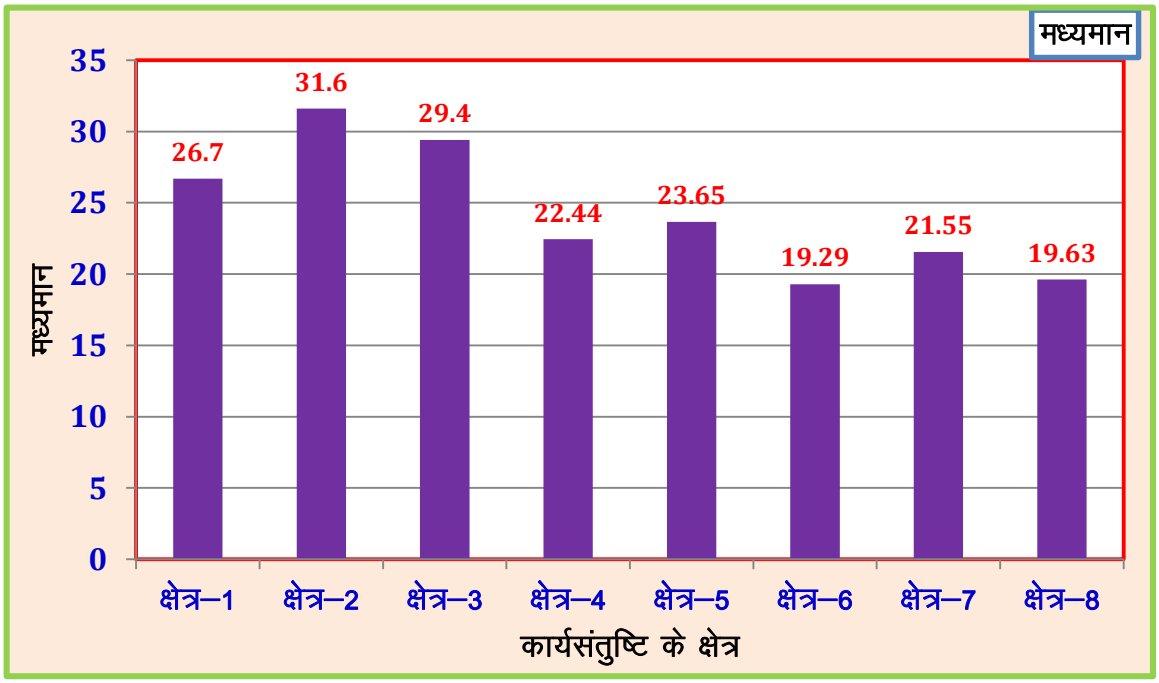


आरेख संख्या – 4.3.9

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण

उपरोक्त सारणी से निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं :–

1. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **मूलभूत व्यवसाय** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 26.70 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 21 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की **मूलभूत व्यवसाय** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

2. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 31.60 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 24 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की **वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

3. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **भौतिक सुविधाएँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 29.40 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 27 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की **भौतिक सुविधाएँ** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

4. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 22.44 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 18 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की **संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

5. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **अधिकारों के साथ संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 23.65 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 18 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की **अधिकारों के साथ संतुष्टि** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

6. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 19. 29 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 15 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की **सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

7. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 21.55 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 18 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की **विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

8. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 19.63 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 15 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की **सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

उद्देश्य–10 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 4.3.10

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण

| क्र.सं. | क्षेत्र | कट पोइंट | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | मूलभूत व्यवसाय | 7x3=21 | 27.80 |
| 2. | वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्तें | 8x3=24 | 33.29 |
| 3. | भौतिक सुविधाएँ | 9x3=27 | 36.20 |
| 4. | संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ | 6x3=18 | 24.08 |
| 5. | अधिकारों के साथ संतुष्टि | 6x3=18 | 24.40 |
| 6. | सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि | 5x3=15 | 19.55 |
| 7. | विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क | 6x3=18 | 23.75 |
| 8. | सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध | 5x3=15 | 20.59 |

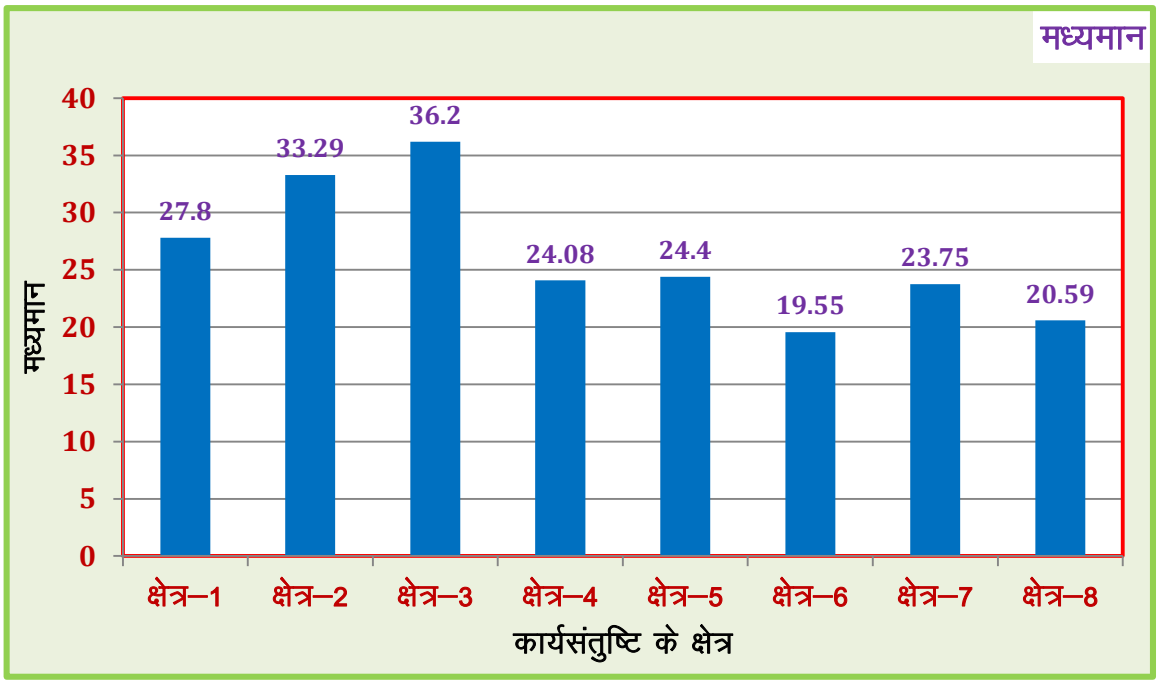


आरेख संख्या – 4.3.10

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण

**व्याख्या :–**

1. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **मूलभूत व्यवसाय** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 27.80 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 21 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की **मूलभूत व्यवसाय** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

2. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 33.29 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 24 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की **वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

3. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **भौतिक सुविधाएँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 36.20 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 27 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की **भौतिक सुविधाएँ** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

4. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 24.08 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 18 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की **संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

5. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **अधिकारों के साथ संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 24.40 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 18 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की **अधिकारों के साथ संतुष्टि** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

6. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 19.55 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 15 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की **सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

7. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 23.75 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 18 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की **विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

8. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 20.59 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 15 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की **सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

उद्देश्य–11 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना।

सारणी संख्या – 4.3.11

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण

| क्र.सं. | क्षेत्र | कट पोइंट | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | मूलभूत व्यवसाय | 7x3=21 | 24.97 |
| 2. | वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्तें | 8x3=24 | 30.46 |
| 3. | भौतिक सुविधाएँ | 9x3=27 | 33.37 |
| 4. | संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ | 6x3=18 | 21.55 |
| 5. | अधिकारों के साथ संतुष्टि | 6x3=18 | 21.57 |
| 6. | सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि | 5x3=15 | 16.5 |
| 7. | विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क | 6x3=18 | 19.92 |
| 8. | सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध | 5x3=15 | 17.76 |

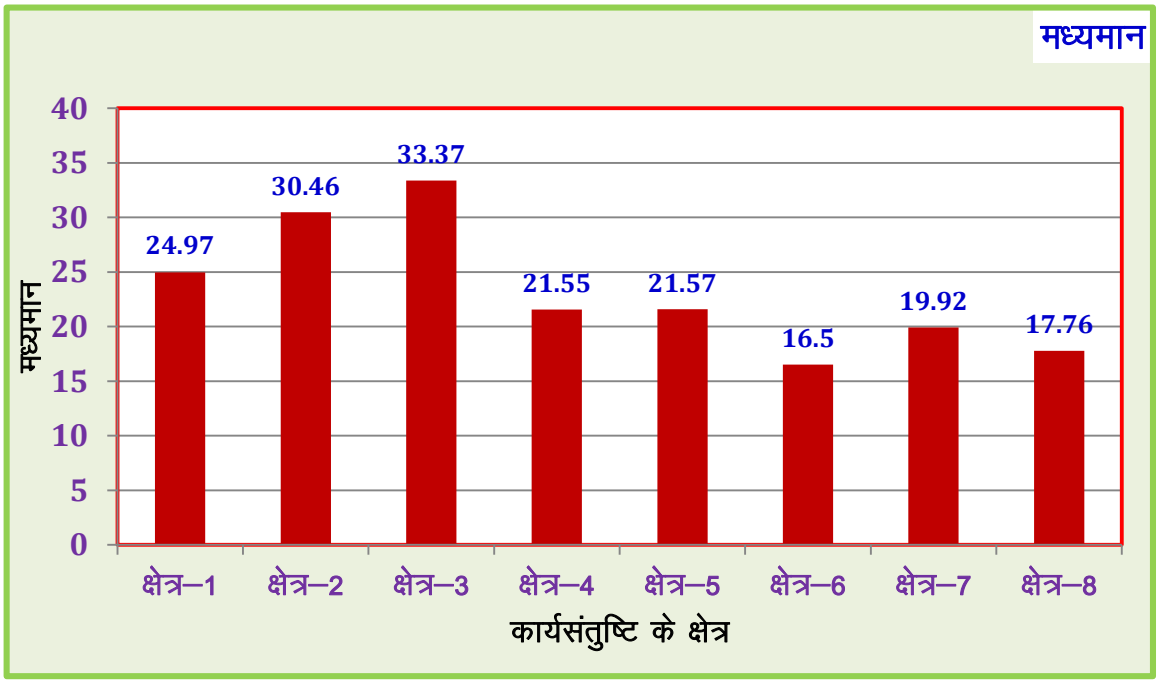


आरेख संख्या – 4.3.11

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का मध्यमानवार विश्लेषण

**व्याख्या :–**

1. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **मूलभूत व्यवसाय** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 24.97 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 21 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **मूलभूत व्यवसाय** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

2. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 30.46 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 24 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

3. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **भौतिक सुविधाएँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 33.37 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 27 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **भौतिक सुविधाएँ** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

4. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 21.55 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 18 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

5. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **अधिकारों के साथ संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 21.57 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 18 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **अधिकारों के साथ संतुष्टि** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

6. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 16.50 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 15 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

7. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 19.52 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 18 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

8. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 17.76 प्राप्त हुआ है, जो इस क्षेत्र के कट पोइन्ट मध्यमान 15 से अधिक पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध** के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

**परिकल्पना–12 निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यसन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

**सारणी संख्या – 4.3.12**

**निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण**

| क्र. सं. | क्षेत्र | मध्यमान | | मानक विचलन | | टी मान | .01/.05 स्तर पर सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | महिला | पुरूष | महिला | पुरूष | | |
| 1. | मूलभूत व्यवसाय | 27.80 | 24.97 | 3.69 | 2.71 | 3.91 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 2. | वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्तें | 33.29 | 30.46 | 6.17 | 4.20 | 2.40 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 3. | भौतिक सुविधाएँ | 36.20 | 32.37 | 7.25 | 6.28 | 2.53 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 4. | संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ | 24.08 | 21.55 | 2.44 | 2.16 | 4.91 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 5. | अधिकारों के साथ संतुष्टि | 24.40 | 21.57 | 2.66 | 2.25 | 5.14 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 6 | सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि | 19.55 | 16.5 | 1.98 | 1.52 | 7.73 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 7 | विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क | 23.75 | 19.92 | 2.33 | 2.10 | 7.72 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |
| 8 | सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध | 20.59 | 17.76 | 2.11 | 1.72 | 6.57 | 0.01 स्तर पर सार्थक अन्तर है। |

स्वतंत्रता के अंश df =398 के सारणीमान

.01 स्तर पर सार्थकता = 2.60

.05 स्तर पर सार्थकता = 1.97

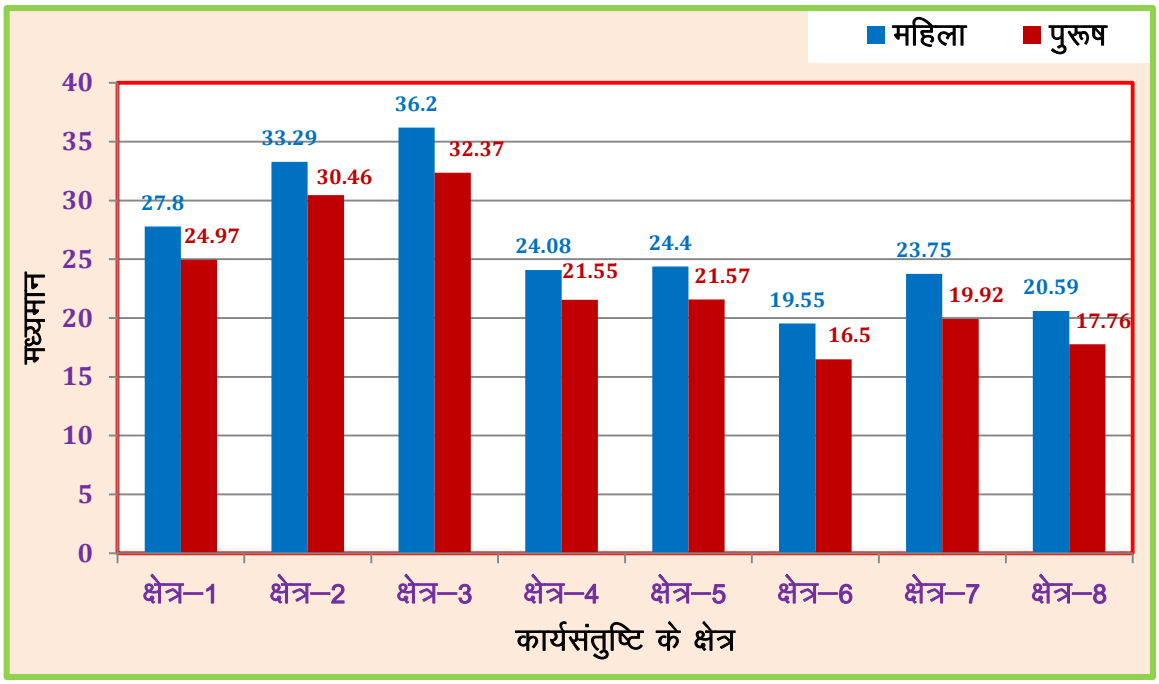


**आरेख संख्या – 4.3.12**

## निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक विश्लेषण

**तुलनात्मक व्याख्या :–**

1. मानकीकृत कार्यसन्तुष्टि मापनी के क्षेत्र **मूलभूत व्यवसाय** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 27.80, 24.97 व 3.69, 2.71 प्राप्त हुए। क्षेत्र **मूलभूत व्यवसाय** के लिए टी–मान 3.91 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **मूलभूत व्यवसाय** के प्रति सन्तुष्टि निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

2. मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी के क्षेत्र **वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्तें** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 33.29, 30.46 व 6.17, 4.20 प्राप्त हुए। दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस क्षेत्र के लिए टी–मान 2.40 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्तें** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

3. मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी के क्षेत्र **भौतिक सुविधाएँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 36.20, 32.37 व 7.25, 6.28 प्राप्त हुए। दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस क्षेत्र के लिए टी–मान 2.53 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **भौतिक सुविधाएँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

4. मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी के क्षेत्र **संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 24.08, 21.55 व 2.44, 2.16 प्राप्त हुए। दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस क्षेत्र के लिए टी–मान 4.91 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

5. मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी के क्षेत्र **अधिकारों के साथ संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 24.40, 21.57 व 2.66, 2.25 प्राप्त हुए। दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस क्षेत्र के लिए टी–मान 5.14 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **अधिकारों के साथ संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

6. मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी के क्षेत्र **सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 19.55, 16.60 व 1.98, 1.52 प्राप्त हुए। दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस क्षेत्र के लिए टी–मान 7.73 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

7. मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी के क्षेत्र **विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 23.75, 19.92 व 2.33, 2.10 प्राप्त हुए। दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस क्षेत्र के लिए टी–मान 7.72 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

8. मानकीकृत अभिवृत्ति मापनी के क्षेत्र **सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 20.59, 17.76 व 2.11, 1.72 प्राप्त हुए। दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच अन्तर की सार्थकता की जाँच करने के लिए टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया। इस क्षेत्र के लिए टी–मान 6.57 प्राप्त हुआ जो कि स्वतंत्रता के अंश $(df) = 398$ के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाया गया अर्थात् दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया। अतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की **सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

**परिकल्पना** ''निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही हैं।'' **अस्वीकृत** सिद्ध हुई।

## 4.3 उपसंहार :–

इस अध्याय में प्रस्तावना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन, कार्यसन्तुष्टि, कार्यस्थल वातावरण से सम्बन्धित दत्तों का सारणीयन कर उनका विश्लेषण एवं व्याख्या की गई है।

# पंचम अध्याय

## सारांश, निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

# पंचम अध्याय

# सारांश, निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

## अनुक्रमणिका


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 5.1 | शोध सारांश | 125-126 |
| 5.2 | शोध के निष्कर्ष | 127-129 |
| 5.3 | शैक्षिक निहितार्थ | 130 |
| 5.4 | नवीन अनुसंधान हेतु सुझाव | 130 |
| 5.5 | उपसंहार | 130-131 |

# पंचम अध्याय

# सारांश, निष्कर्ष, शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

## 5.1 शोध सारांश :–

इस अनुसंधान में शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन पर कार्यस्थल के वातावरण एवं कार्यसन्तुष्टि के प्रभाव का गुणात्मक व मात्रात्मक दृष्टि से अध्ययन किया गया जिसके उद्देश्य : निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन का तुलनात्मक अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यस्थल वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का

अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना। **परिकल्पनाएँ** : निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है एवं निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यसन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अनुसंधान कार्य में न्यादर्श चयन करने हेतु मेहसाणा व पाटन जिले के 20–20 महाविद्यालयों का चयन किया गया। प्रत्येक महाविद्यालय से सोउद्देश्य विधि द्वारा 10–10 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया जिसमें से 5 महिला व 5 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक चयन किये। इस प्रकार से कुल 200 महिला व 200 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक का चयन करते हुए कुल 400 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया। अध्ययन हेतु **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया। दत्तों के संकलन हेतु व्यावसायिक उन्नयन एवं कार्यस्थल वातावरण के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली तथा कार्यसंतुष्टि के मापन के लिए मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया। दत्त विश्लेषण हेतु सांख्यिकीय प्रविधियाँ मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण प्रविधियों का प्रयोग किया गया है।

## 5.2 शोध के निष्कर्ष :–

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा दत्तों का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए है :–

**अ. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन सम्बन्धी निष्कर्ष :–**

- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **शैक्षिक योग्यता, भावनात्मक स्थिरता, कार्य शैली**, **नवाचार व अभिव्यक्ति क्षमता** का योगदान होता है।

- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **शैक्षिक योग्यता, भावनात्मक स्थिरता, कार्य शैली, नवाचार व अभिव्यक्ति क्षमता** का योगदान होता है।

- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **शैक्षिक योग्यता, भावनात्मक स्थिरता, कार्य शैली, नवाचार व अभिव्यक्ति क्षमता** का योगदान होता है।

- शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन में **''शैक्षिक योग्यता''**, **''भावनात्मक स्थिरता''**, **''कार्य शैली''**, **''नवाचार''** **व** **''अभिव्यक्ति क्षमता''** का योगदान महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाया गया।

**ब. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण सम्बन्धी निष्कर्ष :–**

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल **भौतिक वातावरण, प्रशासनिक वातावरण, वित्तीय वातावरण, शैक्षिक वातावरण** व **व्यावसायिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल **भौतिक वातावरण, प्रशासनिक वातावरण, वित्तीय वातावरण, शैक्षिक वातावरण** व **व्यावसायिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल **भौतिक वातावरण, प्रशासनिक वातावरण, वित्तीय वातावरण, शैक्षिक वातावरण** व **व्यावसायिक वातावरण** से प्रभावित होता है।

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का **भौतिक वातावरण, प्रशासनिक वातावरण, वित्तीय वातावरण, शैक्षिक वातावरण व व्यावसायिक वातावरण** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल को कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल की अपेक्षा अधिक प्रभावित करता है।

**स. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यसन्तुष्टि सम्बन्धी निष्कर्ष :–**

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की मूलभूत व्यवसाय, वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते, भौतिक सुविधाएँ, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, अधिकारों के साथ संतुष्टि, सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि, विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क व सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की मूलभूत व्यवसाय, वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते, भौतिक सुविधाएँ, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, अधिकारों के साथ संतुष्टि, सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि, विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क व सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की मूलभूत व्यवसाय, वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते, भौतिक सुविधाएँ, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, अधिकारों के साथ संतुष्टि, सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि, विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क व सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध के प्रति सन्तुष्टि पाई गई।

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की मूलभूत व्यवसाय, वेतन, पदोन्नत्ति एवं कार्य शर्ते, भौतिक सुविधाएँ, संस्थागत योजनाएँ एवं नीतियाँ, अधिकारों के साथ संतुष्टि, सामाजिक स्तर एवं पारिवारिक सुख से संतुष्टि, विद्यार्थियों के साथ सम्पर्क व सहकर्मियों के साथ सम्बन्ध के प्रति सन्तुष्टि निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई।

## 5.3 शैक्षिक निहितार्थ :–

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य से प्राप्त परिणामों का प्रयोग कर निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्राचार्य महोदय अपने महाविद्यालय का वातावरण उत्कृष्ट स्तर बना सकते है। कार्यस्थल वातावरण को अच्छा बनाने के लिए वांछित संसाधनो का प्रयोग किया जा सकता है। अनुसंधान से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर शिक्षक प्रशिक्षक व्यवसाय संबंधी प्रशिक्षण आसानी से प्राप्त कर सकते है तथा विपरीत परिस्थितियों में व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखकर अपना कार्य करते हुए व्यावसायिक सन्तुष्टि प्राप्त की जा सकती है। इस अनुसंधान से प्राप्त सुझावों के आधार पर शिक्षक प्रशिक्षक अपनी जीवन शैली में परिवर्तन करते हुए जीवन को सफल व सार्थक बना सकते है। अनुसंधान कार्य से शिक्षण व्यवसाय की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर इसके प्रति रूचि उत्पन्न की जा सकती है साथ ही व्यावसायिक उन्नयन के अवसरों की संभावनाएँ उत्पन्न की जा सके। शोधकार्य के प्राप्त परिणामों के आधार पर इसी क्षेत्र में नवीन शोध किया जा सकता है।

## 5.4 नवीन अनुसंधान हेतु सुझाव :–

शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन पर कार्यस्थल के वातावरण एवं कार्यसन्तुष्टि के प्रभाव को देखने के लिए अभी और अध्ययन की आवश्यकता है। इन अध्ययनों से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर ही भावी शिक्षकों को पूर्ण रूप से शिक्षक बनाया जा सकता है और उन्हें उचित दिशा प्रदान कर मुख्य धारा से विलग होने से बचाया जा सकता है। यहां भावी शोध अध्ययन के लिए कुछ सुझाव दिए जा रहे हैं :–

1. प्रस्तुत शोध कार्य को शिक्षक प्रशिक्षणों के महाविद्यालयों के प्राचार्य को लेकर किया जा सकता है।

2. भविष्य में राजकीय व निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों को लेकर समीक्षात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

3. भविष्य में शोध कार्य को वैयक्तिक विधि द्वारा भी किया जा सकता है।

4. भविष्य में शोध कार्य को ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षकों को लेकर किया जा सकता है।

5. भविष्य में न्यादर्श के विस्तृत रूप से अनुसंधान कर प्राप्त निष्कर्ष को अधिक विश्वसनीय बनाया जा सकता है।

## 5.5 उपसंहार :–

शोध अध्ययन का यह अन्तिम अध्याय हैं। इस अध्याय में पूर्व में किए गए चारों अध्यायों का सार प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। शोधार्थी द्वारा चयनित विषय ''शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन पर कार्यस्थल के वातावरण एवं कार्यसन्तुष्टि के प्रभाव'' के सांख्यिकी विश्लेषण के परिणाम स्वरूप प्राप्त होने वाले निष्कर्षो को व्यवस्थित एवं उद्देश्यों के क्रमानुसार वर्णित किया गया हैं साथ ही प्राप्त निष्कर्षो के आधार पर भविष्य मं किए जाने वाले अनुसंधान कार्य के लिए शोधार्थी द्वारा सुझावों का प्रस्तुतीकरण दिया गया। प्राप्त सुझावों का प्रयोग कर आने वाला शोधार्थी राष्ट्रहित में अनुसंधान कार्य करते हुए शिक्षा जगत को योगदान प्रदान कर सकता हैं। प्राप्त परिणामों का प्रयोग कर शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक–प्रशिक्षक अपना व्यवसायिक उन्नयन करते हुए अपनी जीवन शैली को पहले से बेहतर बनाने में सफल हो सकते है।

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

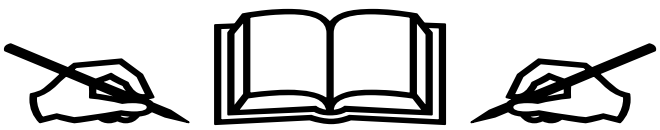

# संदर्भ ग्रन्थ सूची


**Research Survey :**

**Buch, M.B. (1997).** *Fifth Survey of Research in Education.* Vol.II (1988-92). N.C.E.R.T. New Delhi. Page 1357–1402.

**Buch M.B. (1987).** *Third Survey of Research in Education.* New Delhi.

**Buch, M.B. (1972).** *Survey of Research in Education.* Baroda.

**Books in Hindi :**

भार्गव, महेश चन्द्र (1984). *आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन.* आगरा : हर प्रसाद भार्गव।

बेस्ट, जे.डब्ल्यू. (1995). *शिक्षा अनुसंधान विधि एवं विश्लेषण.* आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

भटनागर, सुरेश (1997). *आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्याएँ.* मेरठ : लाल बुक डिपो।

ढ़ोढ़ियाल, एस.एन. एवं फाटक, ए.बी. (1972). *शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र.* जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

हेनरी, ई. गेरिट (1979). *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग.* (अनुवादित संस्करण) नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स।

कपिल, डॉ. एच.के. (2006). *अनुसंधान विधियाँ.* आगरा : एच.पी. भार्गव बुक हाउस।

कपिल, डॉ. एच.के. (2008). *सांख्यिकी के मूल तत्व.* आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

माथुर, एस.एस. (1977). *शिक्षा मनोविज्ञान.* आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर।

राय, पार्श्वनाथ (1985). *अनुसंधान परिचय.* आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

सुखिया, एस.पी. एवं मेहरोत्रा, पी.बी. (1973). *शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व.* आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

शर्मा, आर.ए. (2006). *शिक्षा अनुसंधान.* मेरठ : आर. लाल बुक डिपो।

सरीन एवं सरीन (2008). *शैक्षिक अनुसंधान विधियाँ.* आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

**Books in English :**

Amy, E.M. (2012). *The Cultivation and Transfer of Life Skills through the Outdoor Education Program at Besant Hill School.*

Best, J.W. (1993). *Research Education*. (6thEd). New Delhi : Prentice Hall of India Pvt. Ltd.

Chetna (2003). *Empowering adolescent learning about life module on life useful education.* Ahamdabad : Chetna Experience, CHETNA, Shahi Baag.

Farhud, D.D.; Malmir, M.; Khanahmadi, M. (2015). *Happiness as a healthy life style.* Iranian Academy of Medical Science.

Fox, D.J. (1969) *The Research processes in education.* New York : Holt Richard Association.

Garret, H.E. (1951). *Statistics in Psychology and Education.* New York : Congman's Green edu. Co. ltd.

Garret, Henry E. (1972). *Use of Statistics in Education and Psychology.* Ludhiana : Kalyani Publishers.

Goleman, D. (1998). *Working with Emotional Intelligence.* New York : Bandon Books.

Goods, Bar and Scates (1935). *Methodology of Education Research.* New York.

Guilford, J.P. (1965). *Fundamental Statistics in Psychology and Education.* New York : McGraw Hill Book Company, P.141.

Gupta, S.C. (1981). *Fundamentals of Statistics.* Bombay : Himalaya Publishing Home.

Gupta, S.P. *Stastical Methods.* New Delhi : Sultan Chand & Sons.

Hyde, Anukool; Pethe, Sanjyot; Dhar, Upinder (2005). *Emotional Intelligence Scale (EIS).* Agra : National Psychological Corporation, Kacheri Ghat.

Koul, Lokesh (1984). *Methodology of Educational Research.* Vikas Publishing House Pvt. Ltd.

Levingiol, K.U. (2004). *Survey of Educational Research Society for Education.* Baroda : Research and Development.

Mayer, J.D. and Solovey, P. (1995). *Emotional Intelligence and Contraction and Regulation of Feelings*, Applied Pocventive Psychology, P. 197-208.

Mohammadia, A. (2011). *Survey the Effects of Life Skills Training on Tabriz High School Students' Satisfaction of Life.* Procardia-Social and Behavioral Sciences 30. 1843-1845.

Sabery, P. and Mayer, J. (1990). *Emotional Intelligence, Imagination, Cognition and Personality.* Journal of Psychology, 183-211.

Saxena, N.R.; Mishra, B.K.; Mahanti, R.K. (1996). *Fundamental of Educational Research.* Meeruth : R. Lal Book Dipot.

Sharma, Dr. Sapna and Sharma, Savitri (2020). *Teacher's Life-Satisfaction Scale.* Agra : National Psychological Corporation, Kacheri Ghat.

Sharma, R.A. (1984-85). *Fundamentals of Education Research.* Delhi : International Publishing House.

Skinner, Charles E. (1988). *Elementary Educational Psychology.* New Delhi : Surjeet Publications.

Sukhia, S.P.; Meharotra, P.V. and Metamora, R.N. (2003). *Elements of Educational Research.* Bombay : Applied Publishers, P.176.

Verma, Priti and Shrivastav (1998). *Statistics in Psychology and Education.* Agra : Vinod Pustak Mandir.

**Dictionary and Research:**

डायनर (1984). *डिक्सनरी आफ डेवलमेंटल साइकोलॉजी।*

Good, Carter V. *Dictionary of Education.* New York.

Good. C.V. (1959). *Introduction to Educational Research.* New York.

**Webliography:**

http://www.google.com

http://www.teachereffectiveness.com

http://www.attitude.com

http://www.effectiveness.com

http://www.teaching effectiveness.net.in

http://wwwteaching method.com

http://www.wikipedia.com

http://www.sciencedirect.com

# परिशिष्ट

# व्यावसायिक उन्नयन मापनी

**शिक्षक प्रशिक्षक का नाम : .....महिला /पुरूष.....**

**महाविद्यालय का नाम : .....**

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| (1) | **शैक्षिक योग्यता** | | | | | |
| 1. | मुझे शैक्षिक योग्यता के अनुसार वेतन प्राप्त होता है। | | | | | |
| 2. | मुझे शैक्षिक योग्यता के अनुरूप महाविद्यालय में शिक्षण कार्य प्रदान किया जाता है। | | | | | |
| 3. | मैं शिक्षक होने के नाते निरन्तर अपनी शैक्षिक योग्यता में वृद्धि करता/करती हूँ। | | | | | |
| 4. | मैं विद्यार्थियों के मानसिक स्तर के अनुरूप उनका मूल्यांकन करता/करती हूँ। | | | | | |
| 5. | मैं एनसीईआरटी के नियमानुसार पदोन्नति के लिए आवश्यक शैक्षिक योग्यता रखता/रखती हूँ। | | | | | |
| 6. | उच्च शैक्षिक योग्यता होने पर भी मुझे महाविद्यालय में निम्न स्तर का शैक्षणिक कार्य दिया जाता है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 7. | इस व्यवसाय में रहकर धन के साथ व्यक्ति अपनी शैक्षिक योग्यता बढा सकता है। | | | | | |
| 8. | शैक्षिक योग्यता से विभिन्न कौशलों का विकास संभव है। | | | | | |
| 9. | केवल अनुभव से व्यावसायिक विकास होता है। | | | | | |
| 10. | अध्यापन व्यवसाय में नवाचार को समझने के लिए नवीन ज्ञान की आवश्यकता होती है। | | | | | |
| (2) | **भावनात्मक स्थिरता** | | | | | |
| 1. | कक्षा–कक्ष में शिक्षण कराते समय शरारती विद्यार्थी द्वारा शरारत करने पर भी मैं प्रभावी तरीके से शिक्षण कार्य करवाता/करवाती हूँ। | | | | | |
| 2. | अपने विषय का शत–प्रतिशत परिणाम होने पर भी मैं बहुत सहजता से विद्यार्थियों के साथ शिक्षण अधिगम क्रिया करवाता/करवाती हूँ। | | | | | |
| 3. | मैं किसी विद्यार्थी के अनुत्तीर्ण होने पर भी उसे निरन्तर प्रोत्साहन प्रदान कर अध्ययन के लिए प्रेरित करता/करती हूँ। | | | | | |
| 4. | परीक्षा में छात्र को नकल करते हुए पाये जाने पर मैं उस पर क्रोध करने के बजाय ईमानदारी से अच्छे अंक से उत्तीर्ण होने की सलाह देता/देती हूँ। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5. | सहशैक्षिक गतिविधि में असफल विद्यार्थी निराश न हो, इसके लिए मैं उसे पुनः प्रयास करने के लिए कहता /कहती हूँ। | | | | | |
| 6. | सहकर्मियों द्वारा तीव्र आलोचना होने पर भी मेरे कार्यप्रतिबद्धता में कमी नहीं आती है। | | | | | |
| 7. | भावनात्मक स्थिरता उसी शिक्षक की अच्छी होती है जिसकी भावनात्मक बुद्धि का स्तर उच्च होता है। | | | | | |
| 8. | मैं भावना एवं तर्क में स्वस्थ सामंजस्य रखते हुए सही निर्णय लेता/लेती हूँ। | | | | | |
| 9. | मैं दूसरों की चिन्ताओं एवं परेशानियों को समझकर उनकी सहायता करता /करती हूँ। | | | | | |
| 10. | दबाव की स्थिति में भी एकाग्र रहना कठिन कार्य है। | | | | | |
| (3) | **कार्य शैली :–** | | | | | |
| 1. | मेरी कार्य शैली महाविद्यालय परिवार को प्रभावित करती है। | | | | | |
| 2. | मैं अपने कार्य को बेहतर तरीके से करने का प्रयास करता/करती हूँ। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3. | विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि में सक्रिय व पूर्ण उत्साह से मैं अपना सहयोग देता/देती हूँ। | | | | | |
| 4. | मैं अपना शिक्षण कार्य विद्यार्थियों की रूचि के अनुरूप कराता/कराती हूँ। | | | | | |
| 5. | मैं कार्य करने की अपेक्षा उच्च अधिकारियों की प्रशंसा करना अधिक पसन्द करता/करती हूँ। | | | | | |
| 6. | मैं कठिन विषय को सरल तरीके से पढाता/पढ़ाती हूँ। | | | | | |
| 7. | मैं किसी भी विषय को पढ़ने से पूर्व उस विषय से सम्बन्धित विद्यार्थियों के पूर्व ज्ञान का मूल्यांकन करता/करती हूँ। | | | | | |
| 8. | मैं शिक्षण कार्य के विभिन्न कौशलों का प्रयोग कर प्रभावी तरीके से अधिगम करता/कराती हूँ। | | | | | |
| 9 | मैं शिक्षण कार्य को मूलभूत सिद्धान्त के आधार पर करता/करती हूँ। | | | | | |
| 10. | मैं विद्यालयी गतिविधियों को अलग तरीके से करने का प्रयास करता/करती हूँ। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| (4) | **नवाचार :–** | | | | | |
| 1. | संस्था द्वारा रिफ्रेशर कोर्स के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। | | | | | |
| 2. | मैं स्वयं का कोई पेटेन्ट निर्माण करने का प्रयास करता/करती हूँ। | | | | | |
| 3. | मुझे संस्था पुस्तक लेखन कार्य के लिए समय देती है। | | | | | |
| 4. | व्यावसायिक विकास हेतु संस्था द्वारा सेमीनार का आयोजन करवाया जाता है। | | | | | |
| 5. | मैं सेमिनार से प्राप्त अनुभवों का उपयोग शिक्षण कार्य मे करता/ करती हूँ। | | | | | |
| 6. | मैं अपने विषय संबंधी नवीन जानकारी प्राप्त करने हेतु इन्टरनेट से शिक्षण की नवीन विधियों का प्रयोग करता/ करती हूँ। | | | | | |
| 7. | मेरे द्वारा एक ही विषय को प्रतिवर्ष नवीन तरीके से पढ़ाने का प्रयास किया जाता है। | | | | | |
| (5) | **अभिव्यक्ति क्षमता :–** | | | | | |
| 1. | अभिव्यक्ति क्षमता शिक्षक के व्यावसायिक विकास का प्रथम व महत्वपूर्ण सोपान होता है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 2. | कक्षा–कक्ष अन्तःक्रिया व्यवहार में शिक्षक की अभिव्यक्ति क्षमता का मूल्यांकन होता है। | | | | | |
| 3. | मैं शिक्षण कार्य में ओडियो–विडियो सामग्री का प्रयोग कर अपनी अभिव्यक्ति क्षमता को रूचिकर बनाने का प्रयास करता/करती हूँ। | | | | | |
| 4. | मुझे पत्रिकाओं में विद्यार्थियों के लिए लेख लिखना अच्छा लगता है। | | | | | |
| 5. | कक्षा–कक्ष में जब मैं शिक्षण कराता/कराती हूँ तो विद्यार्थी एकाग्रता पूर्वक अधिगम करते हैं। | | | | | |
| 6. | मैं अनुकूल व विपरीत परिस्थितियों में भी समभाव के साथ सम्प्रेषण करती हूँ। | | | | | |
| 7. | मैं विषय वस्तु को पठन कौशल के आधार पर रूचिकर बना देता/देती हूँ। | | | | | |

# कार्यस्थल वातावरण मापनी

**शिक्षक प्रशिक्षक का नाम : .....महिला /पुरूष.....**

**महाविद्यालय का नाम : .....**

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| (1) | **भौतिक वातावरण** | | | | | |
| 1. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय अनेक सुविधाओं से युक्त निजी भवन में संचालित हैं, जहाँ बडे बडे अध्ययन कक्षों में उचित प्रंकाश एवं हवा की व्यवस्था होती है। | | | | | |
| 2. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षकों के अनुपात में आरामदायक फर्नीचर एवं अध्यापन सामग्री रखने हेतु अलमारियों की व्यवस्था है। | | | | | |
| 3. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में पानी की टंकी एवं वाटर कूलर का उचित रख रखाव न होने से जल व्यवस्था की स्थिति प्रायः शोचनीय बनी रहती है। | | | | | |
| 4. | महाविद्यालय में समय समय पर सफाईकर्मी के द्वारा सफाई की जाती है। | | | | | |
| 5. | महाविद्यालय के वाचनालय में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के पृथक–पृथक अध्ययन हेतु लम्बी मेजें, पत्र –पत्रिकाओं एवं अन्य आवश्यक सामग्री को रखने के लिए अलमारियों की व्यवस्था है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 6. | महाविद्यालय के पुस्तकालय भवन में फोटोस्टेट मशीन, साइक्लोस्टाइल मशीन, कम्प्यूटर एवं पुस्तकों के चयन हेतु केटलॉगों आदि की सुविधायें प्रदान की जाती है। | | | | | |
| 7. | महाविद्यालय में खेल एवं अन्य शैक्षिक प्रतियोगिताओं के आयोजन के लिए वांछित उपकरणों की व्यवस्था है। | | | | | |
| 8. | महाविद्यालय में आवश्यक रिकार्डो के रख रखाव हेतु पृथक पृथक कक्षों की व्यवस्था है। | | | | | |
| 9. | महाविद्यालय में शिक्षाविदों, प्रशासकों एवं परीक्षकों आदि के ठहरने हेतु आधुनिक संसाधनों से युक्त अतिथि गृह की व्यवस्था है। | | | | | |
| 10. | महाविद्यालय में शैक्षिक कार्यक्रमों, प्रार्थना एवं प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन कराने हेतु सभागार भवन की व्यवस्था है। | | | | | |
| (2) | **प्रशासनिक वातावरण** | | | | | |
| 1. | महाविद्यालय में शिक्षा के नियोजन एवं प्रबंधन में शिक्षकों की भागीदारी है। | | | | | |
| 2. | महाविद्यालय में प्रबन्ध समिति का अधिक दबाव न होने के कारण महाविद्यालय के कर्मचारियों को नियमावली, नीतियों, मान्यताओं एवं प्रक्रियाओं के अनुरूप प्रशासनिक कर्तव्यों को पूरा करने में कठिनाईयों का सामना नहीं करना पडता है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3. | महाविद्यालय में प्राचार्य के कार्यो में प्रबन्ध समिति का हस्तक्षेप न होने से कर्मचारी प्राचार्य के नियमों के अन्तर्गत संस्था संचालन के तरीकों से सन्तुष्ट रहते है। | | | | | |
| 4. | महाविद्यालय को एन.सी.टी.ई. एवं विश्वविद्यालय की शर्तो को पूरा न करने के कारण स्थायी सम्बद्धता प्रदान न करके इनका केवल एक अथवा दो वर्ष के लिए निस्तारण कर दिया जाता है। | | | | | |
| 5. | महाविद्यालय में कर्मचारियों की नियुक्ति अस्थायी होने के कारण उनका प्रबन्ध समिति एवं प्राचार्य के साथ मतभेद बना रहता है। | | | | | |
| 6. | महाविद्यालय के संस्था प्रधान के संस्था संचालन के तरीकों से कर्मचारी सन्तुष्ट रहते है। | | | | | |
| 7. | महाविद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षकों को सरकार द्वारा निर्धारित सी.एल., पी.एल., ई.एल., ए,एल, आदि देने से प्रशासन द्वारा अवरोध न होने से शिक्षक प्रशिक्षक सन्तुष्ट रहते है। | | | | | |
| 8. | महाविद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षकों की शिकायतों को दूर करने के लिए प्रभावशाली मशीनरी का सृजन होने से शिक्षक प्रशिक्षक प्रसन्न रहते है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 9. | महाविद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षकों को एक से अधिक अधिकारियों के आदेशों को नही मानना होता है। | | | | | |
| 10. | महाविद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षकों की सेवायें अन्य राजकीय और केन्द्रीय संस्थाओं की भाँति सुरक्षित होने के कारण मानसिक तनाव की समस्या नहीं होती है। | | | | | |
| (3) | **वित्तीय वातावरण :–** | | | | | |
| 1. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की प्रबंध समितियाँ शिक्षण एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों की नियुक्ति विद्यार्थियों के अनुपात से कम ही करती है। | | | | | |
| 2. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कर्मचारियों की नियुक्ति यू.जी.सी. वेतनमान पर न होकर अनुबंधित रूप से कम वेतन पर होने से वह अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीन रहते है। | | | | | |
| 3. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में सरकार द्वारा निर्धारित सी.एल., पी.एल., ई.एल., ए,एल आदि के लेने पर प्रशासन द्वारा उस अवधि का वेतन नहीं काटा जाता है। | | | | | |
| 4. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा शर्ते पूरी करने पर ही सरकार द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय मे अधिकांश शिक्षक प्रशिक्षकों की अस्थाई पदों पर नियुक्त होते है जिस कारण से उन्हें यू.जी.सी. एवं राज्य सरकार के मानकों के अनुसार वेतन में महंगाई भत्ता, किराया भत्ता, सी.सी.ए. आदि प्रदान नहीं किया जाता है। | | | | | |
| 6. | महाविद्यालय में समय से वेतन न मिलने से अथवा वर्ष में 8 माह का वेतन मिलने के कारण कर्मचारी अपने कर्तव्यों के प्रति उदासीन रहते है। | | | | | |
| 7. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शिक्षण शुल्क में कई गुना वृद्वि कर दी जाती है लेकिन शुल्क वृद्धि के व्यय से मिलने वाली सुविधाओं का विरण नहीं दिया जाता है। | | | | | |
| 8. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अस्थायी कर्मचारियों को निर्धारित घंटे नौकरी करने के उपरांत अंशकालीन कार्य करके वेतन के अतिरिक्ति धन कमाने की सुविधा उपलब्ध नहीं है। | | | | | |
| 9 | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शैक्षिक गोष्ठियों, सम्मेलनों, विचार समितियों, कार्यशाला आदि की सहभागिता हेतु शिक्षक प्रशिक्षकों को आर्थिक सहायता दी जाती है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 10. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शैक्षिक एवं व्यावसायकि योग्यता बढाने के लिए पूर्ण वेतन पर कर्तव्य अवकाश एवं अध्ययन अवकाश लेने का प्रावधान है। | | | | | |
| (4) | **शैक्षिक वातावरण :–** | | | | | |
| 1. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षकों की राष्टीय एवं अन्तर्राष्टीय स्तर की संगोष्ठियों में सहभागिता होने के कारण उनमें स्तरानुकूल शैक्षिक अभिवृद्धि होती है। | | | | | |
| 2. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षकों को पुनश्चर्या कार्यक्रमों में सहभागिता करने की अनुमति मिलने के कारण उनकी वांछित शैक्षिक अभिवृद्धि होती है। | | | | | |
| 3. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय द्वारा धन बचाने के लक्ष्य से प्रबन्ध समिति द्वारा मात्र छः माह की अवधि के लिए ही अस्थायी स्टॉफ रखने के कारण अध्ययनपूर्ण वातावरण नहीं बन पाता है। | | | | | |
| 4. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में स्टाफ की कमी के कारण एक ही शिक्षक द्वारा विषय विशेषज्ञ न होते हुए भी कई विषय पढायें जाने से शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5. | सरकार द्वारा निर्धारित वेतन वाले विषय विशेषज्ञ शिक्षक प्रशिक्षक न होने के कारण व्यवस्थित ज्ञान न मिलने से विद्यार्थी शिक्षण कार्य से असन्तुष्ट पाये जाते है। | | | | | |
| 6. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की समय सारणी को अपने अनूकूल न पाकर शिक्षक वांछित शैक्षिक उपलब्धियों को प्राप्त करने में असमर्थ रहते है। | | | | | |
| 7. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शैक्षिक भ्रमण का आयोजन होने से विभिन्न विषयों की पाठ्य वस्तु के तथ्यों का वास्तविक ज्ञान प्राप्त हो पाता है। | | | | | |
| 8. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के पुस्तकालय में नवीनतम पुस्तकें एवं जर्नरल्स की कमी होने के कारण शिक्षक को नवीन ज्ञान प्राप्त नही हो पाता है। | | | | | |
| 9. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शैक्षिक स्वतन्त्रता के अभाव में शिक्षक प्रशिक्षकों के स्तरानुकूल शिक्षण करने में कठिनाई आती है। | | | | | |
| 10. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में विषय वस्तु पर स्वामित्व न रखने वाले शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा पढाने की अपेक्षा मात्र नोटस लिखवाने से उचित शैक्षिक अभिवृद्धि नहीं हो पाती है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| (5) | **व्यावसायिक वातावरण :–** | | | | | |
| 1. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में यू.जी.सी. द्वारा निर्धारित पदोन्नति के अवसर प्राप्त करने के लिए शिक्षकों द्वारा पुनश्चर्या कार्यक्रमों में सहभागिता करने में उनमें स्तरानुकूल व्यावसायिक अभिवृद्धि हो पाती है। | | | | | |
| 2. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में पदोन्नति के अवसर योग्यता के आधार पर न देकर प्रबन्ध समिति अथवा प्राचार्य की चापलूसी करने वाले कर्मचारियों को दिये जाते है। | | | | | |
| 3. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में व्यावसायिक उन्नयन के अवसरों की सहभागिता हेतु अवकाश का अभाव न होने से व्यावसायिक दक्षता पर दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। | | | | | |
| 4. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में अस्थायी नौकरी होने के कारण कर्मचारी अपनी नौकरी अधिक समय तक चलाने के लिए प्रबन्ध समिति से कर्मचारीगण परस्पर एक दूसरे की शिकायते करते है। | | | | | |

| क्र. सं. | कथन | सदैव | प्रायः | कभी कभी | नहीं | कभी नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 5. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में परस्पर व्यवसाय संबंधी ईर्ष्या के कारण कर्मचारियों को अपने व्यावसायिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने में रूकावट आती है। | | | | | |
| 6. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में सरकारी सहायता के अभाव में कर्मचारियों को किसी प्रकार की पदोन्नति के अवसर नहीं मिल पाते है। | | | | | |
| 7. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत योग्य कर्मचारियों की व्यावसायिक योग्यताओं एवं कुशलताओं का पूरा पूरा उपयोग हो पाता है। | | | | | |
| 8. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शिक्षक प्रशिक्षकों का अनुभव वरिष्ठता सूची में सम्मिलित किया जाता है। | | | | | |
| 9. | संगोष्ठी, शैक्षिक सम्मेलन एवं अनुसंधान करने का अवसर नहीं मिलने से महाविद्यालय के शिक्षक प्रशिक्षकों को कार्य सन्तोष नहीं मिल पाता है। | | | | | |
| 10. | शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में शिक्षकों को अपनी तरक्की के लिये अधिकारियों को प्रसन्न करना पड़ता है। | | | | | |

T.M. Regd. No. 564838
Copyright Regd. No. © A-73256/2005 Dt. 13.5.05

Consumable Booklet

of

# J S S T-DM

(Hindi version)

Dr. (Mrs.) Meera Dixit *(Lucknow)*

*कृपया निम्न सूचनाएँ भरिये :—*

नाम _____ वैवाहिक स्तर _____

शैक्षणिक योग्यताएँ _____ निर्देशन का माध्यम _____

अध्यापन अनुभव _____ कुल मासिक आय _____

संस्थान का नाम _____

## निर्देश

इस मापनी के द्वारा इस बात का पता लगाने का प्रयास किया जावेगा कि आप अपने वर्तमान व्यवसाय से कितने संतुष्ट है। प्रत्येक कथन के पाँच विकल्प हैं—पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, पूर्णतः असहमत। आप पाँच में से जिस विकल्प पर सर्वाधिक संतुष्ट हों, उसके सामने वाले खाने पर सही का निशान ☑ लगाइये। सभी कथनों के उत्तर निःसंकोच होकर स्वतन्त्र रूप से दीजिए। आपके उत्तर पूर्णतः गोपनीय रखे जायेंगे।

## फलांकन तालिका

| Job Factors | A | B | C | D | E | F | G | H | Total Score / Overall Interpretation |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Score | | | | | | | | | |
| Interpretation | | | | | | | | | |

Estd. 1971

✆ : (0562) 2464926

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION

4/230, KACHERI GHAT, AGRA-282 004 (INDIA)

| क्रमांक | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | अनिश्चित | असहमत | पूर्णतः असहमत | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | आप स्वभाव से अध्यापन के लिए उपयुक्त हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 2. | आपका विद्यालय अपने कार्य के अनुसार उचित स्थान पर है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 3. | आपका वेतन आपके कार्य के अनुसार उचित है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 4. | आपकी संस्था अध्यापकों मुक्त है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 5. | आप अनुभव करते हैं कि आपकी संस्था के प्रधान अपने पद के लिए उपयुक्त हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 6. | आपकी संस्था में सभी अध्यापक या अध्यापिकाएँ आपस में सहयोग की भावना से कार्य करते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 7. | विद्यार्थी आपका आदर करते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 8. | इस व्यवसाय में होने के कारण आपका समाज में समुचित स्थान है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 9. | आपका व्यवसाय आपके बच्चों या आपके आश्रितों को उचित शिक्षा दिलाने में सहायक होता है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 10. | आपकी संस्था एक साफ-सुथरा स्थान है, जहाँ कोई भी कार्य करना पसन्द करेगा। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 11. | आप अध्यापन में आनन्द का अनुभव करते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 12. | आपके व्यवसाय में पदोन्नति के अवसर हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 13. | आपको अपनी संस्था की योजनाओं में सलाह देने के लिए अवसर दिए जाते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 14. | आपकी संस्था का प्रधान एक निष्पक्ष व्यक्ति है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 15. | आपकी कक्षा में पठन-पाठन का कार्यक्रम सुचारु रूप से चलता है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 16. | आप अपने सह-अध्यापकों के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करने में सक्षम हैं और उनके साथ सुखद सामंजस्य अनुभव करते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 17. | आपके मित्र व सम्बन्धी आपके व्यवसाय को सम्मान देते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 18. | आपको अपने परिवार की देखभाल करने का पूरा समय तथा अवसर मिलते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 19. | आपके व्यवसाय में नियमित अध्यापन कार्य के अतिरिक्त कार्य करने पर अतिरिक्त धन मिलने की व्यवस्था है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |

| FACTORS | A | | B | | | C | | D | | E | | F | | | | G | | H | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ITEM | 1 | 11 | 3 | 12 | 19 | 2 | 10 | 4 | 13 | 5 | 14 | 8 | 9 | 17 | 18 | 7 | 15 | 6 | 16 |
| SCORE | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

| क्रमांक | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | अनिश्चित | असहमत | पूर्णतः असहमत | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 20. | आपकी संस्था की कार्य अवधि आपके लिए उपयुक्त है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 21. | आपकी संस्था के प्रधान आपकी व अन्य लोगों की भलाई में रुचि लेते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 22. | एक अध्यापक होने के नाते आपके विद्यार्थी आपको पसन्द करते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 23. | आप अपनी आमदनी से जो रहन-सहन का स्तर बनाने में सक्षम हैं वह आपको सुविधाजनक लगता है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 24. | आपकी कक्षाओं में प्रकाश व हवा का समुचित प्रबन्ध है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 25. | आप अवकाश के समय से अधिक अपने कार्य में आनन्द का अनुभव करते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 26. | आपका अपना कार्य नियोजित करने की पूर्ण स्वतन्त्रता है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 27. | आप अपनी संस्था के प्रधान का अन्य अध्यापकों के साथ व्यवहार पसन्द करते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 28. | आपके विद्यालय में अध्यापकों एवं विद्यार्थियों के बीच अच्छे सम्बन्ध हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 29. | आपकी संस्था की प्रयोगशाला में उचित उपकरण उपलब्ध हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 30. | अवसर मिलने पर इसी वेतन में आप दूसरे व्यवसाय में जाना पसन्द करेंगे। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 31. | जब तक आप ठीक से कार्य करते हैं, आपका व्यवसाय सुरक्षित है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 32. | आपको अपने बड़ों के द्वारा अच्छे कार्य की सराहना मिलती है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 33. | आपको अपने छात्रों के अभिभावकों से सम्पर्क स्थापित करने के उचित अवसर मिलते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 34. | छात्र व अध्यापक का अनुपात आपकी कक्षा में ऐसे नियम के अनुसार है कि आप पर कार्य का अधिक बोझ नहीं पड़ता है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 35. | अध्यापन व्यवसाय का भविष्य उज्जवल है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 36. | आपकी संस्था के पुस्तकालय में आपके लिए पुस्तकें सदैव उपलब्ध हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |

| FACTORS | A | | | B | | | C | | | D | E | | | F | G | | | H |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ITEM | 25 | 30 | 35 | 20 | 31 | 34 | 24 | 29 | 36 | 26 | 21 | 27 | 32 | 23 | 22 | 28 | 33 | – |
| SCORE | | | | | | | | | | | | | | | | | | |

| क्रमांक | कथन | पूर्णतः सहमत | सहमत | अनिश्चित | असहमत | पूर्णतः असहमत | प्राप्तांक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 37. | आपके सहयोगी आवश्यकता पड़ने पर आपकी सहायता करने को सदैव तत्पर रहते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 38. | आपको विद्यालय दूसरों के लिए अनुशासन एवं शैक्षिक उपलब्धियों का एक उदाहरण है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 39. | आप अपने छात्रों के चरित्र-निर्माण व अध्ययन की अच्छी आदतें विकसित करने में वास्तव में सहायक सिद्ध होते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 40. | पढ़ाई के साथ-साथ आपके विद्यालय में खेलकूद में भाग लेने के लिए आपको उचित अवसर मिलता है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 41. | आप अपनी संस्था के प्रधान के द्वारा दूसरों की शिकायतें सुनने व उन पर निर्णय लेने की रीतियों को पसन्द करते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 42. | आपके सहयोगी आपको अपने समान समझते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 43. | आपकी कक्षाएँ आवश्यकतानुसार सुसज्जित हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 44. | आपके सहयोगी आपको विद्यालय के महत्वपूर्ण कार्यों का उत्तरदायित्व देना पसन्द करते हैं जिससे आप गौरव का अनुभव कर सकें। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 45. | यह अच्छा है कि आपके व्यवसाय में अक्सर स्थानान्तरण नहीं होते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 46. | आपको अपनी व्यवसायिक योग्यता बढ़ाने के उचित अवसर प्रदान किये जाते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 47. | खेलकूद के अतिरिक्त अन्य सह-पाठ्यक्रम क्रियाओं में भी आपको भाग लेने के उचित अवसर मिलते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 48. | श्रव्य-दृश्य उपकरण आदि के प्रयोग के लिए सदैव उपलब्ध हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 49. | आपको अपने विद्यालय पहुँचने में कोई असुविधा नहीं होती है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 50. | अवकाश प्राप्ति के पश्चात् मिलने वाली सुविधाएँ उपलब्ध हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 51. | आपकी संस्था की कक्षाओं में छात्रों की संख्या के अनुसार उपयुक्त जगह है। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |
| 52. | आप अपने व्यवसाय में गरिमा का अनुभव करते हैं। | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ☐ | ◯ |

| FACTORS | A | | B | | C | | | | D | | | E | F | G | H | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ITEM | 46 | 52 | 45 | 50 | 43 | 48 | 49 | 51 | 38 | 40 | 47 | 41 | – | 39 | 37 | 42 | 44 |
| SCORE | | | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

© 2011. All rights reserved. Reproduction in any form is a violation of Copyright Act.
Consumable Booklet of Job Satisfaction Scale (JSST-DM) Hindi Version

# विशेषज्ञों की सूची

| क्र. सं. | नाम | पद | कॉलेज / इंस्टीट्यूट |
|---|---|---|---|
| 1. | डॉ. कल्पेश तिवारी | प्राचार्य | टीचर्स कॉलेज, पेसीफिक एज्युकेशन विभाग, उदयपुर |
| 2. | डॉ. अभय शर्मा | प्राचार्य | बी.एड. कॉलेज, भांडु (गुजरात) |
| 3. | डॉ. अतुल पटेल | सहायक आचार्य | ग्रोमोर बी.एड. कॉलेज, हिम्मतनगर (गुजरात) |
| 4. | डॉ. सोनल प्रजापति | प्राचार्य | नवजीवन बी.एड. कॉलेज, डीसा, बनासकांठा (गुजरात) |
| 5. | डॉ. मंजुला चौधरी | सहायक आचार्य | गुरूकुल बी.एड. कॉलेज, पालनपुर, बनासकांठा (गुजरात) |
| 6. | डॉ. टीनू सोनी | प्राचार्य | बी.एड. कॉलेज, रतनपुर, बनासकांठा (गुजरात) |
| 7. | डॉ. प्रशान्त परिहार | सहायक आचार्य | विवेकानन्द बी.एड. कॉलेज, मेहसाणा (गुजरात) |
| 8. | डॉ. योगेश बारोट | सहायक आचार्य | एम.एड. कॉलेज, राधेनपुर (गुजरात) |
| 9. | डॉ. रामजी भाई पटेल | सहायक आचार्य | एम.एड. कॉलेज, वडु (गुजरात) |
| 10. | डॉ. पीनल गोरडिया | सहायक आचार्य | पी.टी.सी. कॉलेज, पाटन (गुजरात) |
| 11. | डॉ. सुधीर टण्डेल | सह आचार्य | आई.आई.टी.ई. कॉलेज, गांधीनगर (गुजरात) |
| 12. | डॉ. नितिन रावल | सहायक आचार्य | स्वामी नारायण गुरूकुल विश्वविद्यालय, कलोल, गांधीनगर (गुजरात) |

# प्रकाशित
# शोध–आलेख

राष्ट्रहिताय संस्कृतम्

# Journal of Fundamental & Comparative Research

## Certificate of Publication

This is to certify that the article entitled

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि

Authored By

सोलंकी परेशाबेन एच.
पीएच.डी. शोधार्थी

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Published in

**ShodhaSamhita** : Journal of Fundamental & Comparative Research ; IF = 7.268
Vol. VIII, Issue III, No. 02, July – December : 2022
ISSN: 2277-7067
UGC Care Approved, Peer Reviewed and Referred Journal
Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University, Ramtek

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission
Approved Journal

Prof. Shrinivas Varkhedi

Vol. VIII, No. 2(III) July - December : 2022
ISSN - 2277-7067

राष्ट्रहिताय संस्कृतम्

**Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University**
**Ramtek, Dist. Nagpur, Maharashtra**

Peer Reviewed

# Journal of Fundamental & Comparative Research

UGC CARE Listed Journal

शोधसंहिता
New Research Frontiers

Index


| | | |
|---|---|---|
| 1 | A STUDY ON CONSUMER PREFERENCES TOWARDS AAVIN PRODUCTS IN TIRUPUR | 1 |
| 2 | THE IMPACT OF "PAZHAMOZHI NAANOORU" IN ENRICHING THE SOCIETY THROUGH ADMINISTRATION | 10 |
| 3 | संस्कृतपञ्चमहाकाव्येषु धार्मिकजीवनपद्धतिः | 15 |
| 4 | HEALTH INEQUALITIES RESEARCH IN INDIA: A SYNTHESIS OF RECENT LITERATURE | 21 |
| 5 | SOCIO-ECONOMIC EMPOWERMENT OF WOMEN THROUGH SELF-HELP GROUPS IN GANJAM DISTRICT OF ODISHA | 29 |
| 6 | DESIGN AND IMPLEMENTATION OF ANDROID-BASED MAGIC SWITCH BOX USING IOT | 33 |
| 7 | A COLLATION OF MACHINE LEARNING METHODS FOR BREAST CANCER DATASETS | 41 |
| 8 | ONLINE SHOPPING BEHAVIOUR AND ATTITUDE AMONG THE COLLEGE TEACHER TOWARDS DIGITAL MARKETING (WITH REFERENCE TO THANJAVUR DISTRICT) | 51 |
| 9 | IMPACT OF CUSTOMER REVIEWS ON PURCHASE BASED DATA USING SENTIMENT ANALYSIS WITH MACHINE LEARNING ALGORITHM | 57 |
| 10 | PERFORMANCE EVALUATION ON VARIOUS ROUGH SET BASED CLASSIFICATION MODELS APPLIED ON MULTIPLE MEDICAL DATA SETS IN SOFT COMPUTING -REVIEW | 68 |
| 11 | AN AMALGAMATION OF POLITICS AND RELIGIONIN GIRISH KARNAD'S TUGHLAQ | 75 |
| 12 | INDIGENEOUS MEDICINES OF IRULAS OF KANCHEEPURAM DISTRICT | 78 |
| 13 | AN EMPIRICAL ANALYSIS ON INDIA'S TRADE RELATIONS WITH ASEAN MARKETS | 83 |
| 14 | माध्यमिक विद्यालय स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण की वस्तुस्थिति का अध्ययन | 91 |

| | | |
|---|---|---|
| 15 | किशोर विद्यार्थियों की आत्म धारणाओं पर सांवेगिक परिपक्वता में सहसंबंध का अध्ययन | 98 |
| 16 | KEY RECENT INITIATIVES TAKEN BY GOVERNMENT OF INDIA IN PROMOTING AND SUPPORTING ENTREPRENEURSHIP | 104 |
| 17 | INNOVATIVE STRATEGIES FOLLOWED BY MICROFINANCE INSTITUTIONS FOR INCLUSIVE GROWTH | 109 |
| 18 | RELATIONSHIP BETWEEN EMPLOYEE SOCIALIZATION AND EMPLOYEE TURNOVER INTENTION THE MEDIATING ROLE OF EMPLOYEE MOTIVATION | 120 |
| 19 | A STUDY OF GOVERNMENT INITIATIVES: A CASE STUDY OF TOURISM AND HOSPITALITY INDUSTRY IN MAHARASHTRA POST COVID-19 | 127 |
| 20 | WORK OVERLOAD STRESS AND ITS IMPACT ON HEALTH AND PROFESSIONAL EFFICIENCY OF TEACHERS IN JALGAON CITY | 134 |
| 21 | ROLE OF EMOTIONAL INTELLIGENCE IN ENHANCING ETHICAL BEHAVIOUR IN EMPLOYEES TO IMPROVE PERFORMANCE | 142 |
| 22 | IMPACT OF LEADERSHIP ON ORGANIZATIONAL CULTURE: A SYSTEMATIC LITERATURE REVIEW | 148 |
| 23 | WORKPLACE HAPPINESS | 159 |
| 24 | EMPLOYEE STRESS AND ITS IMPACT ON EMPLOYEE PERFORMANCEAMONG WOMEN EMPLOYEES IN SATARADISTRICT | 164 |
| 25 | REVIEW PAPER ON ARTIFICIAL INTELLIGENCE (AI) AT WORK | 172 |
| 26 | MARKETING OF FINANCIAL SERVICES TO WOMEN: PROBLEMS AND PROSPECTS | 179 |
| 27 | AN EMPIRICAL STUDY OF THE STUDENTS' EXPERIENCE TO IDENTIFY, STUDY AND DISCUSS THE CHALLENGES IN LEARNING ENGLISH IN ONLINE CLASSES | 189 |
| 28 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि | 196 |
| 29 | राजस्थान राज्य में संचालित राजकीय निष्क्रमणीय पशुपालक आवासीय विद्यालय की वस्तुस्थिति के प्रति शिक्षकों का अभिमत | 203 |

**Shodhasamhita :** Journal of Fundamental & Comparative Research
Vol. VIII, Issue III, No. 02, July – December : 2022
ISSN: 2277-7067

# निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि

**सोलंकी परेशाबेन एच.** पीएच.डी. (शोधार्थी)

**डॉ. अंजलि दशोरा**
सहायक आचार्य, पेसिफिक कॉलेज ऑफ टीचर्स एजुकेशन, उदयपुर (राजस्थान)

**डॉ. रणछोड़भाई के. प्रजापति**
प्रधानाचार्य, स्वामी नारायण गुरुकुल बी.एड. कॉलेज, पालनपुर (गुजरात)

**सार–संक्षेप (Abstract)**

प्रस्तुत शोध आलेख में निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि के बारे में लिखा गया है। इस अध्ययन के लिए शोधार्थी ने गुजरात राज्य के मेहसाणा एवं पाटन जिले के निजी शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालयों से कुल 200 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया जिसमें से 100 महिला व 100 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षको का चयन किया गया। शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि से संबंधित दत्तों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्राप्तांकों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से यह पता चलता है कि निजी शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की तुलना में अधिक पाई गई।

**विशिष्ट शब्द:-** कार्यसन्तुष्टि, शिक्षक प्रशिक्षक , निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय

## प्रस्तावना :–

किसी व्यवसाय की सफलता के लिए कार्य की अनुरूपता और संतुष्टि एक मनोवैज्ञानिक आयाम है। जो व्यवसाय में कार्यरत व्यक्ति को उसके कार्य संतुष्टि प्रदान करता हैं किसी भी व्यवसाय में कार्यरत व्यक्ति उस सीमा तक अच्छा कार्य करेगा, जिस सीमा तक वह अपने व्यवसाय से संतुष्ट होगा। अगर कोई भी व्यक्ति अपने व्यवसाय या कार्य से पूर्ण रूपेण संतुष्ट है तो उसके कार्य करने की क्षमता और रूचियाँ भी बढ़ेगी। सुपर डोनाल्ड (1990) ने कार्य की संतुष्टि की महत्ता को स्वीकारते हुए अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये – ''मनुष्य अपने जीवन का अधिकतम भाग व्यवसाय में ही व्यतीत करता है एवं व्यवसाय की प्रगति की तैयारी में रहता है। यदि कार्य उतनी योग्यता व अभिरूचि एवं प्रकृति के अनुरूप नहीं है तो वह जीवन में समायोजित नहीं हो पाता। समाजोयित जीवन ही सामान्यतः संतोष का उद्‌गम होता है।''

शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है। शिक्षक शिक्षार्थी एवं पाठ्‌यक्रम इसके तीनों ही अंग है। पाठ्‌यक्रम या विषय वस्तु के माध्यम से शिक्षार्थी में वांछित परिवर्तन लाने का प्रयास करता है।

वर्तमान में कोरोना महामारी के कारण शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की कार्यप्रणाली में कई बदलाव आये है जिससे महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि के मापदण्ड में भी बदलाव आया है इसी तथ्य की पुष्टि हेतु यह आलेख लिखा गया है।

## उद्देश्य :–

1. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना।
2. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना।
3. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का अध्ययन करना।
4. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**प्राकल्पना :–**

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**अध्ययन का विधि शास्त्र :**

1. **विधि :** किसी भी अनुसंधान की सफलता उसकी योग्यता एवं क्रिया विधि पर आधारित है। किसी भी अनुसंधान को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए उपयुक्त अध्ययन विधि का चयन करना आवश्यक होता है। अतः शोध की प्रकृति के आधार पर शोधार्थी द्वारा शोध के लिए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

2. **न्यादर्श :–** किसी जनसंख्या या समष्टि से उसके प्रतिनिधि स्वरूप एक अंश चुन लेने को प्रतिचयन कहते हैं। गुजरात राज्य के मेहसाणा एवं पाटन जिले के निजी शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालयों से कुल 200 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया जिसमें से 100 महिला व 100 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षको का चयन किया गया। न्यादर्श का स्वरूप इस प्रकार से है:–

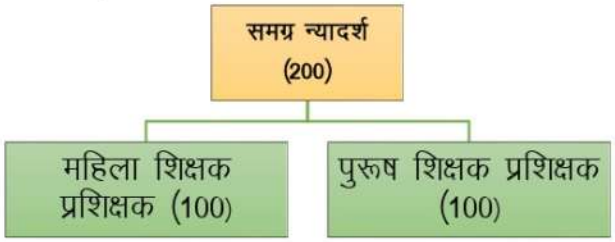


3. **उपकरण :–**

अनुसंधान की सफलता, उपयुक्त या उचित उपकरणों के चयन पर निर्भर करती है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि के लिए मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया।

**4.सांख्यिकी प्रविधि :–**

शोध में दत्तों के विश्लेषण हेतु निम्नलिखित सांख्यिकी तकनीकी का प्रयोग किया गया है :–

(1) **मध्यमान :–** मध्यमान (Mean) $= \frac{\Sigma \chi}{N}$

(2) **मानक विचलन :–** $S.D. = \sqrt{\frac{\Sigma fd^2}{N}}$

(3) **टी–मान :–** $t = \frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{SD_1^2}{N_1} + \frac{SD_2^2}{N_2}}}$

**दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या :–**

**सारणी संख्या – 1**

**निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण**

| क्र. सं. | शिक्षक–प्रशिक्षकों की संख्या | कार्यसन्तुष्टि का स्तर | परास | परास के उच्च अंक | परास के निम्न अंक |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 20 | उच्चतम | 74 या इससे अधिक | 89 | 75 |
| 2. | 30 | उच्च | 63–73 | 71 | 65 |
| 3. | 70 | औसत | 56–62 | 60 | 57 |
| 4. | 45 | असन्तुष्ट | 48–55 | 53 | 49 |
| 5. | 35 | अत्यधिक असन्तुष्ट | 47 या इससे कम | 47 | 39 |

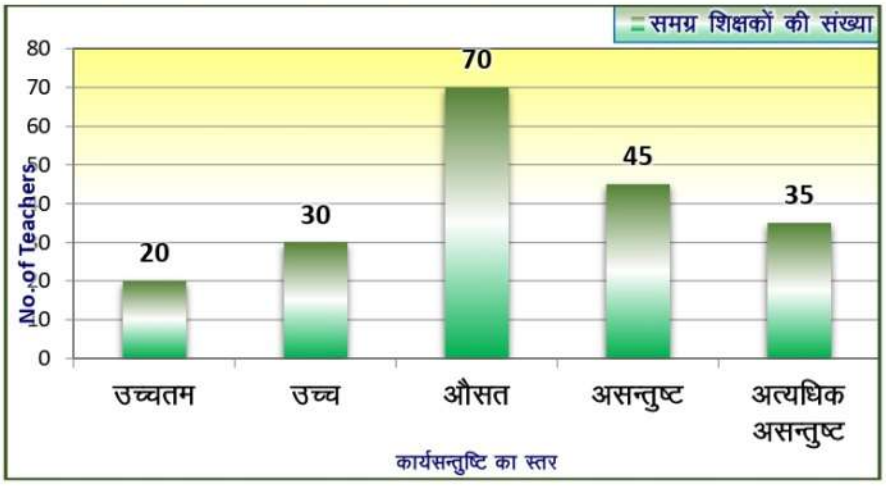


**श्रेणीवार विश्लेषण :–**

1. **उच्चतम** :– समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 20 शिक्षक–प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(74 या इससे अधिक) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 20 शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **उच्चतम** पाया गया।
2. **उच्च** :– समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 30 शिक्षक–प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(63–73) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 30 शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **उच्च** पाया गया।
3. **औसत** :– समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 70 शिक्षक–प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(56–62) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 70 शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **औसत** पाया गया।
4. **असन्तुष्ट** :– समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 45 शिक्षकों के प्राप्तांक **(48–55) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 45 शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **असन्तुष्ट** पाया गया।
5. **अत्यधिक असन्तुष्ट** :– समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 35 शिक्षक–प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(47 या इससे कम) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः समग्र न्यादर्श शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 35 शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **अत्यधिक असन्तुष्ट** पाया गया।

**सारणी संख्या – 2**

**निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण**

| क्र. सं. | पुरूष शिक्षक–प्रशिक्षकों की संख्या | कार्यसन्तुष्टि का स्तर | परास | परास के उच्च अंक | परास के निम्न अंक |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 05 | उच्चतम | 74 या इससे अधिक | 87 | 76 |
| 2. | 10 | उच्च | 63–73 | 72 | 64 |
| 3. | 35 | औसत | 56–62 | 61 | 58 |
| 4. | 30 | असन्तुष्ट | 48–55 | 54 | 50 |
| 5. | 20 | अत्यधिक असन्तुष्ट | 47 या इससे कम | 45 | 37 |

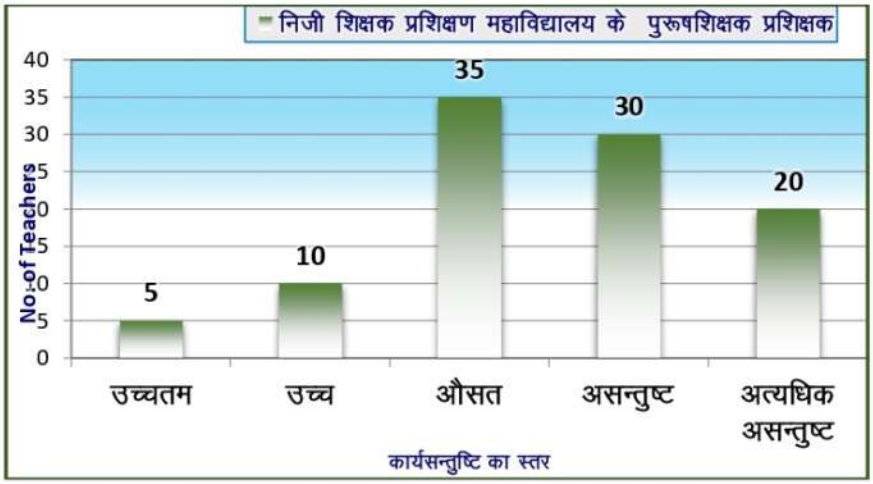


**श्रेणीवार विश्लेषण :–**

1. **उच्चतम :–** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 05 शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(74 या इससे अधिक) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों में से 05 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **उच्चतम** पाया गया।
1. **उच्च :–** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 10 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(63–73) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों में से 10 शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **उच्च** पाया गया।
2. **औसत :–** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 35 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(56–62) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों में से 35 शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **औसत** पाया गया।
3. **असन्तुष्ट :–** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 30 शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(48–55) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों में से 30 शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **असन्तुष्ट** पाया गया।
4. **अत्यधिक असन्तुष्ट :–** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 20 शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(47 या इससे कम) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों में से 20 शिक्षक– प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **अत्यधिक असन्तुष्ट** पाया गया।

**सारणी संख्या – 3**
**निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण**

| क्र. सं. | महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या | कार्यसन्तुष्टि का स्तर | परास | परास के उच्च अंक | परास के निम्न अंक |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 10 | उच्चतम | 74 या इससे अधिक | 90 | 77 |
| 2. | 15 | उच्च | 63–73 | 70 | 63 |
| 3. | 55 | औसत | 56–62 | 60 | 57 |
| 4. | 12 | असन्तुष्ट | 48–55 | 54 | 49 |
| 5. | 08 | अत्यधिक असन्तुष्ट | 47 या इससे कम | 44 | 39 |

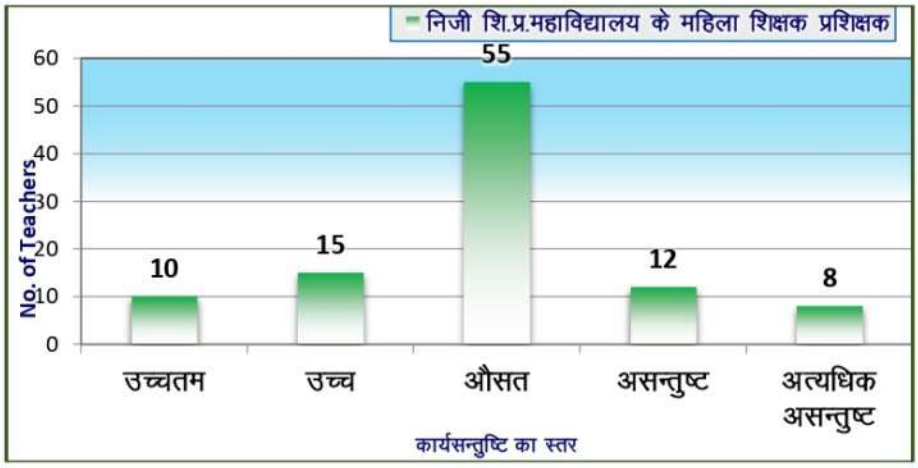


**श्रेणीवार विश्लेषण :–**

1. **उच्चतम** :–निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 10 शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(74 या इससे अधिक) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों में से 10 महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **उच्चतम** पाया गया।
2. **उच्च** :– निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 15 महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(63–73) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों में से 15 शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **उच्च** पाया गया।
3. **औसत** :– निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 55 महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(56–62) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों में से 55 शिक्षक–प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **औसत** पाया गया।
4. **असन्तुष्ट** :– निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 12 महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(48–55) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों में से 12 शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **असन्तुष्ट** पाया गया।
5. **अत्यधिक असन्तुष्ट** :– निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार विश्लेषण करने पर 100 शिक्षक–प्रशिक्षकों में से 8 महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के प्राप्तांक **(47 या इससे कम) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों में से 8 शिक्षक– प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का स्तर **अत्यधिक असन्तुष्ट** पाया गया।

**सारणी संख्या – 4**

**निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण**

| क्र. सं. | शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या | | कार्यसन्तुष्टि का स्तर | परास |
|---|---|---|---|---|
| | महिला | पुरूष | | |
| 1. | 10 | 05 | उच्चतम | 74 या इससे अधिक |
| 2. | 15 | 10 | उच्च | 63–73 |
| 3. | 55 | 35 | औसत | 56–62 |
| 4. | 12 | 30 | असन्तुष्ट | 48–55 |
| 5. | 08 | 20 | अत्यधिक असन्तुष्ट | 47 या इससे कम |

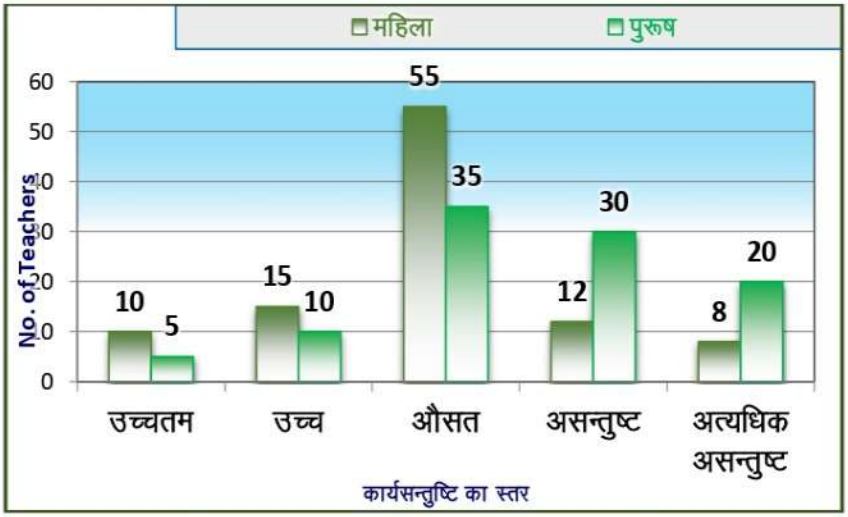


**श्रेणीवार विश्लेषण :–**

1. **उच्चतम** :– निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षकों में से 10 महिला शिक्षक प्रशिक्षक तथा 05 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों जिनके प्राप्तांक **(74 या इससे अधिक) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः कार्यसन्तुष्टि के **उच्चतम** स्तर में निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या अधिक पाई गई।
2. **उच्च** :– निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षकों में से 15 महिला शिक्षक प्रशिक्षक तथा 10 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों जिनके प्राप्तांक **(63–73) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः कार्यसन्तुष्टि के **उच्च** स्तर में निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या अधिक पाई गई।
3. **औसत** :– निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षकों में से 55 महिला शिक्षक प्रशिक्षक तथा 35 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों जिनके प्राप्तांक **(56–62) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः कार्यसन्तुष्टि के **औसत** स्तर में निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या अधिक पाई गई।
4. **असन्तुष्ट** :– निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षकों में से 12 महिला शिक्षक प्रशिक्षक तथा 30 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों जिनके प्राप्तांक **(48–55) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः कार्यसन्तुष्टि के **असन्तुष्ट** स्तर में निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या अधिक पाई गई।
5. **अत्यधिक असन्तुष्ट** :– निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की कार्यसन्तुष्टि का श्रेणीवार तुलनात्मक विश्लेषण करने पर समग्र शिक्षकों में से 08 महिला शिक्षक प्रशिक्षक तथा 20 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों जिनके प्राप्तांक **(48–55) परास** के मध्य पाये गये। निष्कर्षतः कार्यसन्तुष्टि के **असन्तुष्ट** स्तर में निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की अपेक्षा महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की संख्या अधिक पाई गई।

**सन्दर्भ :–**

Anastasi, Anne (1976) : Psychological Testing, New York, Mac Millan Publishing Co. Inc.
Best, J.W. : "Research in Education", New Delhi, Prentice Hall of India (Pvt.) Ltd.
Carter V. Good, Bar and Douglas E. Scats : "Method of Research : Educational psychological Sociological", New York: Appleton Century. Inc.
Cocher, W.G. : "Sampling Technique", Bobay, Publishing House.
ढोढियाल, एस. एन. एवं फाटक, ए.बी. : ''शैक्षिक अनुसंधान का विधि शास्त्र'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
Garett, Hanery E. & Woodworth, R.S : "Statistics in Psychology & Education" Bombay, Vikas Feffer & Simons Ltd.
पाठक, पी.डी. (2009) : ''शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।
राय, पारसनाथ (1993) : अनुसंधान परिचय, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन।
सिन्हा, एच.सी. (1979) : ''शक्षिक अनुसंधान'', विकास पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
सुखिया एवं मेहरोत्रा (1984) : ''शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

मध्य भारती

MADHYA BHARTI
(UGC CARE Group-1, Multi disciplinary)

# CERTIFICATE OF PUBLICATION

This is to certify that the article entitled

**निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन**

Authored By

SOLANKI PARESHABEN H.
Ph.D. Scholar - Pacific College of Teacher's Education
Udaipur (Raj.)

Published in
**Madhya Bharti (मध्य भारती)** : ISSN **0974-0066** with IF=6.28
Vol. 82, No. 14, July-December: 2022
UGC Care Approved, Group I, Peer Reviewed, Bilingual, Biannual,
Multi-disciplinary Referred Journal

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये
UGC
University Grants Commission

Chief Editor
प्रो. अभिलाषा शर्मा

ISSN : 0974-0066

82

Vol-82 No.14
July - December : 2022

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

# मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

# मध्य भारती

## मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

UGC Care List, Group-C (Multi disciplinary), Sl.no.-15

**संरक्षक**

प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति

**प्रधान सम्पादक**

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

**सम्पादक**

प्रो. भवतोष इन्द्रगुरू

प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव

डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

**प्रबन्ध सम्पादक**

डॉ. छबिल कुमार मेहेर

**डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय**

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

CONTENT


| S.No | TITLE | Page No |
|---|---|---|
| 1 | A STUDY ON FREEDOM MOVEMENT IN BALASORE DISTRICT OF ODISHA | 1 |
| 2 | MANUAL THERAPY'S ROLE IN CURING CANCER PATIENTS' NECK PAIN:A SYSTEMATIC REVIEW | 9 |
| 3 | WOMEN CENTERED ISSUES IN THE SELECT NOVELS OF MANJU KAPUR | 14 |
| 4 | ANALYSIS ON PHYSIOLOGICAL VARIABLES AMONG INTER COLLEGIATE FOOTBALL CRICKET BASKETBALL AND VOLLEYBALL PLAYERS | 18 |
| 5 | AN ANALYTICAL STUDY OF MANU AND YAGWALKA'S SMRITIS | 24 |
| 6 | भारत में गौ माता का धार्मिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व | 39 |
| 7 | अफगान संकट में भारत–पाक संबंध वर्तमान समय में | 44 |
| 8 | हनुमानगढ जिले के रावतसर खण्ड में कृषि का आधुनिकीकरण एवं जलक्रान्ता एक भौगोलिक विश्लेषण | 47 |
| 9 | THE TECH-SAVVY LIFESTYLE OF THE WOMEN CHARACTERS FROM THE PLAY WEDDING ALBUM | 50 |
| 10 | HUMANIZED MACHINES OR MECHANIZED HUMANS: AN ARGUMENT BASED ON NABARUN BHATTACHARYA'S NOVEL AUTO | 53 |
| 11 | IMPACT OF COVID-19 ON THE ECONOMY OF THE CIVIL AVIATION SECTOR – A FACT-BASED DISCUSSION | 57 |
| 12 | किशोर विद्यार्थियों की आत्म धारणाओं पर सामाजिक अंतःक्रिया व्यवहार के सहसंबंधों का अध्ययन | 64 |
| 13 | जोधपुर जिले में जलवायु परिवर्तन और कृषि भेद्यता | 71 |
| 14 | माध्यमिक विद्यालय स्तर पर ऑनलाइन शिक्षण की समस्याओं का अध्ययन | 79 |
| 15 | हिंदी उपन्यास साहित्य में पर्यावरणीय चेतना | 86 |
| 16 | INTERNAL DETERMINANTS OF INDIA'S FOREIGN POLICY: ISSUES AND CHALLENGES | 91 |
| 17 | CROSS CULTURAL PHENOMENON AND QUEST FOR A CONCRETE IDENTITY: A STUDY OF BHARATI MUKHERJEE'S JASMINE | 97 |

| | | |
|---|---|---|
| 18 | UNIFORM CIVIL CODE: A STUDY | 100 |
| 19 | WORK ORIENTATION OF SECONDARY SCHOOL TEACHERS IN RELATION TO THEIR GENDER, LOCALITY AND AGE | 107 |
| 20 | QUALITY ASSURANCE IN HIGHER EDUCATION TEACHING THROUGH METRICS AND METHODS | 114 |
| 21 | AN ANALYSIS OF THE ROLE OF THE NATIONAL COMMISSION FOR THE PROTECTION OF CHILDREN'S CHILD RIGHT | 123 |
| 22 | AN ANALYSIS OF DIGITAL FORENSICS IN INDIAN LEGAL PARADIGM WITH COMPARISON IN USA | 131 |
| 23 | EVOLUTION OF MEDIATION IN ENVIRONMENTAL DISPUTES | 138 |
| 24 | THE INEVITABILITY OF MENTAL HEALTH IN EDUCATION: WITH SPECIAL REFERENCE TO NATIONAL EDUCATION POLICY, 2020 | 146 |
| 25 | THE SIGNIFICANCE OF INTELLECTUAL PROPERTY RIGHTS IN THE PRESERVATION OF BIODIVERSITY IN INDIA | 150 |
| 26 | THE NON-BRAHMIN MOVEMENT AND ITS IMPACT ONMADRAS PRESIDENCY | 157 |
| 27 | A STUDY ON INITIATIVES AND PROGRESS OF WOMEN EMPOWERMENT IN INDIA | 161 |
| 28 | SOCIO-PHONETICS' RELEVANCE IN WORDS, CONTEXT, AND WORDS IN CONTEXT | 167 |
| 29 | TRANSLATION: A CASE STUDY OF JAPANESE TRANSLATION OF BOLLYWOOD FILM TITLES | 171 |
| 30 | NIOSOMAL DRUG DELIVERY SYSTEM: AN OVERVIEW | 180 |
| 31 | FACTORS DETERMINING THE ADOPTION OF A CASHLESS TRANSACTIONS SYSTEM: AN EMPIRICAL STUDY | 191 |
| 32 | कच्छ जिले के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में अध्ययनरत उच्च एवं निम्न अकादमिक निष्पति वाले विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का अध्ययन | 198 |
| 33 | निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन | 204 |

# निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन

**SOLANKI PARESHABEN H., Ph.D. Scholar**
**Dr. Anjali Dashora- Assistant Prof., Pacific College of Teacher's Education, Udaipur (Raj.)**
**Dr. Ranchhodbhai K. Prajapati, Principal, Swami Narayan Gurukul B.Ed. College, Palanpur (Gujarat)**

**सारांश**

*प्रस्तुत शोध आलेख में निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के लिए शोधार्थी ने गुजरात राज्य के मेहसाणा एवं पाटन जिले के निजी शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालयों से कुल 200 महिला व 200 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया। शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण से संबंधित दत्तों के संकलन हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया तथा प्राप्त प्राप्तांकों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से यह पता चलता है कि निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण में सार्थक अन्तर होता है।*

**पारिभाषिक शब्द:-** शिक्षक प्रशिक्षक, कार्यस्थल वातावरण

**प्रस्तावना :–** वर्तमान में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों निरन्तर वृद्धि हो रही है। गुजरात राज्य के मेहसाणा व पाटन जिले में शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों की वृद्धि के साथ ही शिक्षक प्रशिक्षकों के रोजगार के अवसर भी बढे है। शिक्षण व्यवसाय में रूचि रखने वाले कई शिक्षक प्रशिक्षक राजकीय व निजी शिक्षक प्रशिक्षकों में अपनी सेवाएँ प्रदान कर रहे है। शिक्षक, विद्यार्थी के जीवन को ढालने का महत्वपूर्ण कार्य करता हैं। छात्रों के भविष्य को उज्ज्वल करने में शिक्षक का योगदान ही सब कुछ हैं। शिक्षा ही लोगों के कल्याण तथा सुरक्षा और खुशहाली के स्तर का निर्धारण करती है। शिक्षा को इस योग्य बनाने के लिए शिक्षा में गुणात्मक वृद्धि अत्यधिक आवश्यक हैं। शिक्षा को सफलता या विफलता बहुत कुछ कार्यस्थल वातावरण व शिक्षकों के निष्ठापूर्वक अपने उत्तरदायित्वों के पालन करने पर निर्भर करती है। अध्यापक निष्ठा पूर्वक कार्य तभी कर सकते है जब उनके कार्यस्थल का वातावरण सही हो। कार्यस्थल वातावरण का प्रभाव छात्रों एवं अध्यापकों पर सीधा पड़ता हैं। डी. डॉट के अनुसार कार्यस्थल वातावरण में उन परिस्थितियों का समावेश होता है जिसके अन्तर्गत कर्मचारी कार्य करता है इसमें मुख्यतः भौतिक, मानवीय संसाधन के साथ सुरक्षा एवं स्वास्थ्य को देखा जाता है। सामान्यतया कार्यस्थल वातावरण कर्मचारी के स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं कार्य उत्पादकता को प्रभावित करता है। वर्तमान में भौतिकता का अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा में अनूठ्य परिवर्तन दिन प्रतिदिन तीव्रगति से हो रहा है। अच्छा कार्यस्थल वातावरण उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है जिसे एक शिक्षक अपने अध्ययन व्यवसाय के जीवनकाल में बनाए रखने का प्रयास करता है। वर्तमान में प्रत्येक कार्यस्थल की कार्यप्रणाली में कोई न कोई बदलाव अवश्य आये है तथा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के वातावरण में भी काफी परिवर्तन देखने को मिला है, क्या निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण में भी कोई बदलाव आया है, इसी तथ्य की पुष्टि हेतु यह आलेख लिखा गया है।

**शोध अध्ययन के उद्देश्य :–**

1. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना।
2. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना।
3. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का अध्ययन करना।
4. निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थलो के वातावरण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**शोध परिकल्पना :–**

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थलों के वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

**शोध उपागम :–** प्रस्तुत शोध हेतु न्यादर्श चयन के लिए मेहसाणा व पाटन जिले में स्थित बी.एड. कॉलेज की सूची बनाई गई। इस सूची में से लॉटरी विधि द्वारा मेहसाणा व पाटन जिले के 20–20 महाविद्यालयों का चयन किया गया, जिसमें से 200 महिला व 200 पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन करते हुए कुल 400 शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन किया। शोध हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। दत्तों का संकलन स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी द्वारा किया गया। प्राप्त दत्तों का विश्लेषण करने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या :–

सारणी संख्या – 1

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण

| क्र.सं. | क्षेत्र | कट पोइंट | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण | 10x3=30 | 36.70 |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 10x3=30 | 33.80 |
| 3. | वित्तीय वातावरण | 10x3=30 | 34.55 |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 10x3=30 | 37.44 |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 10x3=30 | 39.65 |

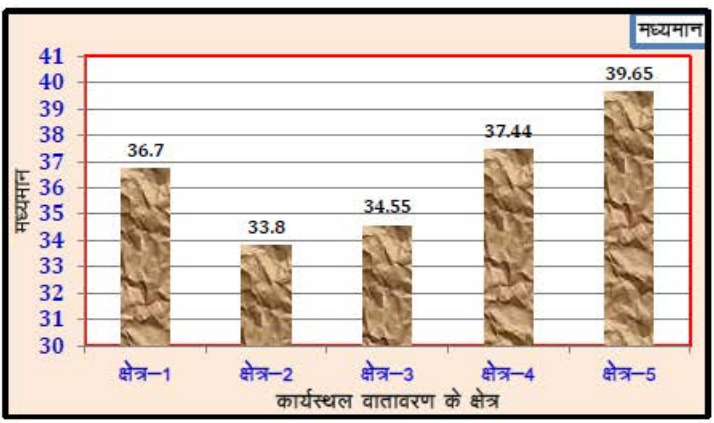


**विश्लेषण एवं व्याख्या** :– स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **भौतिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 36.70 प्राप्त हुआ, क्षेत्र **प्रशासनिक वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 33.80 प्राप्त हुआ, क्षेत्र **वित्तीय वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 34.55 प्राप्त हुआ, क्षेत्र **शैक्षिक वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 37.44 प्राप्त हुआ तथा क्षेत्र **व्यावसायिक वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 39.65 प्राप्त हुआ, जो इन क्षेत्रों के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाये गये।

सारणी संख्या – 2

निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण

| क्र.सं. | क्षेत्र | कट पोइंट | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण | 10x3=30 | 35.50 |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 10x3=30 | 34.70 |
| 3. | वित्तीय वातावरण | 10x3=30 | 33.54 |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 10x3=30 | 36.43 |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 10x3=30 | 38.64 |

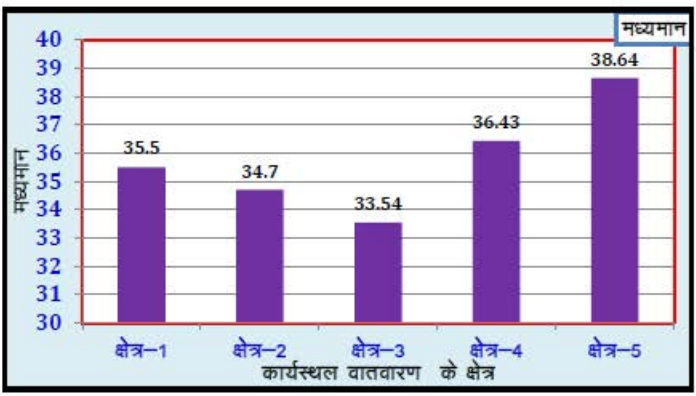


**विश्लेषण एवं व्याख्या :–** स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **भौतिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 35.50 प्राप्त हुआ, क्षेत्र **प्रशासनिक वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 34.70 प्राप्त हुआ, क्षेत्र **वित्तीय वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 33.54 प्राप्त हुआ, क्षेत्र **शैक्षिक वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 36.43 प्राप्त हुआ तथा क्षेत्र **व्यावसायिक वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 38.64 प्राप्त हुआ, जो इन क्षेत्रों के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाये गये।

सारणी संख्या – 3
निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरुष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का मध्यमानवार विश्लेषण

| क्र.सं. | क्षेत्र | कट पोइंट | मध्यमान |
|---|---|---|---|
| 1. | भौतिक वातावरण | 10x3=30 | 38.58 |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 10x3=30 | 37.88 |
| 3. | वित्तीय वातावरण | 10x3=30 | 36.67 |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 10x3=30 | 39.57 |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 10x3=30 | 41.59 |

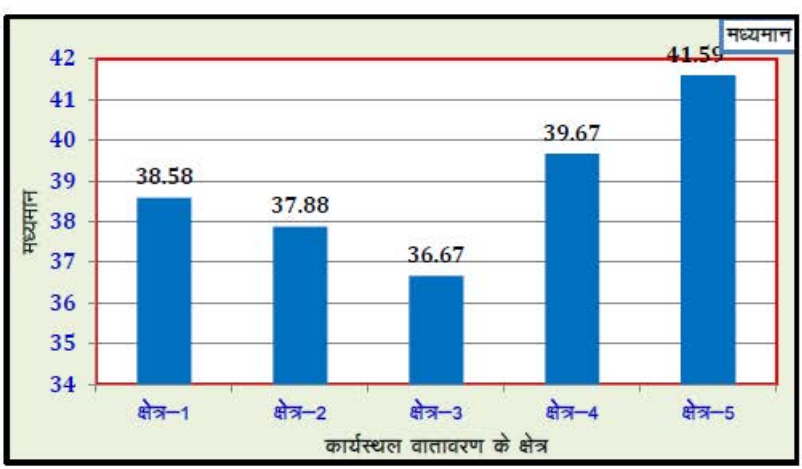

**विश्लेषण एवं व्याख्या :–** स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **भौतिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 38.58 प्राप्त हुआ, क्षेत्र **प्रशासनिक वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 37.88 प्राप्त हुआ, क्षेत्र **वित्तीय वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 36.67 प्राप्त हुआ, क्षेत्र **शैक्षिक वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 39.57 प्राप्त हुआ तथा क्षेत्र **व्यावसायिक वातावरण** के प्रति व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान 41.59 प्राप्त हुआ, जो इन क्षेत्रों के कट पोइन्ट मध्यमान 30 से अधिक पाये गये।

सारणी संख्या – 4

**निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल वातावरण का तुलनात्मक विश्लेषण**

| क्र. सं. | क्षेत्र | मध्यमान | | मानक विचलन | | टी मान | .01 / .05 स्तर पर सार्थकता |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | महिला शिक्षक प्रशिक्षक | पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक | महिला शिक्षक प्रशिक्षक | पुरूष शिक्षक प्रशिक्षक | | |
| 1. | भौतिक वातावरण | 35.50 | 38.58 | 3.69 | 2.71 | 9.51 | 0.01 स्तर पर सार्थक |
| 2. | प्रशासनिक वातावरण | 34.70 | 37.88 | 6.17 | 4.20 | 6.03 | 0.01 स्तर पर सार्थक |
| 3. | वित्तीय वातावरण | 33.54 | 36.67 | 7.25 | 6.28 | 4.61 | 0.01 स्तर पर सार्थक |
| 4. | शैक्षिक वातावरण | 36.43 | 39.57 | 2.44 | 2.16 | 13.63 | 0.01 स्तर पर सार्थक |
| 5. | व्यावसायिक वातावरण | 38.64 | 41.59 | 2.66 | 2.25 | 11.97 | 0.01 स्तर पर सार्थक |

स्वतंत्रता के अंश df =398 के सारणीमान
.01 स्तर पर सार्थकता = 2.60
.05 स्तर पर सार्थकता = 1.97

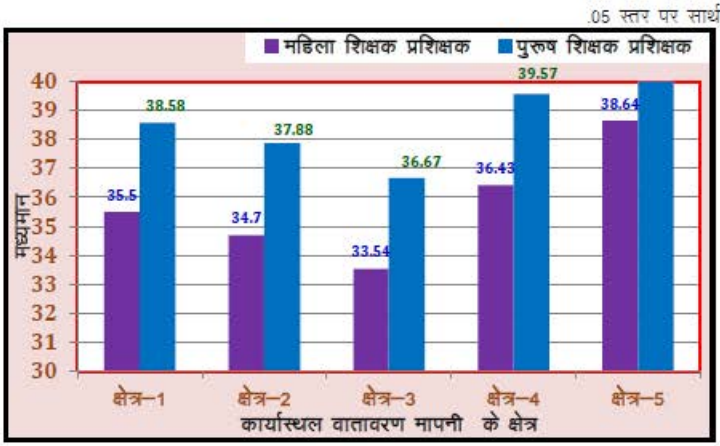


**तुलनात्मक व्याख्या :–** स्वनिर्मित कार्यस्थल वातावरण मापनी के क्षेत्र **भौतिक वातावरण** के प्रति निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला व पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यक्त राय के आधार पर प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 35.50, 38.58 व 3.69, 2.71 प्राप्त हुए तथा टी–मान 9.51 प्राप्त हुआ। क्षेत्र **प्रशासनिक वातावरण** के प्रति प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 34.70, 37.88 व 6.17, 4.20 प्राप्त हुए तथा टी–मान 6.03 प्राप्त हुआ। क्षेत्र **वित्तीय वातावरण** के प्रति प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 33.54, 36.67 व 7.25, 6.28 प्राप्त हुए तथा टी–मान 4.61 प्राप्त। क्षेत्र **शैक्षिक वातावरण** के प्रति प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 36.43, 39.57 व 2.44, 2.16 प्राप्त हुए तथा टी–मान 13.63 प्राप्त हुआ। क्षेत्र **व्यावसायिक वातावरण** के प्रति प्राप्तांकों का मध्यमान व मानक विचलन क्रमशः 38.64, 41.59 व 2.66, 2.25 प्राप्त हुए तथा टी–मान 11.97 प्राप्त हुआ। उपरोक्त सभी क्षेत्रों के टी–मान स्वतंत्रता के अंश (df) = 398 के 0.01 स्तर पर सारणीमान 2.60 से अधिक पाये गये अर्थात् उपरोक्त सभी क्षेत्रों के दोनों समूहों के मध्यमानों के बीच सार्थक अन्तर पाया गया।

**शोध निष्कर्ष :–**

- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल **भौतिक वातावरण, प्रशासनिक वातावरण, वित्तीय वातावरण, शैक्षिक वातावरण** व **व्यावसायिक वातावरण** से प्रभावित होता है।
- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल **भौतिक वातावरण, प्रशासनिक वातावरण, वित्तीय वातावरण, शैक्षिक वातावरण** व **व्यावसायिक वातावरण** से प्रभावित होता है।
- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों का कार्यस्थल **भौतिक वातावरण, प्रशासनिक वातावरण, वित्तीय वातावरण, शैक्षिक वातावरण** व **व्यावसायिक वातावरण** से प्रभावित होता है।
- निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय का **भौतिक वातावरण, प्रशासनिक वातावरण, वित्तीय वातावरण, शैक्षिक वातावरण व व्यावसायिक वातावरण** निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल को कार्यरत महिला शिक्षक प्रशिक्षकों के कार्यस्थल की अपेक्षा अधिक प्रभावित करता है।

**प्रासंगिकता :–**

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य से प्राप्त परिणामों का प्रयोग कर निजी शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में प्राचार्य महोदय अपने महाविद्यालय का वातावरण उत्कृष्ट स्तर बना सकेंगे। शिक्षक प्रशिक्षक कार्यस्थल वातावरण को अच्छा बनाने के लिए वांछित संसाधनों का प्रयोग किया कर सकेंगे।

**सन्दर्भ :–**

ढ़ोढ़ियाल, एस.एन. एवं फाटक, ए.बी. (1972). *शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र.* जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

Amy, E.M. (2012). *The Cultivation and Transfer of Life Skills through the Outdoor Education Program at Besant Hill School.*

भार्गव, महेश चन्द्र (1984). *आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं सायन.* आगरा : हर प्रसाद भार्गव।

राय, पार्श्वनाथ (1985). *अनुसंधान परिचय.* आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।

डायनर (1984). *डिक्सनरी आफ ऐवलमेंटल साइकोलॉजी।*

Saxena, N.R.; Mishra, B.K.; Mahanti, R.K. (1996). *Fundamental of Educational Research.* Meeruth : R. Lal Book Dipot.

# सेमिनार
# प्रमाण–पत्र

आज़ादी का अमृत महोत्सव

SANGAM UNIVERSITY

where Aspiration meets Opportunity

Accredited by NAAC

संस्कृत विभाग

**Department of Linguistic Studies**
**School of Arts and Humanities, Sangam University, Bhilwara (Raj.)**

## NATIONAL SEMINAR
## ON
## POSSIBILITIES OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN LINGUISTIC LITERATURE

भाषायी साहित्य में बहुआयामी शोध की संभावनाएं

**25 April to 27 April, 2022** वैशाख कृष्ण दशमी से द्वादशी, वि.सं. 2079 पर्यन्त

# CERTIFICATE

*This is to Certify that* सोलंकी परेशा बेन एच.

*of* _____

*has actively participated in the National Seminar. He/She has also chaired the session/delivered a special lecture/ presented a paper entitled* शिक्षक प्रशिक्षकों के व्यावसायिक उन्नयन पर कार्यसन्तुष्टि के प्रभाव का अध्ययन

Prof. (Dr.) Karunesh Saxena
Vice-Chancellor
Sangam University

डॉ.रजनीश शर्मा
अधिष्ठाता, (कला एवं मानविकी संकाय)
संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा
Convener

Dr. Nidhi Bhatnagar
Assistant Dean, SOAH
Organizing Secretary

Dr. Avadhesh Kumar Jauhari
Assistant Professor, Hindi
Organizing Secretary

SANGAM UNIVERSITY™
where Aspiration meets Opportunity

Azadi Ka Amrit Mahotsav

एवं

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर (राज.)

# विश्लेषणात्मक एवं अन्तर अनुशासनात्मक अन्तर्राष्ट्रीय शोध सगोष्ठी (ICAIR-2022)

6 से 8 अक्टूबर 2022, आश्विन शुक्ल एकादशी से चतुर्दशी वि.सं. 2079 पर्यन्त

## प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है, कि सुश्री / श्री ....सोलंकी परेशाबेन एच.....

ने भाषायी अध्ययन विभाग, कला एवं मानविकी संकाय, संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा एवं राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में सहभागितापूर्वक, अपना शोधपत्र ....शिक्षक प्रशिक्षकों के.....

.....व्यावसायिक उन्नयन पर कार्यस्थल के वातावरण का प्रभाव..... विषय पर प्रस्तुत किया।

सत्राध्यक्ष / मुख्य वक्ता के रूप में सत्र को अलंकृत किया।

| | | | |
|---|---|---|---|
| डॉ. अर्चना अग्रवाल<br>आयोजन सचिव<br>ICAIR-2022 | डॉ. रजनीश शर्मा<br>अधिष्ठाता, कला एवं मानविकी संकाय<br>संगम विश्वविद्यालय<br>भाषायी संगोष्ठी समन्वयक | डॉ. बसन्त सिंह सोलंकी<br>सचिव<br>राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर | प्रो. करुणेश सक्सेना<br>कुलपति<br>संगम विश्वविद्यालय |